हमारे बहादुर हवाबाज़

वीरेन्द्र मोहन रतूड़ी

ट्रेवर कोलर

विनय कपिल

देवनाथ राठौर

डैंज़िल कीलर

सुदशन हाण्डा

विनोद कुमार नेब

बी० के० विश्नोई

सुबोधचन्द्र ममगाईं

अमरजीतसिंह सन्धू

दारा फिरोज़ चिनाय

वीरेन्द्र सिंह पठानिया

एल्फ्रेड टायरन कुक

आदि-आदि की कहानियाँ

समर्पण

देश के उन
सभी बहादुर हवाबाज़ों को
जिन्होंने
मातृभूमि के सम्मान
और
अखण्डता के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी

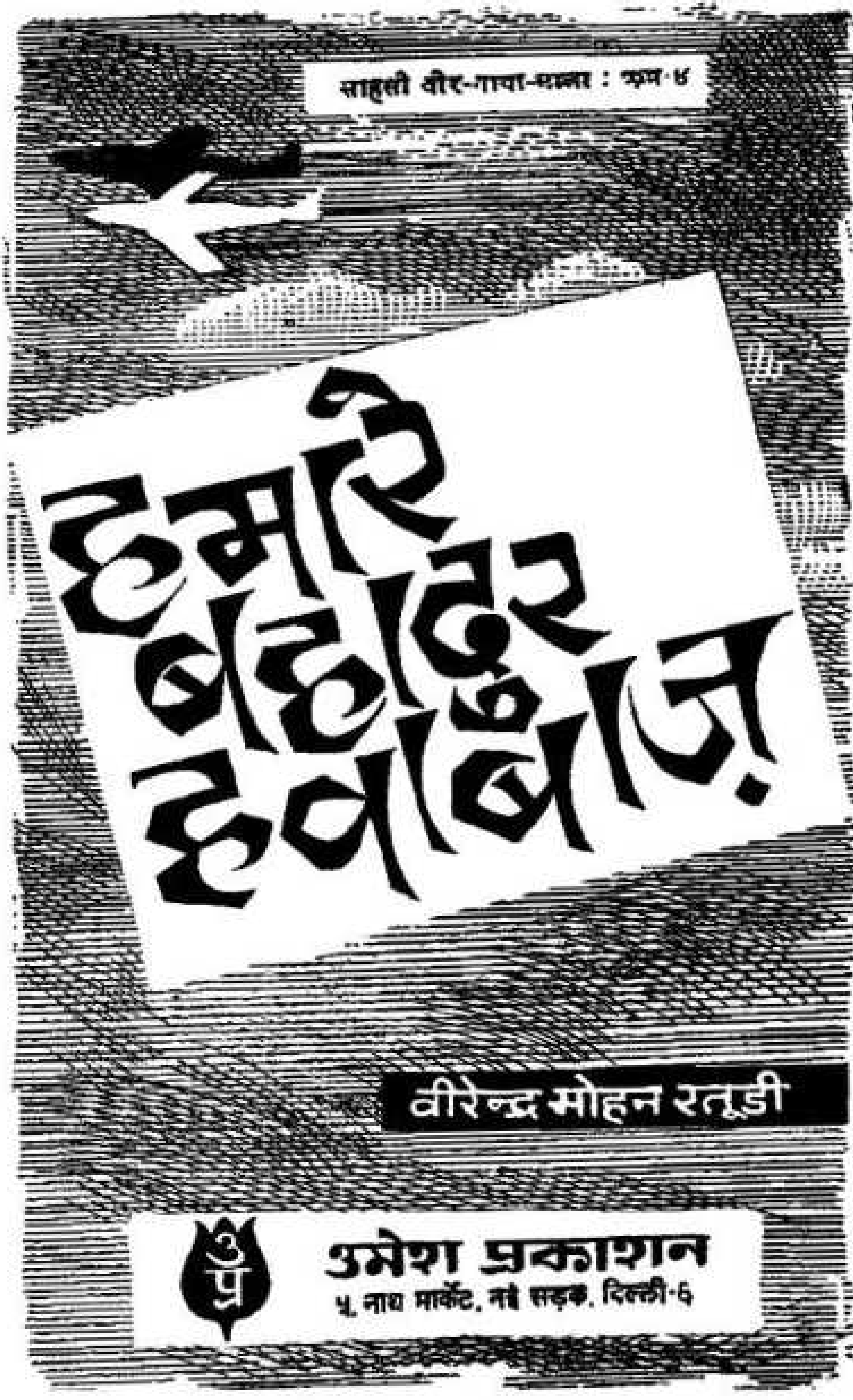
साहसी वीर-गाथा-माला : क्रम ४
हमारे बहादुर हवाबाज़
वीरेन्द्र मोहन रतूड़ी
उ प्र
उमेश प्रकाशन
५, नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-६

Hamare Bahadur Hawabaz

By

Birendra Mohan Raturi

Rs. 2.50

© उमेश प्रकाशन, दिल्ली

प्रकाशक ● उमेश प्रकाशन
५, नाथ मार्केट, नई सङ्क, दिल्ली-६

मुद्रक ● मूवीज प्रेस
चावडी बाजार, दिल्ली-६

आवरण-मुद्रक ● परमहंस प्रेस
दरियागंज, दिल्ली

आवरण ● जगदीश चड्ढा

भावचित्र ● हरिपाल त्यागी

संस्करण ● प्रथम (१९६६)

मूल्य ● २.५०

लेखक परिचय

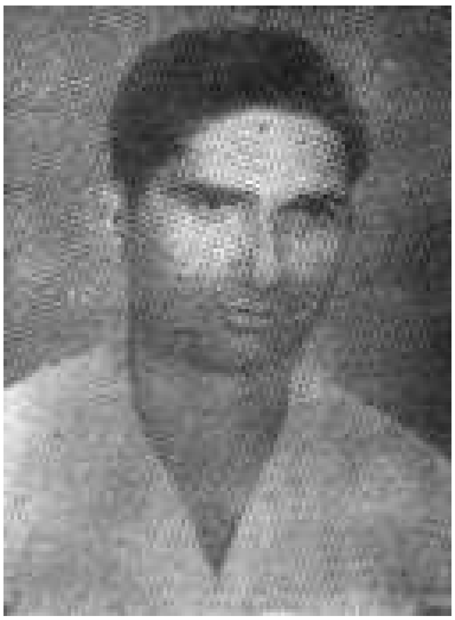

किशोर-साहित्य के इने-गिने लेखकों में । उत्तर प्रदेश के गढ़वाल जिले के निवासी । जन्म हलद्वानी (नैनीताल) में और शिक्षा प्रयाग में। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में एम० ए० (हिन्दी) की शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ वहाँ के दैनिक-पत्र 'अमृत पत्रिका' में भी उप-सम्पादक रहे । एम० ए० के बाद हिन्दी के प्राण रार्जाप पुरुषोत्तम दास टण्डन की सेवा में दिल्ली आ गए और हिन्दी साहित्य सम्मेलन के महाविद्यालय में प्राध्यापक तथा उप- आचार्य भी रहे । १६५४ से सूचना और प्रसारण मंत्रालय के प्रेस इन्फरमेशन ब्यूरो में हैं।

छात्र-जीवन से ही लेखन-कार्य की ओर प्रवृत्ति । अब तक दो विदेशी उपन्यासों का अनुवाद किया है और सात मौलिक पुस्तकें लिखी हैं। उमेश प्रकाशन से इनकी छः किशोरोपयोगी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं:

मीरां बावरी
वीर कुंवरसिंह
शान्ति-दूत नेहरू
हमारे बहादुर जवान
हमारे बहादुर हवाबाज
नेफा और लद्दाख के साहसी वीरों की गाथाएँ

साहसी वीर-गाथा-माला के पुष्प

नेफा और लद्दाख के साहसी वीरों की गाथाएँ

भारत के साहसी वीरों की गाथाएँ

विश्व की साहसिक गाथाएँ

हमारे बहादुर हवाबाज

हमारे बहादुर जवान

किशोर-उपन्यास-माला

[सचित्र, सरस तथा स-उद्देश्य]

वीर रस से पूर्ण

अर्जुन | गढ़मण्डल की रानी | भीष्म

हल्दी घाटी | बाजीराव पेशवा | श्री कृष्ण

खूब लङी लङी मर्दानी | जय भवानी | वीर कुंवर सिंह

गुरु गोविन्द सिंह | वीर कुणाल | सम्राट् शिलादित्य

चित्तौड्गढ़ की रानी | दुर्गादास | चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य

कर्ण

अन्य महापुरुषों पर आधारित

शान्ति - दूत नेहरू | गुरु अमरदास | मदुरा की मीनाक्षी

ऋषि का शाप | गौतम बुद्ध | देवता हार गए

गुरु नानक देव | संत कबीर | सम्राट् अशोक

गुरु अंगद देव | रवि बाबू | मीरां बावरी

बापू

शेक्सपियर के नाटकों पर आधारित

तूफान | हैमलेट | भूल पर भूल

मैकबेथ | राजा लियर | रोमियो जूलियट

जूलियस सीजर | राई से पहाङ | वेनिस का सौदागर

शिकार एवं ज्ञान-विज्ञान पर आधारित

ह्वल का शिकार | हाथी का शिकार | दैत्याकार पक्षी का शिकार

रूपा और लल्ली | बाघ का शिकार | मगरमच्छ का शिकार

पूपू

बाल एवं किशोरोपयोगी कहानियाँ

देश-देश की परियाँ भारत आई (लोक कथाएँ)

रंग-बिरंगी परियाँ (लोक कथाएँ)

सूची

छम्ब के आकाश में	९
केवल पाँच मिनट	१५
हलवाड़ा की रक्षा में	२१
माँ की प्रेरणा	२७
पूरब में भी	३२
कसूर की ओर	३७
खेमकरण के सैन्य-व्यूह में	४३
दुश्मन के इलाके से	५०
बलिदान की परम्परा में	५६
दोपहर के बाद	६२
चाविण्डा के आकाश में	६७
विजय-वाहिनी के सूत्रधार	७२
परिशिष्ट १	
भारत-पाकिस्तान का २२ दिन का हवाई-युद्ध	८३
परिशिष्ट २	
भारतीय वायुसेना के अलंकृत तथा पुरस्कृत हवाबाज	६३

छम्ब के आकाश में

“हाँ, मुझे अपने पति पर बहुत गर्व है," पैत्सी ने उत्तर दिया, "मेरे लिए यहाँ समय बिताना बहुत मुश्किल हो रहा है, जबकि वे वहाँ देश की सेवा में अपना कर्तव्य निभा रहे हैं। मैं तो रोज ईश्वर से यही प्रार्थना करती हूँ कि वे दुश्मन के विमानों को गिराकर जल्दी अड्डे पर वापस आएँ और अपने प्यारे सुन्दर-से घर में रहें।"

कहते-कहते पैत्सी मुस्कराई; अपने पति की अदम्य वीरता के गौरव से उनका मुँह दीप्त हो उठा।

पत्रकार ने पूछा, "और ट्रेवर को घर पर कैसा लगता है ?"

"ओह ! वे तो हमेशा ऊपर आकाश में उड्ने के लिए बेचैन रहते हैं। जमीन पर तो सीधे पाँव ही नहीं रखते । हमेशा उछलते रहते हैं," पैत्सी ने हँसते हुए उत्तर दिया, "उन्हें संगीत और नृत्य बहुत पसन्द है। जब वे वर्दी में नहीं रहते, तब कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि ये इतने बडे उडाकू और लडाकू हैं।"

पत्रकार पैत्सी की बातें सुनता रहा, उस बहादुर हवाबाज के बारे में जिसने ३ सितम्बर को छम्ब क्षेत्र में दुश्मन का पहला सेबर- जेट विमान मार गिराया था।

"मैं अन्य हवाबाज़ों के बारे में तो अधिक नहीं जान सकी," पैत्सी ने बताया, "लेकिन मेरे पति बहुत ही सरल, लापरवाह और

खुशदिल आदमी हैं। जब वे घर पर रहते हैं, तब हर समय बच्चों के साथ बन्दरों की तरह उछलते-कूदते रहते हैं।"

पैत्सी भारतीय वायुसेना के स्क्वाड्रन लीडर ट्रेवर कीलर की पत्नी हैं। दोनों के माता-पिता लखनऊ के रहने वाले हैं। ट्रेवर के पिता श्री चार्ल्स कीलर लखनऊ में सेण्ट फ्रांसिस हाई स्कूल के हैडमास्टर रहे और अब सेण्ट मेरीज स्कूल का संचालन करते हैं। उनके दो पुत्र ट्रेवर और डैंजिल भारतीय वायुसेना में हैं तथा तीसरा पुत्र गोर्डन नैनीताल के एक स्कूल में शिक्षक है।

ट्रेवर कीलर ने लखनऊ के सेण्ट फ्रांसिस हाई स्कूल तथा ला मार्टीनियर कालेज में शिक्षा पाई और १९५४ में भारतीय वायुसेना में भरती हो गए। बचपन ही से वे बहुत चुस्त और निर्भीक हैं तथा स्कूल और कालेज में वे मुक्केबाजी के चैम्पियन रहे।

भारतीय वायुसेना में भी उनकी गणना बहादुर हवाबाजों में होती रही है। १९६४ में वे फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट थे। ५ फरवरी १९६४ को वे पाँच विमानों के फारमेशन के साथ पूना से दिल्ली के पालम हवाई- अड्डे आ रहे थे। इस फारमेशन के साथ उन्हें अपना नेट विमान ४१,००० फुट की ऊँच ई तक उड़ाना था। पालम में उतरते समय उन्होंने देखा कि उनके इंजन और थ्रोटल का सम्पर्क टूट गया है। उन्होंने तत्काल अपने लीडर को सूचना दी और फारमेशन से अलग हो गए। वे अभी १५,००० फुट ऊँचाई पर थे। उनके सामने अब केवल दो ही रास्ते थे अपना विमान छोड़कर पैराशूट से कूद पड़ना अथवा विमान को जबरदस्ती उतारकर जीवन को खतरे में डालना। उन्हें मालूम था कि इस तरह जबरदस्ती उतरनेवाला अब तक एक भी नहीं बचा था। फिर भी उन्होंने खतरा मोल लिया और अपने अदम्य साहस तथा बुद्धि-चातुर्य से नेट विमान जमीन पर उतार लिया। उनकी इस बहादुरी पर उन्हें वायुसेना मैडल प्रदान किया गया था। इसके बाद ही वे स्क्वाड्रन लीडर बना दिए गए।

बाद में अगस्त १९६५ में जब पाकिस्तान ने पूरे जोर-शोर से भारत पर हमला कर दिया, तब पहली सितम्बर के बाद भारतीय

वायुसेना के इन बहादुर हवाबाजों को अपना कौशल दिखाने को मिला।

दुश्मन का सबसे अधिक जमाव छम्ब क्षेत्र में था। यह क्षेत्र भारत में है और इसी के निकट कश्मीर की पुरानी युद्धविराम-रेखा तथा भारत-पाकिस्तान की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा आकर मिलती है। इस छम्ब इलाके में पाकिस्तान के हुक्मरानों ने तीन-चार हजार पाकिस्तानी सैनिक भारी तोपखाने तथा पचास-साठ टैंकों के साथ झोंक दिये थे। ये सैनिक अखनूर और दीवा तक घुस आए थे। तब इन हमलावरों के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए भारत ने पहली सितम्बर को पहली बार हवाई हमला किया।

हवाई हमले के लिए छम्ब में भारतीय वायुसेना के बहादुर हवा- बाज भेजे गए। इन हवाबाजों ने पाकिस्तानी विमानों का बड़ी बहादुरी के साथ मुकाबला करते हुए दस टैंक तथा कई बख्तरबन्द गाड़ियाँ और तोपें नष्ट कीं।

दो सितम्बर को छम्त्र में भारतीय तथा पाकिस्तानी विमानों की टक्कर हुई। भारत के हवाबाजों के सामने पाकिस्तानी विमानों की एक भी न चली। पाकिस्तान के पास आधुनिक किस्म के लड़ाकू विमान सेवर-जेट तथा ध्वनि से भी तेज उड़ने वाले विमान स्टार- फाइटर थे, फिर भी वे हमारे नेट और हण्टर विमानों के सामने नहीं टिक सके और भाग खड़े हुए। हमारे विमानों ने उनके तेरह टैंक और चालीस बख्तरबन्द गाड़ियाँ नष्ट कर दीं।

फिर तीन सितम्बर को भारतीय वायुसेना के चार नेट विमान दुश्मन पर हमला करने छम्ब की ओर उड़े। इनमें स्क्वाड्रन लीडर ट्रेवर कीलर भी थे। चारों के पास नेट विमान थे-दो आगे थे और दो पीछे। ट्रेवर पीछे वाली कतार में थे।

तभी कीलर ने देखा कि दुश्मन का एक विमान दाहिनी ओर से बिल्कुल निकट चला आया है। ट्रेवर ने यह भी देखा कि दुश्मन के विमान में दो मिसाइल लगे हुए हैं। उन्हें मालूम था कि मिसाइल बड़े खतरनाक होते हैं। उनसे विमान का बच निकलना लगभग असम्भव होता है। यदि दुश्मन का विमान और नजदीक आ जाता और मिसाइल

छोड देता तो ट्रेवर के विमान अथवा अन्य नेट विमानों का बत्र निकलना मुश्किल हो जाता।

ट्रेवर ने तत्काल अपना हल्का-फुल्का नेट विमान दुश्मन के सेबर-जेट विमान के पीछे लगा दिया और थ्रोटल को आगे की ओर बढ़ाया। नेट की रफ्तार एकदम तेज हो गई और वह सेवर-जेट के काफी निकट पहुँच गया। सेबर-जेट के चालक ने बच निकलने की काफी कोशिश की लेकिन ट्रेवर ने उसका पीछा नहीं छोडा। कुछ ही मिनटों में ट्रेवर दुश्मन के विमान के काफी निकट पहुँच गए और उन्होंने खट से गोला दाग दिया।

ट्रेवर का अचूक निशाना दुश्मन के विमान के दाहिने पंख पर लगा और विमान एक ओर तिरछा हो गया। साथ ही साथ विमान पर आग लग गई और वह जलता हुआ नीचे आ गिरा। यह दुश्मन का पहला सेबर-जेट विमान था, जिसे हमारे बहादुर हवाबाज ट्रेवर कीलर ने अपने नेट विमान से मुकाबला करके मार गिराया।

इस बीच दुश्मन के चार अन्य सेबर-जेट विमानों से हमारे तीन अन्य हवाबाज भिडे हुए थे। फिर दुश्मन के दो स्टारफाइटर भी आ गए थे।

मुकाबला बहुत तगडा था। लेकिन हमारे विमान-भेदी तोप- चालक भी कम निशानेबाज न थे। उन्होंने अपने गोलों की बौछार से दुश्मन का एक विमान मार गिराया।

इस प्रकार एक विमान को विमान-भेदी तोपों की मार से गिरते देख और एक को ट्रवर कीलर का निशाना बनते देख दुश्मन के विमानचालक घबरा गए और भाग खडे हुए।

स्ववाढ्रन लीडर ट्रेवर कीलर ने अपने अदस्य साहस और युद्ध- कौशल से सिद्ध कर दिया कि भारत में ही बना नन्हा-सा नेट विमान बडे-बडे लडाकू विमानों का मुकाबला कर सकता है।

ट्रेवर की इस बहादुरी से सारे देश में खुशी की लहर छा गई।

लेकिन इसी बीच एक मजे की बात हुई।

ट्रेवर ने अपने पिता को पत्र लिखा- "मैं यहाँ भारत के लिए

लङ रहा हूँ। इस देश में जन्म लेकर और यहीं पर पालन-पोषण पाकर यह सब-कुछ जो मैं कर रहा हूँ, वह मेरा फर्ज ही नहीं, उससे भी बढ़- कर कोई चीज है. मुझे गर्व है कि मैं अपनी मातृभूमि के लिए लङ रहा हूँ और मैं पूरी तरह स्वस्थ हूँ तथा पाकिस्तानी विमानों को मार गिराने में व्यस्त हूँ।"

इधर यह पत्र चला ही था कि उधर पाकिस्तान रेडियो ने घोषणा की कि "भारतीय स्क्वाड्रन-लीडर ट्रेवर कीलर मारे गए हैं।" यही नहीं, बल्कि विदेशों में टेलिविजन पर उनका चित्र भी दिखाया गया और बताया गया "पहला भारतीय हवाबाज, जो हवाई-युद्ध में पाकिस्तान द्वारा मारा गया।"

ट्रेवर के पिता चार्ल्स कीलर की एक पुरानी जान-पहचान की महिला श्रीमती कार्टर ने हालैण्ड में यह चित्र देखा। उन्होंने तत्काल चार्ल्स को संवेदना-पत्र भेजा।

पत्र पढ़कर उन्हें सदमा लगा, लेकिन पूछताछ करने से उन्हें पता चला कि पाकिस्तान ने यह भूठी अफवाह उङाई है। ट्रेवर स्वस्थ हैं।

चार्ल्स ने गुस्से में भरकर कहा, "इस पाप का फल अयूब को जरूर भुगतना पडेगा। वह बिल्कुल तबाह होगा।"

इसके बाद ही चर्ल्स को ट्रवर का पत्र भी मिल गया और सरकार ने ट्रेवर को 'वीर चक्र' प्रदान करने की घोषणा भी कर दी।

इसके कुछ ही दिन बाद एक पत्रकार ट्रेवर से मिला और उनसे पूछा कि दुश्मन की क्या स्थिति है, तो ट्रेवर ने उत्तर दिया, "हमारा और दुश्मन का मुकाबला हुआ है। अब वह दूर-दूर रहने का प्रयत्न करता है। हमारी उँगलियाँ तो उससे एक बार फिर मुकाबला करने के लिए बेचैन रहती हैं।"

तभी तो ट्रेवर की पत्नी पैत्सी ने भी उनके बारे में कहा था- "थोह, वे तो हमेशा ऊपर आकाश में उङने के लिए बेचैन रहते हैं। जमीन पर तो सीधे पाँव ही नहीं रखते। हमेशा उछलते रहते हैं।"

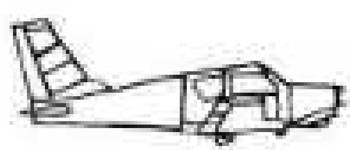

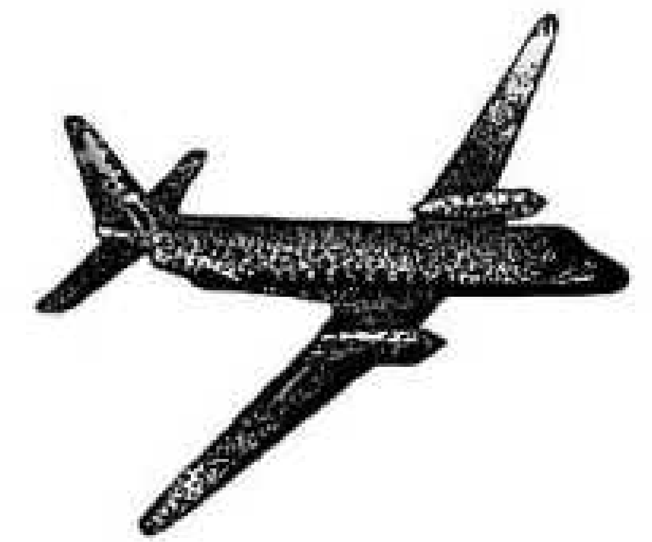

केवल पाँच मिनट

गह कहानी पन्द्रह मिनट की है, लेकिन इसमें जो मुख्य घटना है वह है- केवल पाँच मिनट की।

कहानी हमारे एक हवाई अड्डे से शुरू होती है और अखनूर पर जाकर समाप्त हो जाती है।

दोपहर ढल रही है। तीन बज चुके हैं और हमारे चार नेट विमान तेजी से अखनूर की ओर बढ़े जा रहे हैं।

ठीक तीन बजे हवाई अड्डे पर सूचना आई थी कि दुश्मन के चार सेबर-जेट विमान अखनूर की ओर आ रहे हैं। उनका मुकाबला करने ही हमारे ये चार नेट तेजी से अखनूर की ओर जा रहे हैं।

अखनूर जम्मू के उत्तर और छम्ब के पूरब में है। छम्ब-क्षेत्र में कल तीन सितम्बर को बङा घमासान युद्ध हुआ था। सुबह दुश्मन के पाँच सेबर-जेट और दो स्टार फाइटर विमान इस क्षेत्र में बम बरसाने आए थे। लेकिन हमारे बहादुर ह्वाबाजों ने उनकी एक न चलने दी थी। दुश्मन का एक विमान नीचे विमान-भेदी तोपों से धराशायी कर दिया गया था और एक विमान स्क्वाड्रन-लीडर ट्रेवर कीलर ने हवाई- युद्ध में मार गिराया था।

इस हवाई-युद्ध से दुश्मन के विमान चालक इतने घबरा गए थे

कि जिसे जिधर रास्ता मिला, वह उधर ही भाग खङा हुआ। हमारे

विमान उनका पीछा करते रहे और तभी लौटकर आए जब उन्होंने दुश्मन के बाकी पाँच विमान अपनी सीमा से बाहर खदेङ दिए।

दुश्मन के एक विमान ने भागते-भागते छम्ब के जौरियाँ गाँव में बम गिरा दिए थे, जिससे एक मस्जिद में नमाज पढ़ने वाले पचास मुसलमान वहीं समाप्त हो गए।

आज चार सितम्बर की सुबह भी छम्ब क्षेत्र में हवाई-युद्ध हुआ था। वहाँ दुश्मन का जमाव बराबर बढ़ता जा रहा था और उसकी फौजें जम्मू तक आने का प्रयत्न कर रही थीं। इसलिए आज सुबह चार मिस्टीयर विमान छम्ब में दुश्मन के जमाव पर बम बरसाने भेजे गए। इन मिस्टीयर विमानों ने हैडक्कार्टर पर बम बरसाए और एक क तथा अनेक बख्तरबन्द गाडियाँ नष्ट कीं।

इन मिस्टीयरों का मुकाबला करने दुश्मन ने दो सेबर-जेट और दो स्टारफाइटर विमान भेजे थे।

दुश्मन के विमानों ने हमारे मिस्टीयरों के निकट पहुँचते ही साइड वाइण्डर मिसाइल फेंके थे।

मिसाइल बङे खतरनाक होते हैं। सामान्यतः इन मिसाइलों से बच निकलना असम्भव होता है। लेकिन हमारे बहादुर हवाबाज इन मिसाइलों को भी चकमा देकर निकल गए और दुश्मन के विमान- चालक आश्चर्य से देखते रह गए थे।

इसी बीच हमारे चार नेट विमान दुश्मन का मुकाबला करने पहुँच गए थे। मिस्टीयर तो बच निकले और नेट इन सेबर-जेटों तथा स्टारफाइटरों से भिङ गए।

हवाई-युद्ध में भिङने का अर्थ आमने-सामने भिङना नहीं होता। इसके माने होते हैं-एक-दूसरे के पीछे लगने का प्रयत्न करना। प्रत्येक विमान अपने दुश्मन के विमान के पीछे पहुँचने का प्रयत्न करता है, जिससे वह ठीक पीछे पहुँचकर सामने वाले विमान पर गोला दाग सके।

जिस प्रकार एक कुत्ता दूसरे कुत्ते के पीछे भागकर उसकी दुम काट खाने का प्रयत्न करता है और अगला कुत्ता गोल चक्कर काटता हुझा पिछले कुत्ते के पीछे पहुंचने की कोशिश करता है, ठीक उसी प्रकार हवाई-युद्ध में भी लङाकू विमान बराबर यही कोशिश करता है

कि वह दुश्मन के विमान के ठीक पीछे पहुँच जाए। इसीलिए इस तरह के हवाई-युद्ध को 'डाग-फाइटिंग' कहते हैं।

तो हमारे नेट विमान भी दुश्मन के विमानों के साथ 'डाग- फाइटिंग' करते रहे और अन्त में दुश्मन के विमान भाग खड़े हुए। शायद वे इतने घबरा गए थे कि उन्होंने भागते-भागते अपने ही इलाके में अपने सब बम गिरा दिए थे।

सुबह के इस हवाई-युद्ध के बाद अब तीन बजे दुश्मन के चार सेबर-जेट विमान फिर बम बरसाने अखनूर की ओर आ रहे थे; और इन्हीं का मुकाबला करने हमारे चार नेट विमान भेजे गए।

यहीं से हमारी पन्द्रह मिनट की कहानी शुरू होती है:

ठीक तीन बजे हवाई अड्डे से चार नेट उड़े। इनके नेता थे- स्क्वाड्रन-लीडर, जे० डब्ल्यू० ग्रीन और उनके नम्बर दो पलाइट- लेफ्टिनेण्ट एम० मुद्देश्वर थे। स्क्वाड्रन लीडर अमरजीतसिह सन्धू नम्बर तीन तथा सब-सेक्शन लीडर थे और नम्बर चार थे- फ्लाइट- लेफ्टिनेण्ट वीरेन्द्रसिंह पठानिया।

तीन बजकर दस मिनट पर वे अखनूर के निकट पहुँचे। अखनूर से छः मील दक्षिण-पूर्व। मुर्देश्वर ने दुश्मन के चार सेवर-जेट विमानों को भारतीय सेना पर बम बरसाते देखा। उसने तुरन्त रेडियो- टेलीफोन पर स्क्वाड्रन लीडर ग्रीन को बताया।

ग्रीन ने भी चारों सेवर-जेटों को देखा और तत्काल अपने साथियों को हमला करने का आदेश दिया।

फिर हवाई-युद्ध शुरू हो गया- वही डाग-फाइटिंग।

पठानिया अभी तक केवल तीन सेबर-जेट देख पाया था। जैसे ही उसके साथियों ने हमला किया, उसकी निगाह चौथे सेबर-जेट पर पड़ी। वह सेबर-जेट भारतीय सेना पर बम बरसाकर ऊपर उठता हूँ था अखनूर की ओर जाने का प्रयत्न कर रहा था।

पठानिया ने रेडियो-टेलीफोन पर अपने सब-सेक्शन २. डर सन्धू को बताया- "चौया सेवर अखनूर की ओर भाग रहा है।'

"पीछा करो," सन्धू ने आदेश दिया।

पठानिया फौरन दाहिने मुड़कर चौथे सेबर-जेट के पीछे लग गया। वह अभी दो हजार गज दूर था। पठानिया ने रफ्तार बढ़ाई।

सेबर-जेट भागा। पठानिया ने पीछा किया। अखनूर पीछे छूट गया। अब सेबर-जेट केवल छः सौ गज दूर रह गया। पठानिया ने गोले दाग दिए धाँय घाँय।

दुश्मन के सेबर-जेट से धुआं निकलने लगा। पठानिया और आगे बढ़ा, रफ्तार तेज की। अब सेबर-जेट चार सौ गज दूर था। गोलों की एक बौछार और धाँय धाँय धांयः। सेबर-जेट से धुएँ का गुबार निकलने लगा-काला और गाढ़ा। पंख के कुछ टुकड़े भी टूट- कर उड़े।

पठानिया और आगे बढ़ा। दुश्मन ने भागने की कोशिश में रफ्तार बढ़ाई। पठानिया ने भी रफ्तार बढ़ा दी। दुश्मन का विमान तीन सौ गज दूर रह गया। पठानिया ने फिर गोले दाग दिए-धाँय... धाँय धाँय।

तभी सन्धू दूसरी ओर से पठानिया के पीछे पहुँचकर बोला- "पठानिया, दुश्मन को छोड़ना मत! मैं तुम्हारे पीछे हूँ।"

पठानिया तीन बार गोले दाग चुका था और तीनों बार निशाना ठीक पड़ा था। लेकिन दुश्मन का सेबर-जेट अभी तक गिरा नहीं था। पठानिया को कुछ आश्चर्य हुआ। वह कुछ ऊपर उठकर आगे बढ़ा, सेबर-जेट को ऊपर से देखने के लिए। निकट पहुँचकर सेबर-जेट को देखकर वह आश्चर्यचकित रह गया।

"नम्बर दो," पठानिया ने आश्चर्य से सन्धू से कहा, "सेबर के काकपिट के ऊपर ढक्कन नहीं है। पायलट भी नहीं दिखाई दे रहा है। शायद वह कूद चुका है या मर गया है।"

तभी दोनों ने देखा - वह सेबर-जेट एक ओर झुका और तेजी से जमीन की ओर गिर पड़ा। उस समय तीन बजकर ठीक चौदह मिनट हुए थे।

पठानिया ने संतोष की सांस ली और अपने साथियों की ओर देखा। अब तक वह इतना मशगूल था कि वह भूल गया कि उसके

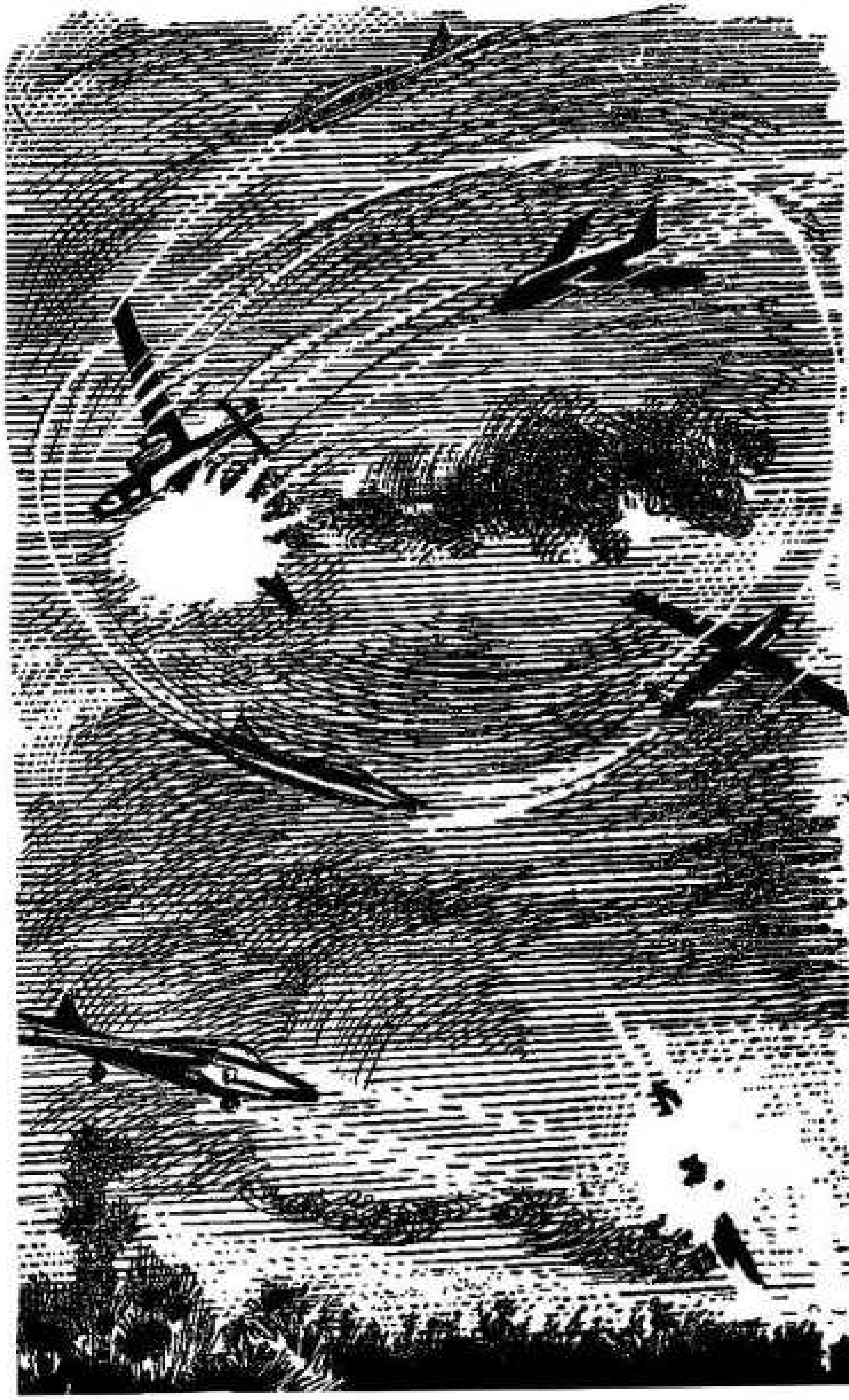

साथी दुश्मन के बाकी तीन सेबर-जेटों से भिडे हुए हैं।

अब उसे फुरसत मिली। उसने स्थिति भाँपनी चाही। तभी उसने देखा कि अन्य नेट विमानों ने एक और सेबर-जेट मार गिराया है। उसने घडी देखी-तीन बजकर पन्द्रह मिनट।

इस प्रकार यह कहानी केवल पन्द्रह मिनट की है और इसमें जो मुख्य घटना है, वह है- केवल पाँच मिनट की।

कहानी शुरू होती है-एक हवाई अड्डे से ठीक तीन बजे। तीन बजकर दस मिनट पर अखनूर के ऊपर घटना का आरम्भ होता है और दो सेबर-जेट को धराशायी करने के बाद ठीक तीन बजकर पन्द्रह मिनट पर कहानी और घटना दोनों समाप्त हो जाती हैं।

बाकी रही बात हमारे हवाबाज़ों की। चारों हवाबाज़ खुशी- खुशी हवाई अड्डे पर लौट आते हैं। आज का मुख्य नायक है-- फ्लाइट-लेफ्टिनेण्ट वीरेन्द्रसिंह पठानिया। यह युवक अभी केवल सत्ताइस वर्ष का है। यह कांगडा जिले के नूरपुर गाँव का रहने वाला है और इसने धर्मशाला, पठानकोट, होशियारपुर तथा श्रीनगर में शिक्षा प्राप्त की। अगस्त १९५६ में यह भारतीय वायुसेना में भरती हो गया था और तब से देश की सामरिक सेवा में लगा हुआ है। आज ४ सितम्बर को इसने जिस कुशलता से दुश्मन का विमान गिराया, उसके लिए राष्ट्रपति ने इसे वीरचक्र प्रदान किया है।

हलवाड़ा की रक्षा में

"फला इंग अफसर नेब, आप कहाँ के रहने वाले हैं ?" एक पत्रकार ने पूछा।

"हमारा परिवार पहले पंजाब में रहता था। अब हमारा घर देहरादून में है और माता-पिता बम्बई रहते हैं। इसलिए अब आपको कैसे बताऊँ कि मैं किस प्रदेश का रहने वाला हूँ," नेव ने

उत्तर दिया और फिर पूछा, "क्या आप बता सकते हैं ?" "हाँ, आप उस प्रदेश के हैं, जो बहुत बड़ा है, बहुत बड़ा," एक अन्य पत्रकार ने कहा, "और उसका नाम भारत है।"

पत्रकारों का दल अम्बाला गया हुआ था। वहाँ भारतीय वायुसेना के कमाण्डिग अफसर डी० ई० बाउच उनका परिचय अपने बहादुर हवाबाजों से करा रहे थे। इन्हीं में वीरचक्र विजेता फ्लाइंग-अफसर वी० के० नेब भी थे।

"आपकी विजय का क्या रहस्य है ?" एक पत्रकार ने पूछा।

"मिल-जुलकर काम करना," नेब ने तत्काल उत्तर दिया।

भारत और पाकिस्तान में भयंकर युद्ध चल रहा था। एक सितम्बर से हवाई-युद्ध भी शुरू हो चुका था और हमारे हवाबाज बहादुरी के साथ दुश्मन को नीचा दिखाते जा रहे थे। स्क्वाड्रन-लीडर ट्रेवर कीलर तीन सितम्बर को और स्क्वाड्रन-लीडर पठानिया चार

सितम्बर को अपने नेट विमान से दुश्मन के एक-एक सेवर-जेट विमान गिराकर सिद्ध कर चुके थे कि हमारे भारत में ही बने नेट विमान उनके अमेरिका से माँगे हुए सेबर-जेट विमानों से कहीं अधिक अच्छे हैं और उनसे भी अच्छे हैं हमारे हवाबाज।

इस युद्ध में हमारे हवावाज चार मुख्य काम कर रहे थे-एक तो दुश्मन के हवाई अड्डे पर हमला करना, जिससे वहाँ से दुश्मन के विमान न उङ सकें; दूसरे, दुश्मन को आगे बढ़ने से रोकने के लिए अपनी स्थल सेना को सहायता पहुँचाना; तीसरे, बम बरसाने के लिए जानेवाले बम-वर्षक विमानों की रक्षा करना; और चौथे, दुश्मन के विमानों को अपनी सीमा में आने से रोकना तथा अपने रक्षा-स्थलों व हवाई अड्डों की रक्षा करना।

आज छः सितम्बर को भी हमारे विमान स्थल सेना को सहायता पहुंचाकर हलवाङा हवाई अड्डे पर लौट रहे थे। फ्लाइंग अफसर आदि रुस्तमजी गांधी और उनके साथी को इन विमानों की रक्षा का भार सौंपा गया था। शाम के साढ़े छः बज चुके थे और हमारे बम-वर्षक विमान हवाई अड्डे पर उतर रहे थे। गांधी तथा उसके साथी अपने हण्टर विमानों में बैठे चक्कर लगा रहे थे।

दूसरी ओर फ्लाइट-लेफ्टिनेण्ट डी० एन० राठौर तथा फ्लाइंग- अफसर विनोदकुमार नेब को हवाई अड्डे की चौकसी का भार सौंपा गया था। वे दोनों भी अपने हण्टरमय विमानों में हलवाङा से लगभग तीन मील दूर थे। इसी समय राठौर ने हलवाङा के ऊपर लगभग ६,००० फुट ऊँचाई पर चमकती हुई चीज देखी। उसने फिर गौर से देखा।

"नेब," राठौर रेडियो-टेलीफोन पर जोर से बोला, "हलवाङा पर हमला हो रहा है ! लोटो !"

दोनों लौट पडे। दोनों ने देखा कि दुश्मन के दो सेबर-जेट विमान गांधी और उसके साथी के साथ मुठभेङ में लगे हुए हैं और दो

विमान हवाई अड्डे पर बम बरसाने के लिए लक्ष्य साध रहे हैं। "नेब, तुम बाएँ सेबर को देखो," राठौर ने रेडियो-टेलीफोन

पर कहा, "मैं दाहिने वाले को देखता हूँ। नेब ने अपना विमान तुरन्त बाई ओर मोङ दिया और राठौर

दाहिनी ओर चल दिया। दोनों इस प्रयत्न में थे कि दुश्मन के विमान हवाई अड्डे पर बम न बरसा पाएँ।

अभी वे दोनों दुश्मन के उन विमानों के पीछे लग ही रहे थे कि उन्हें गांधी के विमान से धाँय-धाँय तोप गरजने की आवाज सुनाई दी। साथ ही उन्होंने देखा कि दुश्मन का विमान बड़ी तेजी से नीचे गिर रहा है। चारों के दिल में खुशी की लहर दौड़ गई।

लेकिन गांधी का विमान भी न बच सका। जब वह पहले विमान पर गोले दाग रहा था, तभी दुश्मन का एक विमान उसके पीछे आ गया । दुश्मन की गोलाबारी से गांधी के हण्टर विमान का एक पंख टूट गया और वह हवा में डगमगाने लगा। गांधी के पास कूदने के सिवा और कोई चारा नहीं रह गया। उसने इजेक्शन लीवर खींचा और पैराशूट लेकर विमान से कूद पड़ा ।

उधर राठौर और नेब दो सेबर-जेटों के पीछे लगे हुए थे । दुश्मन के विमानों को मार गिराने के लिए हवाई अडडे से विमान-भेदी तोप भी गरज रही थीं । दुश्मन का एक विमान, जो ऊपर की ओर भागने की कोशिश कर रहा था, तोप के गोलों का शिकार बन गया और जलता हुआ नीचे आ गिरा ।

अब दुश्मन के केवल दो विमान रह गए थे। राठौर और नेब उन दोनों को घेरने का प्रयत्न कर रहे थे।

राठौर अधिक तेज निकला। वह दुश्मन के दाहिने वाले विमान के पीछे पहुँच गया। अभी दोनों में एक हजार गज का फासला था । "नेब, तुम बाएँ सेबर का पीछा करो," उसने नेब से रेडियो- टेलीफोन पर कहा और लीवर खींचकर रफ्तार बढ़ाई ।

अब दुश्मन का विमान केवल साढ़े छः सौ गज दूर रह गया । राठौर ने बटन दबाकर गोले दाग दिये। दुश्मन का विमान डगमगाया और बमबारी छोड़ भागने का प्रयत्न करने लगा। राठौर ने फिर रफ्तार बढ़ाई और पाँच सौ गज निकट पहुँचकर फिर गोले दाग दिये। ये गोले दुश्मन के विमान के लिए घातक सिद्ध हुए । विमान का

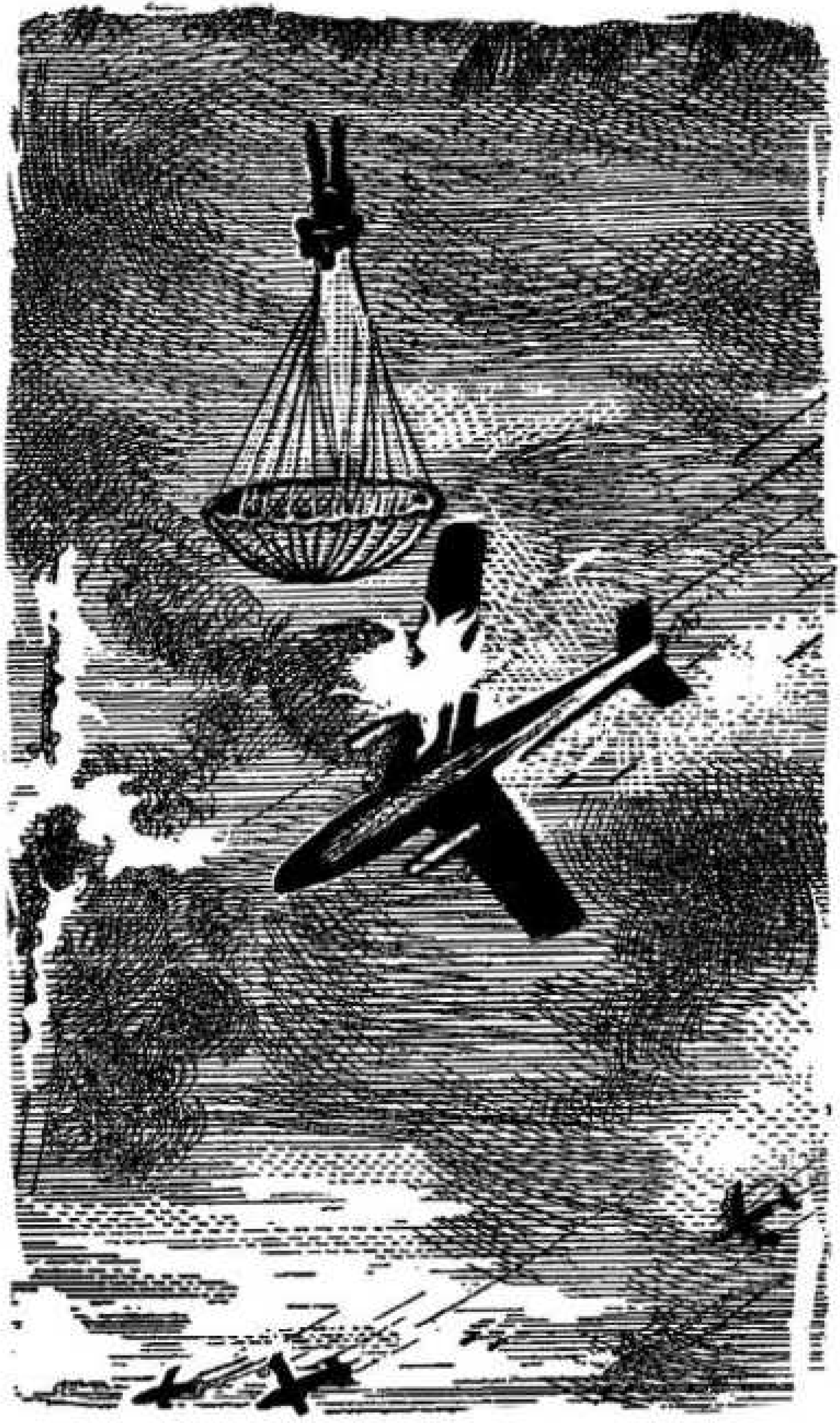

बायाँ पंख टूट गया और वह कलाबाजियाँ खाकर आग में जलता हुआ हवाई अड्डे से लगभग छः मील दूर जा गिरा।

इस बीच नेब चौथे विमान के पीछे लगने का प्रयत्न करता रहा। वह वायुसेना में नया-नया भरती हुआ था और अभी तक वह हवाई-युद्ध की पूरी ट्रेनिंग भी नहीं ले पाया था। फिर भी उसका हौसला इतना ऊँचा था कि वह अपने हण्टर-विमान से दुश्मन के सेबर-जेट विमान का पीछा करता रहा और दुश्मन उससे बचता रहा। नेव ने कभी विमान से गोले भी नहीं दागे थे, इसलिए इसका भी उसे अनुभव नहीं था।

वह कुछ ही देर बाद दुश्मन के विमान के ठीक पीछे आने में सफल हो गया। जब दुश्मन का विमान केवल चार सौ गज दूर रह गया । तव नेव ने धाँय-धाँय गोले दाग दिये। दुश्मन घबराया। उसने तेजी से अपने सेबर-जेट विमान को ऊँचा उठाया। वह इतना ऊँचा चला जाना चाहता था, जिससे नेब उस तक न पहुँच सके।

लेकिन जो थोड‌े-से क्षण उसे ऊपर की ओर उठने में लगे, उन्हीं क्षणों में नेव उसके लगभग सौ गज निकट पहुँच गया। दुश्मन का विमान उठा ही था कि नेव ने गोले दाग दिये। इस बार उसका निशान अचूक रहा।

नेव ने देखा दुश्मन के विमान का बायाँ पंख टूट कर टुकड‌े- टुकड‌े हो गया है। विमान से पहले धुआँ निकलां, फिर उसमें भयंकर आग लग गई और वह जलता हुआ नीचे गिर गया।

इस प्रकार हलवाड‌ा पर आक्रमण करने के लिये आने वाले दुश्मन के चारों सेबर-जेट विमान धराशायी हो गए। उनमें से एक भी वचकर वापस न जा सका।

अब तक यही कहा जाता था कि हमारे नेट-विमान और उनके चालक दुश्मन के सेवर-जेट विमान और उनके चालकों से कहीं बढ़- चढ़कर हैं, लेकिन छः सितम्बर के इस हवाई-युद्ध से यह सिद्ध हो गया कि हमारे हण्टर विमान और उनके चालक भी दुश्मन के सेबर- जेट विमान और उनके चालकों से कहीं श्रेष्ठ हैं।

फ्लाइट-लेफ्टिनेण्ट। राठौर, फ्लाइंग अफसर नेब और फ्लाइंग

अफसर गांधी को राष्ट्रपति ने वीरचक्र प्रदान किया है।

गांधी से एक पत्रकार ने इस युद्ध का जिक्र करते हुए पूछा, "अब तक आपने कितनी भीषण लड़ाइयाँ लड़ी हैं ?"

"वास्तव में यही मेरी पहली भीषण लड़ाई थी," गांधी ने उत्तर दिया, "इससे पहले ट्रेनिंग में हम ऐसी लड़ाइयाँ लड़ते थे। उन्हीं के अनुभव ने मुझे इस लड़ाई में मदद दी। यह बहुत ही रोमांचकारी अनुभव रहा और आवश्यकता पड़ने पर मैं इसे बार-बार दुहराने के लिये तैयार हूँ।"

"आपके विचार से हवाई-युद्ध में हमारी सफलता का रहस्य क्या है ?" पत्रकार ने फिर पूछा।

"हमारी सफलता का मुख्य कारण है- अच्छा नेतृत्व, हमारे कमाण्डरों की रण-नीति और हमारे हवाबाज़ों का हौसला," गांधी ने उत्तर दिया।

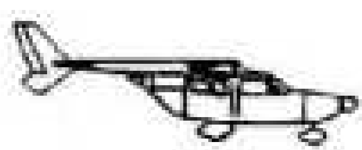

माँ की प्रेरणा

बूढ़े माँ-बाप घर वापस जाने की तैयारी करने लगे। वे अपने बेटे के पास आए हुए थे। बेटा भारतीय वायुसेना में स्क्वाड्रन-लीडर था और हवाई अड्डे के ही निकट रहता था। भारत-पाकिस्तान युद्ध भयंकर से भयंकरतर होता जा रहा था और दुश्मन बराबर उस हवाई- अड्डे पर बम बरसाने का प्रयत्न कर रहा था। इसलिए बेटे को अपने माँ-बाप के बारे में काफी चिन्ता हो गई थी। वह चाहता था कि उसके माँ-बाप जल्दी-से-जल्दी यहाँ से घर लौट जाएँ, क्योंकि यहाँ हवाई- अड्डे पर दुश्मन का खतरा बहुत बढ़ गया था।

लेकिन यह कहने के लिए उसे क्षण-भर. का भी अवकाश नहीं मिल पाता था। हर रोज सुबह ही वह अपने साथियों को लेकर दुश्मन का मुकाबला करने के लिए उङ जाता। दिन-भर वह उङानें भरता और दुश्मन के अड्डों पर बम बरसता। रात को भी उसे फुरसत नहीं मिल पाती। कल ही वह बहुत बङे खतरे का सामना करके दुश्मन के सबसे मजबूत हवाई अड्डे पर बम बरसाकर लौटा था। उसकी सफलता पर उसके सभी साथी वाह-वाह कर उठे थे।

आज भी उसे फिर दुश्मन का मुकाबला करने जाना था। लेकिन बूढ़े माँ-बाप ? उन्हें इस क्षेत्र से बाहर भेज देना आवश्यक था। दुश्मन जाने कब बम बरसा जाए। लेकिन उसे घर जाने की फुरसत ही कहाँ थी !

अतः उसने टेलीफोन पर ही अपने पिता से कह दिया कि वे

जल्दी-से-जल्दी इस क्षेत्र को छोड्कर घर चले जाएँ। खतरा बढ़ गया है।

"बेटे ! क्या तुम पाँच मिनट के लिए आ सकते हो ?" पिता ने टेलीफोन पर ही पूछा था।

"नहीं। मुझे अभी फिर जाना है। मेरा आना सम्भव नहीं है," बेटे ने उत्तर दिया, "आपको जो कहना हो फोन पर ही कह दीजिए।"

"बेटे !" उसे टेलीफोन पर अपने पिता की धीर-गम्भीर वाणी सुनाई दी, "मैं नहीं चाहता कि तुम पाकिस्तानियों द्वारा पकड़े जाओ। पकड़े जाने से अच्छा यही है कि तुम अपने ही विमान के साथ खत्म हो जाओ। मैं यह खबर नहीं सुनना चाहता कि मेरा लड़का पाकि- स्तानियों द्वारा पकड़ा गया है।"

एक क्षण सन्नाटा रहा। बेटा कुछ न बोल पाया। पिता ने कितनी बडी बात कह दी थी ! देश की इज्ज़त के सामने बेटे की जान की क्या परवाह ! बेटे का सीना गर्व से फूल उठा।

"बेटे, तुम्हारी माँ तुमसे बात करना चाहती है," उसे फिर टेलीफोन पर पिता की आवाज सुनाई दी।

माँ...? 'कमजोरी तेरा नाम औरत है!' शेक्सपियर ने कहा था। किसी अन्य ने कहा था- 'अगर दुनिया भर की करुणा, ममता, भय और कमजोरी देखनी हो तो माँ का दिल देखो।' वही माँ उससे टेलीफोन पर बात करना चाहती है। जाने क्या कहे ! शायद कहेगी- 'बेटा ! अपना ध्यान रखना।' या शायद और कुछ।

"माँ," वह टेलीफोन पर इतना ही बोल पाया।

"बेटे," उसे माँ की ममताभरी आवाज सुनाई दी, "मेरे बेटे ! बहादुरी से लड़ना अच्छा !"

ओह, माँ ! कितना बड़ा दिल' है तुम्हारा ! शायद पिता से भी बड़ा। पुरुष तो कठोर होता ही है, लेकिन नारी ? ममता के सागर को अपने हृदय में सँजोकर रखने वाली भारतीय नारी समय आने पर रणचण्डी भी बन सकती है। इसीलिए भारतीय नारी को वीर-प्रसू कहा गया है। आज इस माँ ने जो शब्द कहे हैं, वही शब्द शायद अभिमन्यु को चक्रव्यूह में भेजते समय उसकी माँ ने कहे होंगे; आल्हा- ऊदल से उनकी माँ ने कहे होंगे। भगतसिंह से उसकी माँ ने कहे होंगे।

भारतीय नारी की यही परम्परा रही है।

माँ के शब्दों को सुनकर बेटे का सिर गर्व से ऊँचा उठ गया। उसने संकल्प लिया 'माँ के शब्दों का अक्षरशः पालन करूँगा !'

यह बेटा था स्क्वाड्रन-लीडर सुदर्शन हाण्डा। कल ही उसने सरगोधा पर बम बरसाए थे और आज फिर जल्दी ही दुश्मन पर कहर ढाने जाने वाला था।

कल की बात है :

स्क्वाड्रन-लीडर हाण्डा को सरगोधा के हवाई अड्डे पर बम बरसाने के लिए भेजा गया था।

सरगोधा का हवाई अड्डा दुनिया के सबसे मजबूत और बढ़िया बारह हवाई अड्डों में माना जाता है। यह लाहौर से लगभग १०० मील दूर उत्तर-पश्चिम की ओर है। इसमें पाकिस्तान अपने ध्वनि से भी तेज उड़ने वाले एफ-१०४ स्टारफाइटर तथा अन्य विमान रखता है। पाकिस्तान को अपने इस हवाई अड्डे पर बहुत गर्व है।

स्क्वाड्रन-लीडर हाण्डा अपने तीन साथियों के साथ सरगोधा के ऊपर पहुँचा। वहाँ उसे कोई भी विमान नहीं दिखाई दिया। हाण्डा सबसे आगे था। उसने तत्काल हवाई अड्डे के पेट्रोल के भण्डार पर बम बरसाने का निर्णय किया। दुश्मन की विमान-भेदी तोपें गरजने लगी थीं।

हाण्डा ने उनकी परवाह न कर तेजी से गोता मारा और दो-दो हजार पौण्ड के बम पेट्रोल-भण्डार पर बरसा दिए। अभी वह ऊपर की ओर उठ ही रहा था कि उसे उड़ने के लिए तैयार विमानों के स्थल आपरेशनल रेडी प्लेटफार्म नं० १ में तीन सेबर-जेट और एक स्टार- फाइटर दिखाई दिए।

"ग्रो० आर० पी० १ में विमान हैं। मैं जा रहा हूँ। आप लोग अपने-अपने लक्ष्य देखें," हाण्डा ने रेडियो-टेलीफोन पर अपने साथियों को हिदायत दी।

इसके तुरन्त बाद ही हाण्डा ने गोता मारा और ओ० आर० पी० १ पर तोपें दाग दीं। जैसे ही वह ऊपर उठा, उसने देखा कि वहाँ बीच वाला सेबर-जेट धू-धू कर जल उठा है।

इसके साथ ही हाण्डा के दूसरे साथी ने गोता मारा और ओ० आर० पी० १ में दो बम डाल दिए और फिर ऊपर उठकर उसने ओ० आर० पी० २ की ओर गोता मारा और गोले दाग दिए।

ओ० आर० पी० १ और ओ० आर० पी० २ के बीच हैंगर था, जहाँ विमान रखे जाते हैं। फ्लाइट-लेफ्टिनेण्ट बरार ने भी गोता मारा और हैंगर पर दो बम डाल दिए।

फ्लाइट-लेफ्टिनेण्ट राजकुमार भी पीछे नहीं रहा। उसने भी गोता मारा और ओ० आर० पी० २ पर दो बम डाल दिए।

सारा हवाई अड्डा जल उठा। जिस हवाई अड्डे पर पाकिस्तान को इतना गर्व था, वहाँ इस समय धूल उड़ रही थी और आग लग रही थी। हाण्डा विजयी वीर की तरह अपने इस आक्रमण की सफलता को देख रहा था। लेकिन उसे अपना एक भी साथी नहीं दिखाई दिया। वह लगभग आधे मिनट तक इधर-उधर देखता रहा।

"मेरे साथ कोई है ?" उसने रेडियो-टेलीफोन पर पूछा। "जी हाँ, सभी आपके साथ हैं," उसे रेडियो-टेलीफोन पर

राजकुमार की आवाज सुनाई दी। हाण्डा का चेहरा खुशी से चमक उठा। उसे अब तक यही आशंका थी कि उसके साथी दुश्मन की विमान-भेदी तोपों के शिकार

हो चुके हैं। अब वह आश्वस्त था; सभी पीछे-पीछे चले आ रहे थे। "आज तुमने बहुत बढ़िया काम कर दिखाया, दोस्तो !" हाण्डा ने रेडियो-टेलीफोन पर अपने साथियों से कहा, "चलो, अब घर लौटें।" इस प्रकार चारों साथी खुशी-खुशी अपने हवाई अड्डे पर लौट आए थे।

और आज स्क्वाड्रन-लीडर हाण्डा के माँ-बाप इस इलाके से दूर अपने घर लौटने की तैयारी कर रहे थे और वह दुश्मन पर फिर कहर ढाने के लिए जाने वाला था। और उसे बार-बार टेलीफोन पर कहे गए अपनी माँ के शब्द याद आ रहे थे- 'मेरे बेटे ! बहादुरी से लड़ना अच्छा !'

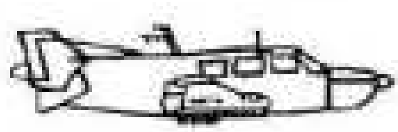

पूरब में भी

चारों ओर खुशी की लहर छाई हुई थी। नई दिल्ली के प्रसिद्ध चारों बाजार कनाट प्लेस में लोगों का उत्साह देखने लायक था। अभी-अभो रेडियो से समाचार आया था कि भारतीय सेना ने लाहौर के इलाके में प्रवेश कर लिया है और लाहौर से कुछ ही दूर घमासान युद्ध चल रहा है।

युवक सड्क पर ही भाँगड्ग नाचने लगे और उन्हें घेरकर अन्य साथी वीर जवानों के बहादुरी के गीत गाने लगे। बीच-बीच में सभी एक साथ नारे लगाते "भारतीय सेना जिन्दाबाद; हमलावर मुर्दा- बाद !" इन गगनभेदी नारों से सारी राजधानी गूंज रही थी।

एक बुजुर्ग की आँखों में खुशी के आँसू थे। वह गद्गद कंठ से बोला, "मेरे बेटों ने माँ के दूध की लाज रख ली।" इस बुजुर्ग के दो लड्के हैं और दोनों ही मोर्चे पर थे।

यह ६ सितम्बर की बात है। लोगों के कान रेडियो पर ही लगे रहे। लाहौर के निकट भारतीय सेना का पहुँच जाना बहुत बड्री बात थी। एक ओर यह खुशी के समाचार सुनाए जा रहे थे और दूसरी ओर पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब अपने देश के नाम रेडियो से सन्देश दे रहे थे- "भारत को अभी पता नहीं है कि उनका पाला किन लोगों से पड्ग है. समय आ गया है कि हम इसका करारा जवाब दें।"

प्रेसिडेण्ट अयूब जो भी करारा जवाब देते उसका सामना करने

के लिये सारा भारत एक हो गया था। राजधानी के हजारों युवक नारे लगा रहे थे "सिर पर कफन बाँधकर दुश्मन के मुकाबले के लिये तैयार हो जाओ दुश्मन को पछाङ कर छोडेंगे।"

दूसरे दिन सुबह सभी लोग बङी बेताबी से समाचारपत्र की प्रतीक्षा करते रहे । समाचारपत्र आया, लोगों ने पढ़ा- भारतीय सेना का तीन ओर से पश्चिमी पाकिस्तान में प्रवेश : लाहौर के बाहर युद्ध : फीरोजपुर व स्यालकोट क्षेत्रों में भारतीय सेना की तेज प्रगति : छम्ब इलाके में पाक सेना को पीछे हटना पङा भारतीय विमानों ने छम्ब- जोरियाँ क्षेत्र में पाकिस्तान के पाँच टैंक, दो अति भारी तोपें, दस हल्की तोपें, बारह परिवहन गाङियाँ तथा अनेक बख्तरबन्द गाङियाँ नष्ट कीं । भारतीय हवाबाज़ों ने सैनिक सामान ले जाने वाली मालगाङी, तेलवाहक गाङी, सैनिक गाङियाँ तथा एक सैनिक शिविर नष्ट किया । पाकिस्तानी सेबर-जेट विमानों ने लुधियाना से नौ मील दूर गुरुद्वारा मच्छीवाङा पर राकेट गिराये। चार पाकिस्तानी सेबर-जेटों ने हलवाङा हवाई अड्डे पर हमला किया, जिनमें से तीन को भारतीय हण्टर विमानों ने हवाई-युद्ध में मार गिराया और चौथा सेबर-जेट विमान-भेदी-तोपों की मार से गिरा दिया गया। पाकिस्तानी विमानों ने पठानकोट, पटियाला और अम्बाला के निकट छाता-सैनिक उतारे । लाहौर रेडियो-स्टेशन बंद ।

इधर ७ सितम्बर की सुबह को यह समाचार पढ़े जा रहे थे और उधर दुश्मन हमारे क्षेत्र में बमबारी करने के लिए विमान भेज रहा था। पश्चिमी क्षेत्र में उसके विमान कई बार मुँह की खा चुके थे । इसलिए अब वह पूर्वी क्षेत्र अर्थात् बंगाल में भी अपनी किस्मत आज- माने लगा। सुबह ही दुश्मन के ६ सेबर-जेट विमान कलाईकुण्डा पर बमबारी करने के लिए मॅडराने लगे। भारत के केवल दो हण्टर- विमान उनका मुकाबला करने आगे बढ़े। इनमें लीडर था फ्लाइट- लेफ्टिनेण्ट एलफ्रेड टायरन कुक और उसका साथी था फ्लाइंग- अफसर सुबोधचन्द्र ममगाईं ।

"मैं दाहिने सेबर को देखता हूँ, ममगाईं," कुक ने रेडियो-

टेलीफोन पर कहा, "तुम बाएँ देखो।"

ममगाई बाईं ओर मुड़ गया। वह एक सेबर से टकराने ही वाला था कि उसने तेजी से गोता मारा। उधर कुक एक साथ दो सेबर-जेटों को घेरने लगा।

एक ओर ६ सेबर-जेट और दूसरी ओर केवल दो हण्टर- विमान। कैसे मुकाबला किया जाए? लेकिन यहीं पर तो बहादुरों की परीक्षा होती है।

कुक और ममगाईं को अपनी ओर आते देख दुश्मन के विमानों ने अपने बम छोड़ने शुरू कर दिए। एक बम हवाई अड्डे के निकट गिरा और वहाँ खड़े दो पुराने विमान जल उठे।

खतरा बढ़ गया था। ममगाईं ने अपनी जान की परवाह न कर एक सेबर-जेट के पीछे अपना विमान बढ़ाया। सेबर-जेट ने उसे आता देख गोता लगाया। ममगाईं ने भी कलाबाजी खाई और बिल्कुल निकट जा पहुँचा। सेबर-जेट अभी सँभला ही था कि ममगाईं ने गोले दाग दिए। सेबर-जेट ने भागने की कोशिश में फिर गोता लगाया। ममगाईं भी पीछे-पीछे पहुँचा। अब दोनों ही विमान जमीन से कुछ ही ऊँचाई पर रह गए। ममगाईं ने फिर गोले दागे। दुश्मन के सेबर-जेट में आग लग गई और नीचे गिर पड़ा।

उधर कुक दो सेबर-जेटों के पीछे पड़ा हुआ था और एक सेबर- जेट कुक के ठीक पीछे आने ही वाला था। कुक उसकी परवाह न कर अगले वाले सेबर-जेटों का पीछा करता रहा और गोले दागता रहा। एक सेबर-जेट पर अनेक गोले लग चुके थे। वह हवा में ही डगमगाया, जला और जलता हुआ नीचे आ गिरा।

"हमारी तोपें दुश्मन पर गोले बरसा रही हैं," नीचे हवाई- अड्डे से कुक और ममगाई को सूचना दी गई। लेकिन यह सुनने की भी फुरसत उन्हें नहीं थी। उनका समस्त घ्यान तो सिर्फ एक ही बात पर एकाग्र था, और वह था- 'दुश्मन के अधिक-से-अधिक विमानों को मार गिराना, चाहे अपनी जान ही क्यों न चली जाए।'

कुक और ममगाई एक-एक विमान गिरा ही चुके थे। अब ममगाईं दूसरे विमान को मार गिराने के फेर में था। उधर कुक भी

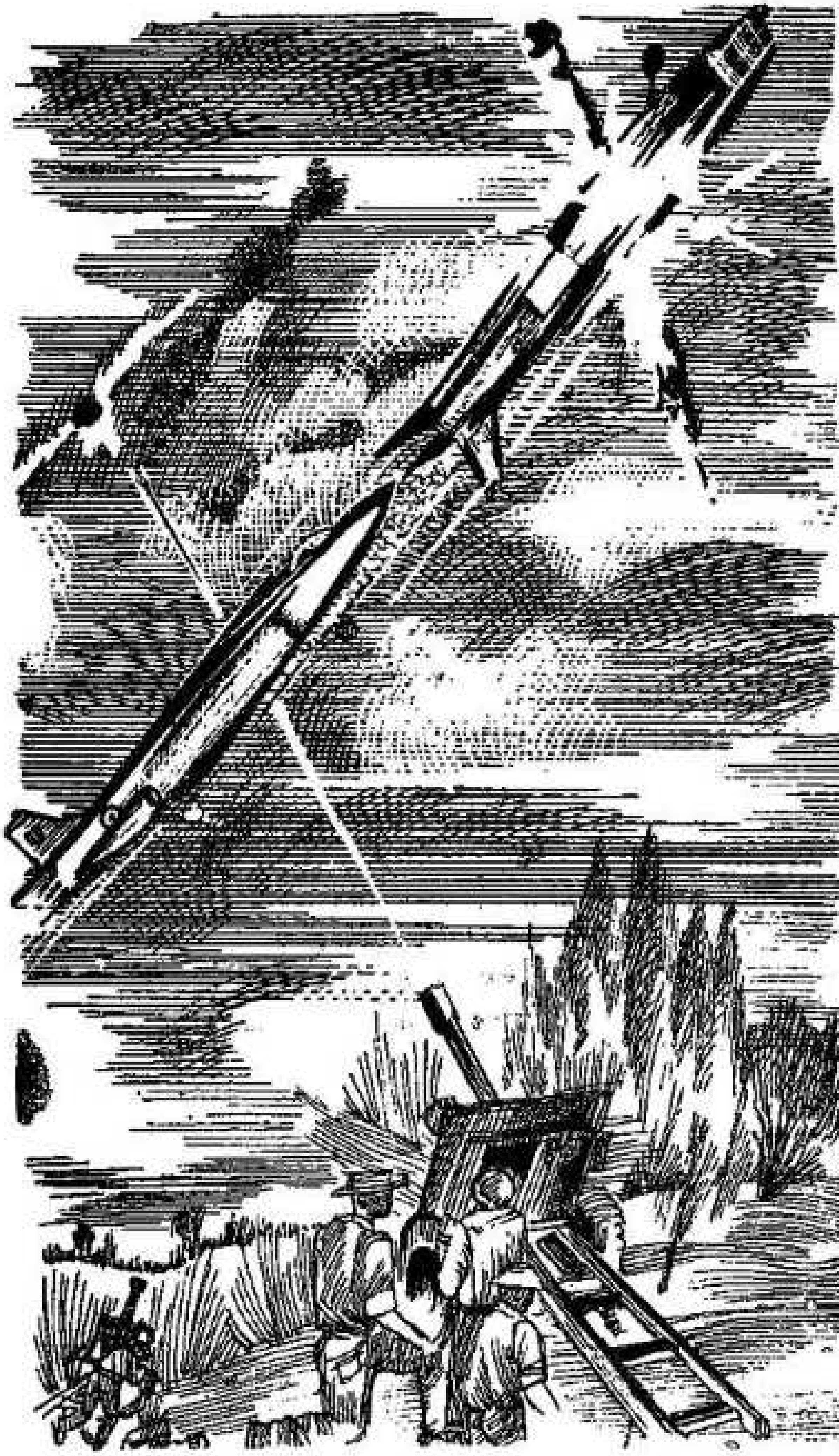

एक अन्य विमान को गिराने के लिए बढ़ रहा था। अब दुश्मन के केवल चार विमान रह गए थे।

ममगाई को फिर मौका मिल गया। एक सेबर-जेट उसके काफी निकट आ गया था। ममगाई ने बटन दबा दिया- धाँय-धाँय। सेबर-जेट की टंकी से पेट्रोल की घार छूट पङी और उसमें आग लग गई। सेबर-जेट का चालक घबराया। मौत आँखों के आगे नाचने लगी। वह अपने इलाके की ओर भाग खङा हुआ। हवाई अड्डे से कर्मचारियों ने देखा - सेबर-जेट भाग रहा है और अपने पीछे धुएँ का गुवार छोङता जा रहा है। कुछ ही दूर जाकर वह डगमगाता हुआ नीचे आ गिरा।

उसकी यह हालत शायद उसके अन्य तीन साथियों ने भी देख ली थी। वे कतराने लगे और भागने के लिए रास्ता ढूंढ़ने लगे। इधर ममगाई एक पर गोला छोङकर सँभल ही रहा था कि उधर कुक एक अन्य सेबर-जेट के पीछे पङ गया।

जब वह मार की रेंज के अन्दर आ गया, तब कुक ने जोर से बटन दबाया लेकिन यह क्या? कोई गोला नहीं छूटा। वह अपने सभी गोले पहले ही दुश्मन पर इस्तेमाल कर चुका था। लेकिन उसने दुश्मन को इसका पता न लगने दिया और पीछा करता रहा।

दुश्मन के तीनों चालक अब तक बुरी तरह हाँफ चुके थे। अब तो केवल सवाल था- बच निकलने का। और उनके सौभाग्य से कुक के गोले खत्म हो चुके थे।

तीनों विमान बचकर भाग निकलने के लिए आपस में होङ ले रहे थे। एक विमान को मौका मिल गया। वह भाग खङा हुआ। दूसरे ने भी मौका का लाभ उठाया और तीसरा भी पीछे नहीं रहा।

और प्रेसिडेण्ट अयूब ने अपने ऐसे ही बहादुर हवाबाजों को ध्यान में रखकर ६ सितम्बर को अपने रेडियो संदेश में कहा था- "भारत को अभी पता नहीं कि उनका पाला किन लोगों से पङा है।"

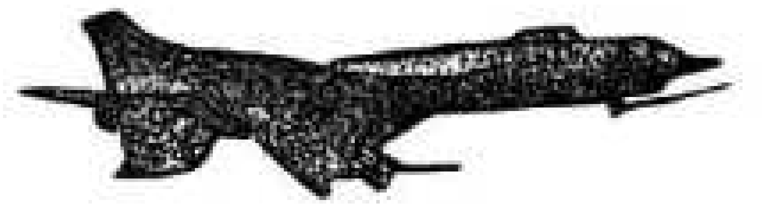

कसूर की ओर

शाम के छः बज रहे हैं। वृक्षों की नन्हीं-नन्हीं पत्तियों पर ढलते हुए सूर्य की किरणें पड़ रही हैं। अब दिन-भर के काम के बाद घर लौटने का समय हो गया है। दिन-भर की थकान मिटाने के लिए अब आराम का वक्त है।

लेकिन नहीं आज की शाम आराम करने के लिए नहीं है। अभी थकान मिटाने का समय नहीं आया है। अभी तो दुश्मन सिर पर है। अभी उसका मुकाबला करना है और तब तक करना है, जब तक वह घुटने न टेक दे।

पाकिस्तान ने ५ अगस्त, १९६५ से अपने सैनिक चोरी-छिपे जम्मू-कश्मीर में भेजने शुरू कर दिए थे। २५ अगस्त से घमासान युद्ध छिड़ गया था और १ सितम्बर से उसने हवाई-हमला भी शुरू कर दिया था। आज ८ सितम्बर का दिन है। अब तक पाकिस्तान अमृतसर, अम्बाला, श्रीनगर, पटियाला, पठानकोट आदि अनेक शहरों पर बम बरसाने का प्रयत्न कर चुका है।

इसीलिए आज की शाम आराम करने की नहीं है। अभी दुश्मन के वे सभी अड्डे खत्म करने हैं, जहाँ से वह हमारे देश पर बम बरसाने के लिए विमान भेज रहा है, जहाँ से उसकी सेना आ रही है, टैंक आ रहे हैं।

और इसीलिए आज शाम ६ बजे भारतीय वायुसेना के चार हण्टर विमान रायविण्ड-खेमकरण क्षेत्र की ओर रवाना हो गए हैं-

दुश्मन के पैटन टैंकों को नष्ट करने। रायविण्ड लाहौर-कराची रेल- लाइन के बीच बहुत महत्वपूर्ण रेलवेस्टेशन है।

चारों विमान दो-दो की कतार में चले जा रहे हैं। आगे हैं- फ्लाइट-लेफ्टिनेण्ट मेनन और फ्लाइट-लेफ्टिनेण्ट खुल्लर। पीछे हैं- फ्लाइट-लेफ्टिनेण्ट नागी और स्क्वाड्रन लीडर विश्नोई। चारों विमान जमीन से मुश्किल से १०० फुट ऊँचाई पर है। चारों ही सतर्क हैं और रेडियो-टेलीफोन से एक-दूसरे से सम्पर्क बनाए हुए हैं। इस दल का नेतृत्व फ्लाइट-लेफ्टिनेण्ट मेनन कर रहे हैं।

दुश्मन का इलाका श्रा चुका है। चारों सतर्क हैं और १०० फुट की ऊँचाई पर तेजी से बढ़े जा रहे हैं।

"सावधान !" मेनन ने रेडियो-टेलीफोन पर हिदायत दी, "स्टेशन से गाङी जा रही है। देखना कौन-सी गाङी है ?"

तब तक चारों विमान रायविण्ड स्टेशन के ऊपर पहुँच चुके थे। अभी वे गाङी की ओर देख ही रहे थे कि नीचे से विमान-भेदी तोपें गरज उठीं।

"बाएँ !" मेनन ने आदेश दिया।

चारों विमान पूरी रफ्तार से बाईं ओर ऊँचे मुङ गए। अब वे तोपों की मार से बाहर थे।

"मालगाङी लगती है," मेनन ने कहा, "अवश्य ही गोला-बारूद लेकर कसूर जा रही होगी। क्या तुम सब हमला करने के लिए तैयार हो ?"

"जी, हाँ," तीनों विमानों से उत्तर आया।

अब वे काफी ऊँचाई पर पहुँच चुके हैं और दो-दो की कतार

में आ गए हैं। "गाङी पर बगल से हमला करो !" मेनन ने आदेश दिया, "मैं बाएँ रहूँगा, फिर खुल्लर और नागी बीच में हमला करें; फिर विश्नोई दाईं ओर। तैयार!"

चारों विमान और ऊपर उठे, जिससे मुङकर अपना लक्ष्य साथ सकें और बारी-बारी से हमला कर सकें।

मेनन ने विमान घुमाया। धीमे-धीमे विमान चलाते हुए अपने लक्ष्य का अन्दाजा लगाया, फिर उन्होंने तेजी से गोता मारा और गाङी

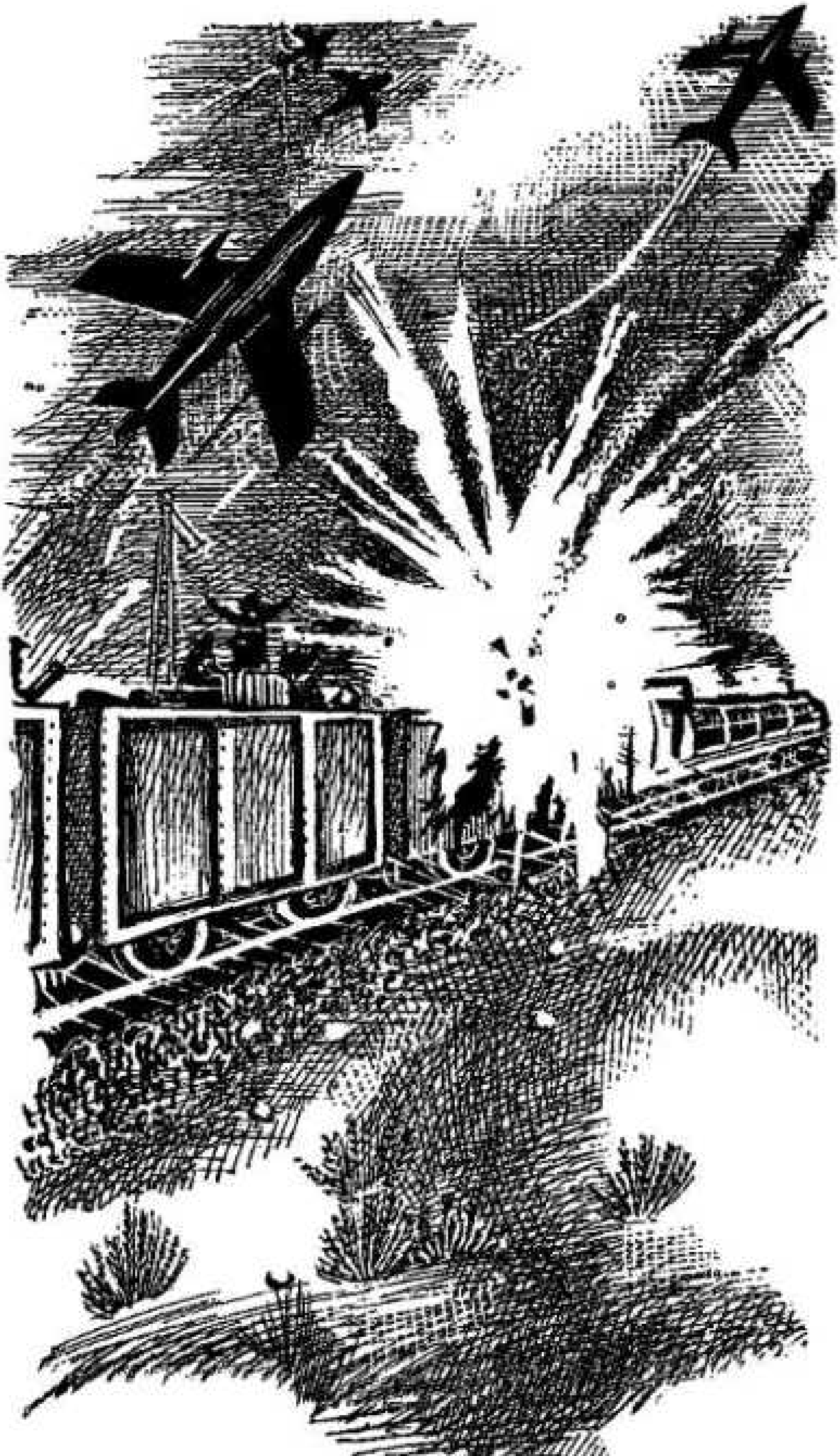

से ठीक १०० फुट ऊपर पहुँच कर खटाखट राकेट छोड दिए।

इसी समय मालगाडी से विमान-भेदी तोपगरज उठीं। लेकिन मेनन काफी आगे निकल चुके थे।

तभी खुल्लर और नागी पूरा गोता मारकर गाडी के बीच के भाग में पहुंच गए और खटाखट राकेट छोड कर आगे निकल गए। विमान-भेदी तोपें उनका भी कुछ न बिगाड सकीं।

विश्नोई पीछे रह गए थे। उन्होंने देख लिया था कि गाडी में आग भडक उठी है। वे भी गोता मारकर गाडी के दाएँ भाग पर राकेट छोडकर आगे बढ़े ही थे कि पूरी गाडी भयानक विस्फोट के साथ धू-धू कर जल उठी।

विश्नोई काफी आगे पहुँच गए। उन्होंने देखा मेनन वापस लौट रहे हैं।

"हम कामयाव हो गए हैं." विश्नोई ने रेडियो-टेलीफोन पर

कहा, "बधाई !" "मैं यही देखने वापस लौट रहा था," मेनन ने उत्तर दिया।

अब खुल्लर और नागी के विमान भी निकट आ गए। "गाडी में गोला-बारूद और पैट्रोल भरा था," विश्नोई ने कहा, "हमारे राकेट निशाने पर बैठे। पूरी गाडी में आग लग गई है।"

"हाँ, उससे उठने वाला धुआँ और लपटें दिखाई दे रही हैं." नागी ने कहा।

"यह गोला-बारूद अवश्य ही कसूर को भेजा जाता रहा होगा, मेनन बोला, "इसे नष्ट करना जरूरी था। अच्छा हुआ यह काम हमने

पूरा कर दिया। क्या अब अपने अड्डे पर लौटा जाए ?" "मेरे पास तो अभी तोप के गोले बचे हुए है," विश्नोई ने रेडियो-टेलीफोन पर ही उत्तर दिया।

"मेरी तोप के गोले भी अभी ज्यों-के-त्यों हैं", खुल्लर ने कहा, "और कुछ राकेट भी।" "गोले तो मेरे पास भी बचे हुए हैं," नागी बोले।

"राकेट और गोले मेरे पास भी बाकी हैं," मेनन ने निर्णय दिया, "तो लौटने से पहले दुश्मन पर इनका इस्तेमाल कर दिया जाए। इसी रेल-लाइन के ऊपर-ऊपर चला जाए, पूरब में कसूर की ओर।"

और फिर चारों हवाबाज अपने बचे-खुचे राकेट तथा गोले दुष्मन पर इस्तेमाल करने आगे बढ़ने लगे हैं। आगे-आगे मेनन तथा खुल्लर और पीछे नागी तथा विश्नोई।

"सावधान ! कसूर आ रहा है," मेनन ने रेडियो-टेलीफोन पर बताया, "धूल उङ रही है। दुश्मन अपने टैंक लेकर बढ़ रहा है। खुल्लर, तुम बाएँ टेंक देखो। मैं दाहिने देखता हूँ। बाकी नागी और विश्नोई देखेंगे।"

एक बार फिर चारों हण्टर-विमान बहुत ऊँचे उठ गए। लेकिन दुश्मन की नजर पङ गई है। टैंकों और विमान-भेदी तोपों का मुँह उनकी ओर हो गया है। गोलों की बौछार होने लगी है। चारों ह्वा- बाज इसकी चिन्ता न कर अपना लक्ष्य साध रहे हैं।

मेनन ने लम्बा गोता मारा और दाईं ओर के टैंकों के ५० फुट ऊपर पहुंचते ही उन्होंने खटाखट अपने सब राकेट छोङ दिए।

दुश्मन के गोले छूटते रहे, लेकिन मेनन साफ बच निकले। तभी खुल्लर ने भी गोता मारकर बाई ओर के टैंकों पर र। केट छोङे।

टैंकों के पीछे जो बख्तरबन्द गाड्यिाँ आ रहीं थीं, उन पर नागी और विश्नोई ने अपने बम बरसा दिए हैं।

अब तक खुल्लर का विमान मेनन के काफी निकट पहुँच गया। "मैंने अभी तोप इस्तेमाल नहीं की," मेनन ने कहा।

"मैंने भी," खुल्लर बोला।

"मैं फिर जा रहा हूँ, टैंकों के पीछे बस्तरबन्द गाड्यिों का कारवाँ है." मेनन ने कहा और अपना लक्ष्य साधने लगा। "मैं भी आ रहा हूँ." खुल्लर बोला।

"सावधान रहना!" मेनन ने कहा, "दुश्मन गोले बरसा रहा है।" अब खुल्लर भी लक्ष्य साधने लगा।

दुश्मन टैंकों, विमान-भेदी तोपों और आटोमैटिक गनों से गोलों की बौछार करता जा रहा है।

फिर भी दोनों हवाबाज दुश्मन पर अपने गोले खाली करने पर तुले हैं। मेनन तीन टैंक नष्ट कर चुके हैं। नागी और विश्नोई की

गोलाबारी से अनेक गाड़ियाँ धू-धू कर जल रही हैं।

मेनन ने एक गोतः मारा और बख्तरबन्द गाड़ियों के दो दलों पर अपने सब गोले खाली कर दिए। ३० गाड़ियाँ एक साथ जल उठीं और उनमें रखा गोला-बारूद भड्क उठा।

खुल्लर भी पीछे नहीं रहा। वह भी एक टैंक तोङ आया। लेकिन दोनों के विमान दुश्मन के गोलों से न बच सके। लौटकर जब वे अपने फारमेशन में आए, तब मेनन ने देखा कि उसकी पैट्रोल की बगली टंकी में छेद हो गया है और रफ्तार बताने वाली सुई भी नष्ट हो गई है।

"मेरी रफ्तार की सुई टूट गई है," मेनन ने रेडियो-टेलीफोन पर कहा, "पैट्रोल भी कम हो रहा है। मुझे रफ्तार बताते रहना !" "अच्छा," खुल्लर ने कहा, "लेकिन मेरे पैट्रोल की टंकी में भी छेद हो चुका है। नजाने मैं अड्डे पर पहुँच भी पाऊँगा या नहीं।"

"रफ्तार तेज कर दो !" मेनन ने कहा, "हम अब तक सफल रहे हैं, अड्डे तक भी जरूर पहुँच जाएँगे। बढ़ते जाओ।"

अब चारों विमान सीमा पार कर अपने इलाके में आ गए हैं। "हमें कुल कितना समय लगा होगा ?" मेनन ने पूछा। "केवल तीस मिनट," विश्नोई ने उत्तर दिया।

"क्या यह हम्मला केवल तीस मिनट का रहा ?" खुल्लर ने आश्चर्य से पूछा।

"दो हमले," मेनन ने उसे सुधारा।

"हाँ, हमारे दोनों हमलों का कुल समय तीस मिनट रहा," विश्नोई ने बताया, "बाकी समय उङान भरने में लगा।"

"तो हम रात के डिनर के लिए ठीक समय पर पहुँच जाएँगे," विश्नोई ने कहा।

"अवश्य," मेनन ने उत्तर दिया, "और आज का डिनर भी डबल होना चाहिए। डबल हमला किया था न ?" हण्टर-विमानों में चारों हवाबाजों के कहकहे गूंज उठे।

खेमकरण के सैन्य-व्यूह में

कल अपनी स्थल सेना को सहायता देने में हमारे हवाबाजों ने कमाल कर दिखाया था। रायविण्ड से खेमकरण की ओर जाने वाली मालगाङी को फ्लाइट-लेफ्टिनेण्ट मेनन और उसके साथियों ने हवाई हमले से नष्ट कर दिया था।

खेमकरण में दुश्मन ने अपना सबसे बढ़िया फस्ट आर्मडडिवीजन लगा रखा था। इस डिवीजन के साथ १५० टैंक थे। इसके अलावा बहुत-सी बख्तरबन्द गाङियाँ भी थीं। इन टैंकों, गाङियों तथा वहाँ लङने वाले पाकिस्तानी सैनिकों के लिए मालगाङियों तथा ट्रकों से रसद, गोला-बारूद, पैट्रोल आदि भेजा जा रहा था।

ऐसी ही एक मालगाङी रायविण्ड से कसूर की ओर जा रही थी। इस मालगाङी में गोला-बारूद तथा पैट्रोल भरा हुआ था। इस सामान को कसर से खेमकरण भेजा ज.ना था। कल फ्लाइट-लेफ्टिनेण्ट मेनन और उनके साथियों ने इस मालगाङी को अपने हवाई हमले से नष्ट कर दिया था। इससे दुश्मन के टैंकों के लिए गोला-बारूद और पैट्रोल नहीं पहुँच पाया।

आज ६ सितम्बर को भी सुबह से ही चार-चार भारतीय हवाबाजों को खेमकरण क्षेत्र में बमबारी करने के लिए भेजा जा रहा था। हमारे विमान सुबह दो बार खेमकरण पर हमला कर चुके थे और अब तीसरी बार जा रहे थे।

इस तीसरे दल का नेतृत्व स्क्वाड्रन-लीडर विश्नोई कर रहे थे। विश्नोई कल भी मेनन के साथ थे। परन्तु आज वे इस फारमेशन के नेता थे। बाकी तीन हवावाज थे- फ्लाइट-लेफ्टिनेण्ट अहूजा, फ्लाइट- लेफ्टिनेण्ट शमां और फ्लाइंग अफसर परूलकर।

विश्नोई सबसे आगे था। अहूजा उससे कुछ पीछे वाएँ था और उनके पीछे शर्मा तथा परूलकर लगभग ५०० गज दाहिनी ओर थे। चारों जमीन से केवल सौ गज ऊँचाई पर उडे जा रहे थे। विश्नोई को काफी दूर बाईं ओर धूल उडती दिखाई दी।

"सावधान !" विश्नोई ने रेडियो-टेलीफोन पर अपने साथियों को सतर्क किया, "हम दुश्मन के जमाव के निकट पहुँच रहे हैं। जमाव बाईं ओर है। अपना-अपना लक्ष्य साधने के लिए तैयार हो जाओ !"

"हम तैयार हैं," विश्नोई को रेडियो-टेलीफोन पर तीनों की आवाज सुनाई दी।

"दुश्मन गोले दाग सकता है, सावधान रहना !" विश्नोई ने चारों को फिर सतर्क किया।

चारों ने बिजली का बटन दबा दिया, जिससे बिजली-संचालन होता रहे और मौका आने पर राकेट छोडे जा सकें। फिर चारों ने अपनी तोपों की परीक्षा की। सब ठीक था। चारों दुश्मन के जमाव के काफी निकट पहुँच चुके थे।

नीचे सैकडों की संख्या में टैंक और बख्तरबन्द गाडियाँ थीं। इसलिए लक्ष्य साधने में कोई कठिनाई नहीं थी, लेकिन सबसे बडी दिक्कत यह थी कि दुश्मन की विमान-भेदी तोपों और टैंकों की मार से कैसे बचा जाए। विश्नोई और उसके साथियों के पहुँचते ही दुश्मन ने गोलों की बौछार शुरू कर दी थी।

विश्नोई ने देखा उसके बाईं ओर नीचे तीन टैंक चले जा रहे हैं-दो आगे और एक बीच में, कुछ पीछे। विश्नोई ने उन्हीं को अपना पहला लक्ष्य बनाया। वह अपने हण्टर को टैंकों से लगभग ४०० गज दूर ३०० फुट ऊँचाई पर ले गया। वहाँ से उसने लक्ष्य साधा और पूरी रफ्तार से गोता मारते हुए खटाखट आठ राकेट छोड दिए। विमान जमीन से केवल ५० फुट ऊँचाई पर रह गया था। तब विश्नोई

ने उसे तेजी से ऊपर उठाया और टैंकों को पार करता हुआ आगे निकल गया। काफी दूर जाने के बाद उसने मुड़कर देखा । तीनों टैंक धू-धू कर जल रहे थे। विश्नोई के चेहरे पर सफलता की मुस्कान फैल गई।

अपने लीडर की सफलता को देख, तीनों अन्य साथियों ने भी अपने लक्ष्य साधे और दुश्मन की भारी गोलाबारी के बावजूद टैंकों के- बिल्कुल निकट जाकर अपने राकेट बरसा दिए। आगे बढ़ने पर उन्होंने देखा कि सात और टैंक जल उठे हैं।

चारों के राकेट समाप्त हो गए थे, लेकिन गोले अभी ज्यों-के त्यों मौजूद थे।

"वापस लौटने से पहले हमें अपने गोले भी इस्तेमाल कर लेने चाहिए, क्या आप सब तैयार हैं?" विश्नोई ने रेडियो-टेलीफोन पर पूछा।

"हाँ, हम तैयार हैं," तीनों ने बारी-बारी से उत्तर दिया।

"तो अपने लक्ष्य साध लो, सावधान!" विश्नोई ने हिदायत दी। चारों अपने लक्ष्य साधने लगे। विश्नोई ने कुछ गाड़ियों को अपना लक्ष्य बनाया। उसने भारी गोला-बारी में ही फिर अपना विमान ऊँचा उठाया और तेजी से गोता मारते हुए गाड़ियों पर गोले दाग दिए। गाड़ियों में बारूद भरा था। गोले लगते ही गाड़ियाँ जल उठीं और उनमें भरा बारूद फट-फटकर दूसरी गाड़ियों को जलाने लगा।

अहूजा ने कुछ बख्तरबन्द गाड़ियों को अपना लक्ष्य बनाया और गोले दागे।

शर्मा और परूलकर ने सप्लाई ले जाने वाली गाड़ियों को लक्ष्य बनाया और उन्हें अपने गोलों से भून डाला।

यह सब कहना आसान है, लेकिन करना अत्यन्त कठिन है। विमान को नियंत्रण में रखना, दुश्मन के गोलों से बचना, अपना लक्ष्य साधना और फिर दुश्मन की भीषण गोलाबारी के बावजूद अपने लक्ष्य पर गोले बरसाना कोई हँसी-खेल नहीं है। सौभाग्य से ये चारों

हवाबाज़ यह सब करके बच निकले थे।

वे अपने सब राकेट तथा गोले दुश्मन पर बरसा चुके थे और अब दुश्मन के जमाव से बाहर निकल आए थे।

"हलो, नम्बर वन !" परूलकर ने रेडियो-टेलीफोन पर लीडर विश्नोई को आवाज दी, "मेरे दाहिने हाथ पर गोले का टुकड़ा लग गया है। खून बह रहा है।"

विश्नोई चिन्तित हो उठा। दाहिने हाथ से ही तो विमान चलाया जा सकता है और उतरते समय तो दोनों हाथ मजबूत होने चाहिए। फिर हवाई-युद्ध में भाग लेने का परूलकर का यह पहला मौका था।

"क्या तुम बाएँ हाथ से विमान चला सकते हो?" उसने पूछा। "

हाँ," परूलकर ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

"ठीक है, तुम बढ़ते रहो। विमान पर नियंत्रण रखो। मैं बेस को खबर करता हूँ," विश्नोई ने कहा। फिर उसने हवाई अड्डे से सम्पर्क स्थापित किया और हिदायत

दी, "परूलकर को चोट लग गई है। रन-वे के छोर पर एम्बुलेन्स-गाड़ी

तैयार रहे!"

"हलो नम्बर वन!" शर्मा ने रेडियो-टेलीफोन पर कहा।

"यस," विश्नोई ने उत्तर दिया, "क्या है?"

शर्मा कुछ क्षण चुप रहा, फिर बोला, "कुछ नहीं। परूलकर के बारे में ही पूछ रहा था।"

"वह ठीक है," विश्नोई ने उत्तर दिया, "परूलकर, तुम ठीक चल रहे हो न?"

"हाँ, मैं ठीक हूँ," परूलकर ने उत्तर दिया।

वास्तव में शर्मा के बिंग टैंक पर भी गोला लगा था और उससे काफी पैट्रोल बह निकला था। दूसरे टैंक में जो पैट्रोल था, उससे वह हवाई अड्डे तक पहुँच भी पाएगा या नहीं, इसमें संदेह था। यही वह विश्नोई को बताना चाहता था। लेकिन विश्नोई पहले ही परूलकर के बारे में चिन्तित था, अतः शर्मा ने उसे और अधिक चिन्तित करना ठीक नहीं समझा। इसीलिए उसने पहले तो बताना चाहा, लेकिन फिर चुप हो गया।

"हलो परूलकर, तुम ठीक हो ?" विश्नोई ने पूछा।

"हाँ, मैं ठीक हूँ," परूलकर ने उत्तर दिया।

हवाई अड्डा दिखाई देने लगा था। विश्नोई ने देखा -हवाई- पट्टी के अन्त में एम्बुलेंस गाङी खङी है। उसने संतोष की साँस ली।

हवाई अड्डे पहुँचने पर विश्नोई ने अपना विमान उतारा। टैक्सी-ट्रैक पर विमान खङा करते ही, वह उतरकर सीधे एम्बुलेंस-गाङी की ओर भागा।

फिर शर्मा ने अपना विमान उतारा। विमान के पहियों ने हवाई-पट्टी कुई। शर्मा ने संतोष की साँस ली और विमान को पट्टी से दौङाता हुआ टैक्सी-ट्रैक तक ले गया। टैक्सी-ट्रैक पहुँचते ही विमान अपने-आप रुक गया। उसका पूरा पैट्रोल खत्म हो चुका था। तब तक अहूजा भी पहुँच चुका था और अब तीनों एम्बुलेंस के

पास खङे होकर बेसब्री से परूलकर की प्रतीक्षा कर रहे थे। परूलकर ने धीरे-धीरे विमान उतारा। विमान के पहिए हवाई- पट्टी पर लगे। उसके उतरने में कहीं कोई गङबङ नहीं थी। सबने

संतोष की साँस ली। लेकिन परूलकर को अभी दाहिने हाथ से पूरे जोर से ब्रेक लगाकर विमान रोकना था। सभी साँस रोककर देखने लगे। सबके दिल धङक रहे थे। सबको आशा थी कि परूलकर हव। ई-पट्टी के अन्त में किसी प्रकार विमान रोक लेगा और तब एम्बुलेंस बुलाएगा।

लेकिन सभी आश्चर्य से देखते रहे कि परूलकर ने विमान हवाई-पट्टी से मोङकर टैक्सी-ट्रैक की ओर कर दिया है और उसे ठीक जगह पर खङा कर दिया है। यही नहीं, बल्कि वह विमान से उतर कर वहीं आ रहा है।

"परूलकर, तुम ठीक तो हो न ?" विश्नोई ने उसकी ओर दौङते हुए पूछा। अन्य साथी भी उधर बढ़े।

अब परूलकर को अपनी बाँह की याद आई। उसकी बाँह में गोली अन्दर तक धंस गई थी, मांस का लोथङा लटक गया था और हड्डी दिखाई दे रही थी। उसकी बुशर्ट की बाँह खून से लथपथ थी। इस हालत में भी वह नहीं घबराया; खून काफी बह गया था, फिर भी वह मूच्छित नहीं हुआ; पीङा भी कम नहीं रही होगी, फिर भी वह

उसी घायल बाँह से विमान चलाता हुआ ले आया था। सभी आश्चर्य में थे।

परूलकरको तुरन्त अस्पताल पहुँचाया गया। डाक्टर ने नौ टाँके लगाए और उसे आराम करने के लिए बेड पर लिटा दिया।

विश्नोई तथा उसके साथी कमरे में बैठे आज के इस हवाई- युद्ध के ही बारे में बातें कर रहे थे। अभी उन्हें इस युद्ध से लौटे केवल तीन घण्टे हुए थे। तभी सबने देखा - परूलकर चला आ रहा है।

"अरे, तुम अस्पताल से चले आए ?" निश्नोई ने आश्चर्य से उसे पूछा।

"सर, मैं ठीक हूँ," परूलकर ने उत्तर दिया, "अब फिर आपके साथ चलने को तैयार हूँ।"

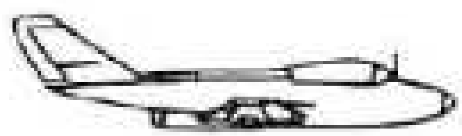

दुश्मन के इलाके से

"हलो, हलो लीडर," चिनाय अपने विमान को ऊँचा उठाते हुए जोर से रेडियो-टेलीफोन पर बोला, "मेरे विमान पर गोला लग गया है। कॉकपिट में धुआँ भर रहा है और आग लगने की संकेत-बत्ती जल गई है।"

"हैड-आउट स्टीयर ०६०," स्क्वाड्रन-लीडर गिल ने फौरन हिदायत दी, "बाईं ओर मुड़ो। इस क्षेत्र से बाहर निकल जाओ।"

तब तक विमान का बिजली-यंत्र बन्द हो चुका था और रेडियो- टेलीफोन सम्पर्क भी कट गया था। कॉकपिट में इतना धुआँ भर गया था कि चिनाय की आँखें मिचमिचाने लगीं और साँस तक लेना मुश्किल हो गया। चिनाय ने अपने विमान का ऊपरी हिस्सा खोल दिया । धुआँ बाहर निकलने लगा। तब उसने गौर से संकेत-यंत्रों की ओर देखा। उसने देखा कि उसका विमान तीन हजार फुट की ऊँचाई पर है और विमान की रफ्तार लगभग बन्द हो गई है।

चिनाय ने गहरी साँस ली। अब कोई रास्ता नहीं रह गया था। थोड़ी ही देर में उसका विमान जमीन पर गिरकर चकनाचूर हो जाएगा ।

'चिनाय, अब तुम्हारा विमान बच नहीं सकता,' उसने मन-ही- मन अपने से कहा, 'अब तुम भी गए ।'

लेकिन यह सोचते-सोचते चिनाय ने विमान से कूदने के लिए जोर से इजेक्शन-लीवर खींचा। लीवर खींचते ही वह मय सीट के

उछलकर विमान के बाहर आ गया। एक, दो, तीन दस उसने पेट के सामने लगा बटन दबाया। सीट नीचे गिर गई। फिर उसने दूसरा बटन दबाकर तत्काल पैराशूट खोल दिया।

एक ओर से दनादन गोलियाँ चल रही थीं, तोपों की गरजने की आवाज सुनाई दे रही थी, और चिनाय असहाय प्राणी की तरह पैराशूट से दुश्मन के इलाके में उतर रहा था। उसके सौभाग्य से गोलियाँ छोड़ने वाले काफी दूर थे। वह ऊँची-ऊची घास के बीच में गिरा।

उसने जल्दी-जल्दी पैराशूट के फीते खोले और घास में दुबकता हुआ भागा। "सूरज ढल रहा है," चिनाय सोचता जा रहा था, "वह मेरे

बाईं ओर है। इसके माने हैं कि मैं उत्तर की ओर भाग रहा हूँ।" कुछ दूर इसी तरह भागने के बाद चिनाय एक जगह बैठ गया। गोलियों की आवाज अब काफी दूर हो गई थी।

फ्लाइंग अफसर दारा फिरोज चिनाय के लिए अपने जीवन का यह अनोखा अनुभव था। हैदराबाद का यह युवक अभी तीन साल पहले भारतीय वायुसेना में भरती हुआ था। उत्साह उसमें कूट-कूट कर भरा था। वह कुछ कर दिखाने के लिए उत्सुक रहता था। आज दस सितम्बर को वह एक बार पहले भी अपने मिस्टीयर विमान से दुश्मन के इलाके में चक्कर काट कर आ चुका था।

अब वह फिर दूसरी बार दो अन्य विमानों के साथ दुश्मन के इलाके में बम बरसाने गया था। इन तीनों विमानों का नेतृत्व स्क्वाड्रन-लीडर टी० पी० एस० गिल कर रहे थे।

दुश्मन के इलाके में ये मिस्टीयर-विमान अपने लक्ष्य की जाँच करने पचास फुट नीचे तक आये। तभी दुश्मन की विमान-भेदी तोपें गरज उठीं। विनाय को अपने विमान में एक धक्का-सा महसूस हुआ। वह समझ गया कि उसके विमान पर दुश्मन का गोला लग गया है। तब उसने अपने लीडर को सूचित किया। फिर वह विमान से कूद पड़ा और अब अपने को दुश्मन की गोलियों तथा नजरों से बचाता हुआ अपने इलाके में पहुँचने की कोशिश कर रहा था।

घास के बीच में बैठे-बैठे उसने सोचा, 'मेरे पास बहुत-से गुप्त कागज हैं। इन्हें जला देना चाहिए। कहीं दुश्मन के हाथ न लग जाएँ।'

चारों ओर सुनसान था । गोलियों की आवाज बहुत दूर से आ रही थी। अतः चिनाय ने निश्चिन्त होकर अपने सभी कागजात निकाले और सिगरेट-लाइटर जलाकर उनमें आग लगा दी। नक्शा उसने अपनी जेब में रख लिया।

कागजों पर आग का भभकना था कि धाँय-धाँय गोलियाँ चलने लगीं।

'तो दुश्मन इधर भी मौजूद है,' चिनाय ने सोचा और अपने भारी कपडे वहीं छोड्कर भागा।

आगे उसे एक गाँव दिखाई दिया। वह उससे दूर ही रहा। लगभग एक घण्टे तक वह दौड्ता रहा। यकायक उसके सामने एक आदमी आ टपका। चिनाय लपककर घास के अन्दर छुप गया। इस बार फिर किस्मत ने उसका साथ दिया। वह आदमी चिनाय को नहीं देख पाया था।

'नहीं, मुझे इस तरह सूरज की रोशनी में भागना नहीं चाहिए, चिनाय ने उस आदमी के जाने के बाद सन्तोष की साँस लेते हुए सोचा, 'मुझे अँधेरा होने तक रुकना चाहिए।'

सूरज ढला। पृथ्वी पर रात्रि का साम्राज्य छाने लगा। चाँद निकल आया।

'अब भी मैं चाँद की रोशनी में दिखाई दे सकता हूँ,' चिनाय ने सोचा और इधर-उधर देखा।

रास्ते के किनारे उसे कीचङ दिखाई दिया। उसने उसे अपने हाथों और मुँह में मल दिया। उसकी वर्दी में जितनी चकमने वाली चीज थीं, वे सब उसने निकाल डालीं।

'मुझे चाँद की ही ओर भागना चाहिए,' उसने सोचा, 'इससे में पूरब की ओर जाऊँगा।'

यह सोचता हुआ वह चाँद की ओर मुँह करके भागने लगा। पाँच घण्टे तक वह नदी-नाले, खेत-खलिहान, ऊबङ-खाबङ जमीन पार करता हुआ लगातार दौड्ता रहा। तब कहीं उसे सामने पक्की सड्क

दिखाई दी। उसकी साँस फूल रही थी और प्यास के मारे गला सूख रहा था।

'यह सड्क अवश्य ही अमृतसर जाती होगी। इतना दौड्ने के बाद मुझे अमृतसर जाने वाली सड्क ही मिलनी चाहिए,' चिनाय ने अनुमान लगाया और सड्क के किनारे-किनारे अपने को बचाता हुआ चलने लगा।

'अहा ! अपनी प्यास तो बुझा लूं,' चिनाय की आँखें पास ही कुआँ देखकर खुशी से चमक उठीं। वह लपककर कुएँ के पास गया। उसने पानी निकाला और एक ही साँस में सेरों पानी पी गया।

अब उसे महसूस हुआ कि वह कितना थक गया है। वह कुएँ की जगत पर धप-से बैठ गया और उसने दीवार से पीठ लगाकर पैर फैला दिए। लेकिन वह अभी कुछ ही देर बैठा रहा होगा कि उसे सड्क के दूसरी ओर से आवाजें सुनाई दीं। उसका खून सूख गया। वह सतर्क होकर आवाज सुनने लगा।

'मैं' पाँच घण्टे तक लगातार दौड्ता रहा हूँ। इस हिसाब से मुझे अब अपने इलाके में होना चाहिए' चिनाय ने सोचा और गौर से सड्क से आने वाली आवाजें सुनने लगा।

'अरे ! ये तो दक्षिण-भारत की भाषा बोल रहे हैं। ये पाकि- स्तानी तो हो ही नहीं सकते,' चिनाय उनकी आवाज सुनकर खुशी से उछल पड्ा और उनकी ओर बढ़ा। सामने ही कुछ गाड्यिाँ भी थीं। सैनिकों ने चिनाय को आते देखा तो सतर्क हो गये।

"मैं फ्लाइंग अफसर चिनाय हूँ," चिनाय ने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाते हुए चिल्लाकर कहा, "मुझे अपने अफसर के पास ले चलो।"

सैनिकों को उस पर विश्वास नहीं हुआ। युद्ध के जमाने में कैसे कोई विश्वास करे, खास तौर पर तब, जबकि दुश्मन अपने विमानों पर हमारे निशान लगा देता था और अपने घुसपठियों को हमारे सैनिकों की वर्दी पहनाकर भेजता था।

सैनिक दो घण्टे तक चिनाय से बहस करते रहे। तब कहीं जाकर उन्हें यकीन आया। तब सैनिक तत्काल उसके लिये कुछ खाना

और पानी लाए।

चिनाय ने भूखे भेड़िये की तरह खाना खाया और डटकर पानी पिया। सैनिकों ने उसे ब्रिग्रेड हैडक्वार्टर ले जाने के लिए जीप में बिठाया। दस घण्टे की थकान, दौड़भाग और परेशानी चिनाय पर हाबी हो गई। वह जीप में बैठते ही खरटि भरने लगा।

तड़के तीन बजे उसे उठाया गया। तब उसे पता चला कि वह अमृतसर के एयर फोर्स स्टेशन पहुँच गया है।

अमृतसर से फ्लाइंग अफसर चिनाय को अपने हवाई अड्डे आदमपुर पहुँचा दिया गया। और उसके दूसरे दिन से ही वह फिर मिस्टीयर-विमान के कॉकपिट में बैठकर दुश्मन के इलाके में बमबारी करने के लिए उड़ानें भरने लगा।

बलिदान की परम्परा में

वह पहले भी सरगोधा के ऊपर उड़ान भर चुका था। उसने सरगोधा वीर चकभुमरा हवाई अड्डों पर पहले भी बम बरसाए थे, लेकिन वह पूरी तरह सफल नहीं हो पाया था।

"सरगोधा हवाई अड्डे और उसके राडार को तोड़ना ही होगा," वह सोचने लगा, "मेरे अलावा इस काम को और कौन हवाबाज ज्यादा अच्छी तरह कर सकता है ? मैं उस जमीन के चप्पे-चप्पे को जानता हूँ। यह काम मुझे ही करना होगा। मैं आज सरगोधा हवाई अड्डा तोड़कर ही लौटूंगा, वरना..."

वह सोचता जा रहा था और सरगोधा की ओर विमान बढ़ाता जा रहा था। उसके साथ उसके तीन अन्य साथी भी अपने-अपने विमान उड़ाए जा रहे थे।

उसके युवक मन को यह बहुत खल रहा था कि बार-बार प्रयत्न करने के बाद भी वह और उसके साथी सरगोधा के राडार और हवाई अड्डे को नष्ट क्यों नहीं कर पा रहे हैं।

चारों विमान दो-दो की पंक्ति में बढ़ते जा रहे थे। स्क्वाड्रन लीडर नरेन्द्रकुमार मलिक के विचार विमान की रफ्तार से भी अधिक तेजी से बढ़ रहे थे- सरगोधा हवाई अड्डा राडार सरगोधा।

लाहौर से लगभग सौ मील दूर सरगोधा का हवाई अड्डा करोड़ों रुपए की लागत से बनाया गया था। उसे बनाने में पाकिस्तान को सिएटो और सेण्टो ने दिल खोलकर मदद दी थी।

वहाँ जो राडार लगाया गया था वह दुनिया के सबसे बढ़िया राडारों में माना जाता था। यह राडार मीलों दूर से आने वाले विमान का संकेत पकङ लेता था और बता देता था कि विमान कितनी दूर है। इससे हवाई अड्डे के कर्मचारी सतर्क हो जाते थे और आने वाले विमान का मुकाबला करने के लिए अपने सेबर-जेट तथा स्टार फाइटर विमान भेज देते थे। विमान-भेदी तोपें तैयार कर दी जाती थीं और रक्षा का पूरा प्रबन्ध कर दिया जाता था।

यही कारण था कि भारतीय विमान बार-बार प्रयत्न करने पर भी सरगोधा पर सफलतापूर्वक बमबारी नहीं कर पाये थे।

यह बात स्क्वाड्रन लीडर नरेन्द्र को बहुत खल रही थी। वह सोचता जा रहा था कि आज वह ऐसा कौन-सा तरीका अपनाये, जिससे वह सरगोधा के हवाई अड्डे और राडार को नष्ट कर सके।

उसने ठान लिया था कि आज वह अवश्य ही बम बरसाकर आएगा, चाहे कुछ क्यों न हो जाए।

वैसे स्क्वाड्रन लीडर नरेन्द्र का सरगोधा से बहुत लगाव रह चुका था। वह उसी इलाके में पैदा हुआ था और वहीं उसका बचपन बीता। वहीं की मिट्टी में वह खेला-कूदा और बङा हुआ। आरम्भिक शिक्षा उसने वहीं प्राप्त की।

कितने प्यारे दिन थे वे ! वे मासूम दिन ! राजनीति, कटुता, ईर्ष्या, दम्भ और अहंकार से दूर बहुत दूर। केवल खेल-कूद और पढ़ाई। दुनिया में क्या हो रहा है, इससे कोई मतलब नहीं।

लेकिन दुनिया में जो कुछ हो रहा है, उससे मतलब हो या न हो, उसका असर पङता है।

१३-१४ वर्ष के किशोर नरेन्द्र पर भी इसका असर पङा। उसी पर नहीं, बल्कि उसके परिवार पर भी, उसके देश पर भी।

हिन्दुस्तान दो खण्डों में बँटा- एक भारत बना और दूसरा पाकिस्तान। बँटवारे के उस अंधङ में वह भी अपने परिवार के साथ भारत चला आया। उसका प्यारा सरगोधा पीछे छूट गया, बहुत पीछे - पाकिस्तान में।

अब वह बत्तीस वर्ष का हो चुका था और भारतीय वायुसेना में

स्क्वाड्रन-लीडर था।

पाकिस्तान ने भारत पर हमला कर दिया था। भारत के बहादुर पाकिस्तानी हमलावरों का मुकाबला कर रहे थे और वायुसेना के बहादुर हवाबाज़ पाकिस्तान के उन हवाई अड्डों का सफाया कर रहे थे, जहाँ से उसके विमान भारत पर बम बरसाने के लिए उङकर आते थे।

इन अड्डों में सबसे मजबूत अड्डा सरगोधा का था- आधुनिकतम यन्त्रों, राडार और विमानों से सुसज्नित। हवाई अड्डा कंकरीट का बना था और राडार आने वाले विमानों का संकेत पहले ही दे देता था। भारतीय वायुसेना के हवाबाजों ने उसे तोङने का प्रयत्न किया, लेकिन वे अधिक सफल नहीं हुए।

इसीलिए आज स्क्वाड्रन-लीडर नरेन्द्र ने ठान ली, "मैं आज सरगोधा अवश्य ही नष्ट करके आऊँगा।"

वही सरगोधा, जहाँ उसका बचपन बीता था। 'लेकिन नहीं, अब सरगोधा मेरा नहीं है,' वह सोचने लगा, 'अब वह दुश्मन का सबसे मजबूद हवाई अड्डा है। उसे नष्ट करना ही होगा। अपने देश की खातिर सरगोधे की जमीन पर बम बरसाने होंगे।'

चारों विमान भारतीय सीमा पार करके सरगोधा के निकट पहुँच गए थे। हवाई अड्डा अब कुछ ही मील दूर रह गया था।

धाँय धाँय विमान-भेदी तोपों से गोले बरसने लगे। चारों विमान तेजी से एक ओर मुङ गए।

उन्होंने एक चक्कर लगाकर फिर सरगोधा की ओर विमान बढ़ाए। फिर धाँय... धाँय तोपें गरज उठीं। विमान फिर मुङ गए। तभी दुश्मन के चार विमान मुकाबला करने चले आए। चार सेबर-जेट विमानः। सरगोधा की ओर मुङना असम्भव प्राय हो गया। दुश्मन के विमान पीछा करने लगे। नीचे से तोपें गोला बरसाने लगीं।

'तो क्या यह अभियान असफल रहेगा?' नरेन्द्र ने सोचा, 'नहीं, चाहे कुछ हो जाय, मैं अवश्य ही बम बरसाकर आऊँगा।'

और उसने तेजी से विमान को एक गोता दिया और काफी नीचे पहुँचकर उसे फिर सरगोधा की ओर मोङ दिया। अब उसका

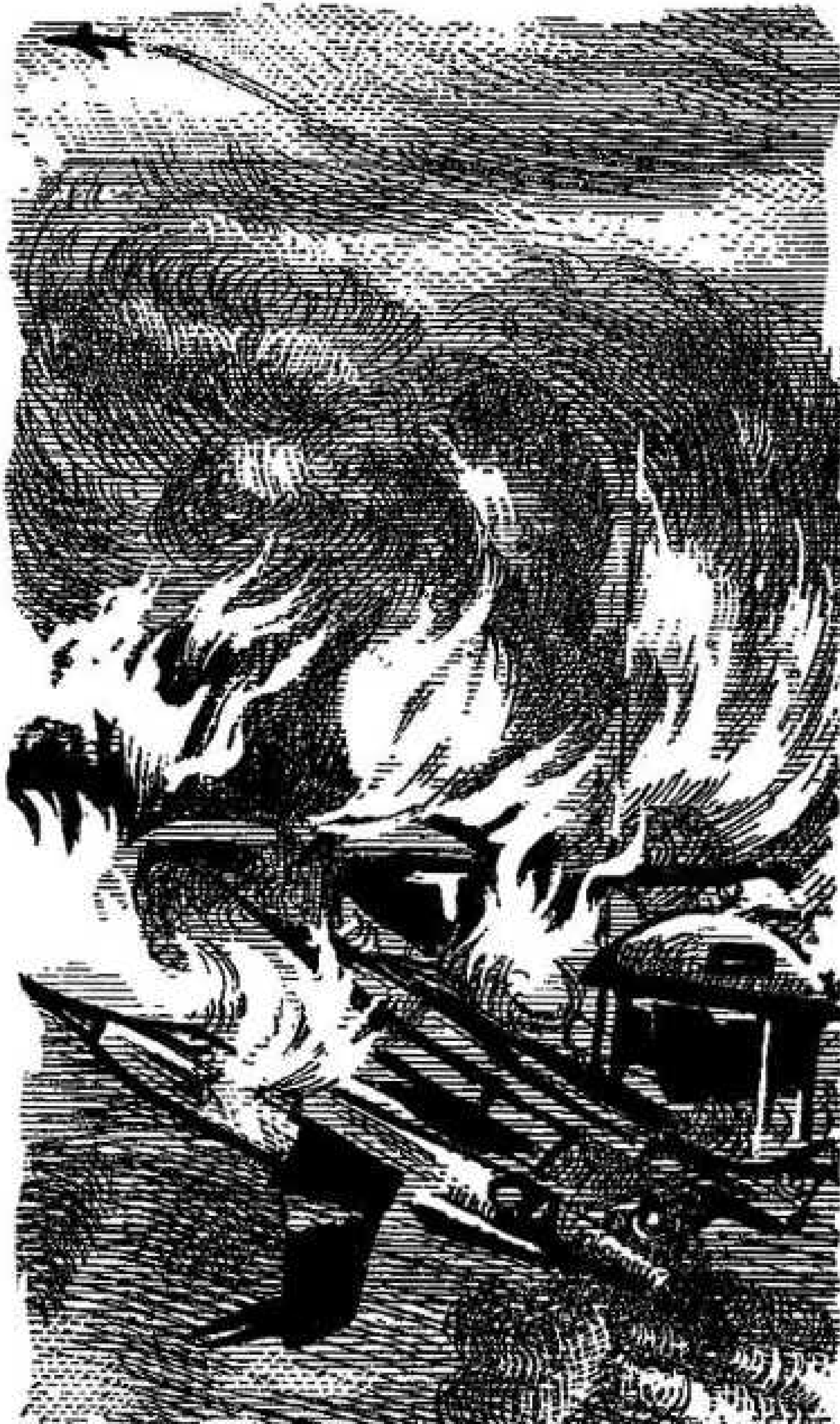

विमान जमीन से मुश्किल से ३०० फुट ऊँचाई पर था।

'ठीक है, अब इतनी नीचाई पर राडार मेरे विमान के संकेत को नहीं पकङ पाएगा,' उसने सोचा और नीचे की ओर देखा, 'आह ! यही वह जमीन है। कितनी जानी-पहचानी ! लेकिन आज यह दुश्मन की जमीन है। यहाँ से सेबर-जेट और स्टार फाइटर विमान उङकर भारत जाते हैं और वहाँ बम बरसाते हैं। आज मैं इस जमीन को इस लायक नहीं रहने दूंगा कि यहाँ से विमान उङ सकें।' वह बढ़ता चला गया, हवाई अड्डे की ओर।

धाँय धाँय धाँय ! विमान-भेदी तोपें गोले बरसाने लगीं, लेकिन वह इनकी परवाह किये बिना बढ़ता चला गया। बस, यही है हवाई अड्डा। बस, एक मिनट और...

विमान हवाई अड्डे के ऊपर पहुँचा। उसने जल्दी-जल्दी बम बरसा दिये और आगे बढ़ गया।

पूरा हवाई अड्डा काँप उठा। गर्द और धुएँ का गुबार फल गया। चारों ओर अंधकार, चारों ओर धुआँ और गर्दें।

लेकिन उसका विमान भी धुआँ देने लगा था। कॉकपिट पर हल्का-हल्का धुआँ आने लगा था।

'क्या राडार नष्ट हो गया होगा,' उसने सोचा और एक बार फिर हवाई अड्डे की ओर विमान मोङ दिया। उसने नीचे देखा- राडार ज्यों-का-त्यों खङा था। वह और आगे बढ़ा और चक्कर लगाते हुए राडार के ठीक ऊपर पहुँच गया।

खटखट उसने बम गिरा दिए। राडार काँपा और उसका एक भाग टुकङे-टुकङे हो गया।

नरेन्द्र मुस्करा उठा। वह जिस काम के लिए आया था, वह पूरा हो गया। उसने पूरी तेजी से विमान को ऊपर की ओर उठाया। विमान उठा, उसने उसे भारत की ओर मोङा और रफ्तार तेज कर दी। विमान काफी चोटें खा चुका था और उससे धुआँ निकल रहा था। वह विमान को जल्दी-से-जल्दी अपने हवाई अड्डे पर पहुँचा देना चाहता था। 1

उसने सीमा पार की और र। हत की साँस ली।

अब तक उसके दिमाग में केवल एक ही बात थी- सरगोधा हवाई अड्डा नष्ट करना। इसमें वह काफी सफल हो चुका था। अब उसे काफी कमजोरी महसूस हो रही थी।

उसने कॉकपिट में थोड़ा उठकर आराम से बैठने का प्रयत्न किया। उफ!

उसे कमर में भयानक दर्द मालूम दिया। उसने बाएँ हाथ की हथेली को सीट पर रखकर उसके सहारे थोड़ा मुड़ना चाहा। हथेली गीली हो गई।

उसने कॉकपिट के नीचे से उठने वाले धुएँ में गौर से हथेली देखी। वह खून से लथपथ थी। अब उसे अपना ध्यान आया। विमान के साथ-साथ वह भी

चोटें खा चुका था और खून बह निकला था।

'कोई बात नहीं, मैं अपना कर्त्तव्य पूरा कर चुका हूँ। अब मुझे कोई चिन्ता नहीं,' उसने सोचा और विमान अडडे की ओर बढ़ाया।

हवाई अड्डा सामने था। उसे उतरने का सिगनल मिला। उसके

साथियों को पता था कि वह सरगोधा पर बम बरसा चुका है।

'यह है, मेरी धरती, मेरी मातृभूमि उसने विमान को नीचे किया और रफ्तार धीमी की। धीरे-धीरे

विमान ने हवाई-पट्टी पकड़ी, कुछ दूर तक भागकर खड़ा हो गया। स्क्वाड्रन-लीडर नरेन्द्र ने एक बार अपने पूरे बदन को झकझोरा और गहरी साँस ली। विमान के दरबाजे के निकट उसके साथी आ

गये-उसे बधाई देने।

उसने उनकी ओर देखा और दोनों हाथों से सीट का सहारा लेकर खड़ा हुआ। धीमे-धीमे वह नीचे उतरा।

...और इससे पहले कि उसके साथी उससे हाथ मिलाएँ और उसे बधाई दें, वह धड़ाम से नीचे गिर पड़ा।

साथियों ने देखा सरगोधा के हवाई अड्डे तथा राडार को मिट्टी में मिलाने वाला स्क्वाड्रन-लीडर नरेन्द्र अपने देश की मिट्टी में पर रखते ही, हमेशा के लिए उस पर सो गया।

दोपहर के बाद

हैंगर में अब तक जो हलचल थी, वह शान्त हो गई। अब तक विमानों के शोरगुल से हैंगर गूंज रहा था। अब वहाँ सुनसान था और दोनों सहायक अपने ग्राउण्ड-अफसर के निकट आ गए थे।

हैंगर हवाई अड्डे का वह स्थान होता है, जहाँ विमान रखे जाते हैं । अभी-अभी वहाँ से बारी-बारी करके चार नेट-विमान भेजे गए थे । हवाबाजों, ग्राउण्ड-अफसर तथा सहायकों की दौड़-धूप और विमानों के स्टार्ट होने तथा हवाई पट्टी तक जाने से हैंगर में काफी हलचल थी । विमानों के जाने के बाद वहाँ शान्ति छा गई थी ।

दिन के दो बजने वाले थे और राडार से पता चला था कि दुश्मन के छः सेबर-जेट विमान लाहौर से कसूर की ओर आ रहे हैं। उन्हीं का मुकाबला करने ये चार नेट-विमान भेज गए । "आज हमारे बहादुर स्क्वाड्रन-लीडर ट्रेवर कीलर फिर गए हैं। सफलता निश्चित है," एक सहायक ने कहा । "हाँ, आज का फारमेशन भी बहुत बढ़िया है," ग्राउण्ड-अफसर बोला, "कीलर और सन्धू, दोनों ही हमारी वायु सेना के पुरस्कृत उड़ाके हैं। कीलर को तो दो-दो पुरस्कार मिल चुके हैं, पहले वायु-

सेना मंडल मिला था और अब वीरचक्र । सन्धू को भी वायुसेना-

मैडल मिल चुका है।"

"कब ?" दूसरे सहायक ने पूछा ।

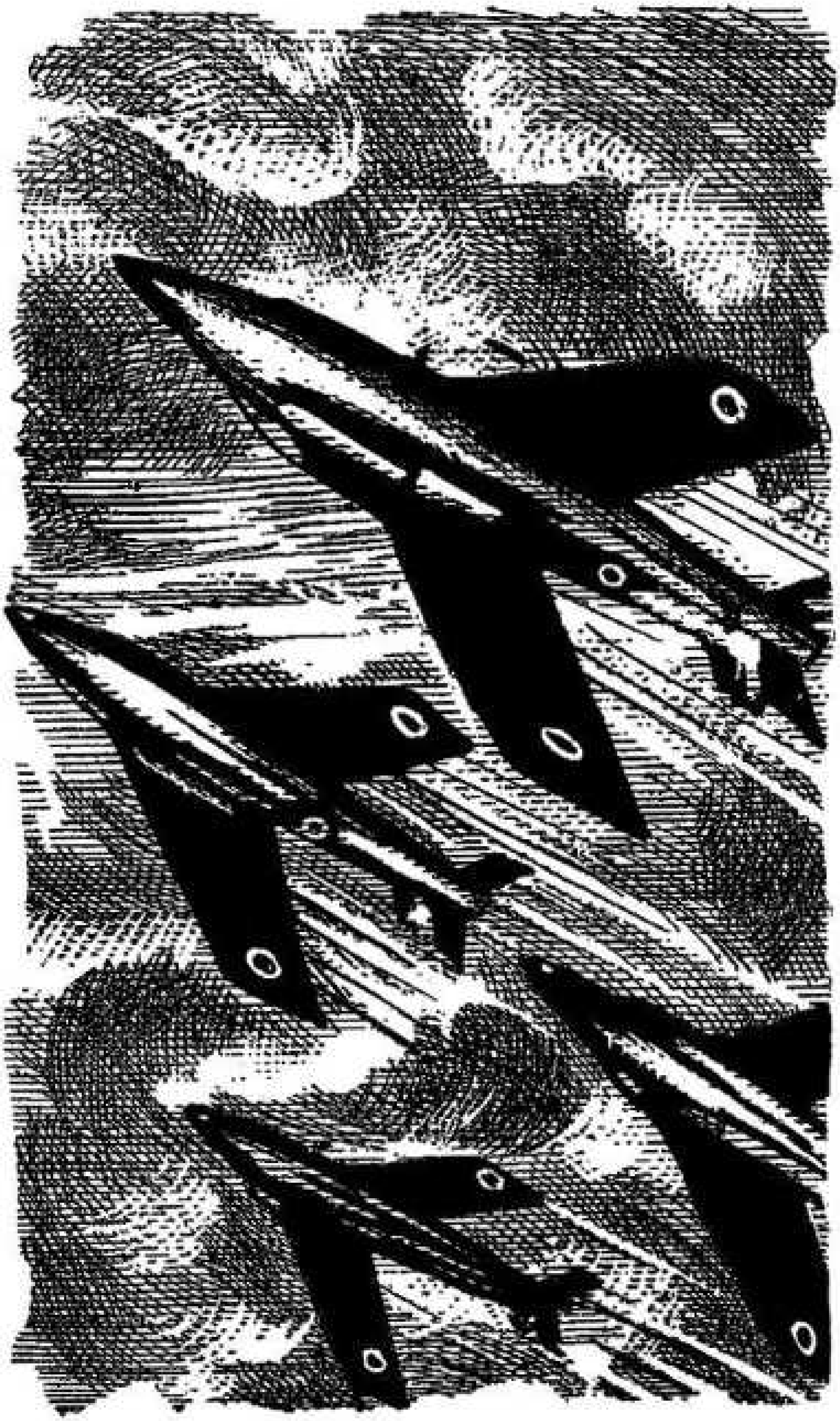

"अभी पिछले साल । उस समय सन्धू फ्लाइट-लेफ्टिनेण्ट था," ग्राउण्ड-अफसर ने उत्तर दिया, "उसने अपने प्राणों को जोखिम में डालकर जिस साहस के साथ अपने जलते हुए नेट को उतारा, उससे विमान तो बचा ही, साथ ही उससे हमारे टेक्निकल कर्मचारियों को भी नेट विमान में सुधार करने में सहायता मिली।"

"यह कब की बात है ?" सहायक ने पूछा।

"१० मार्च, १९६४ की।" ग्राउण्ड-अफसर ने बताया, "सन्धू अपने अन्य साथियों के साथ नेट-विमान में उड़ान भर रहा था। तभी उसके विमान के इंजन से धुआँ निकलने लगा और बिजली का संचरण पूरी तरह बन्द हो गया। इससे सन्धू अपने विमान के पिछले भाग पर नियंत्रण न रख सका । तब सन्धू के पास केवल दो ही रास्ते रह गए थे या तो वह पैराशूट से कूदकर अपनी जान बचा ले और विमान को नष्ट होने दे; या विमान को जबरदस्ती जमीन पर उतार दे और अपने प्राणों से हाथ धो बैठे।"

"तब ?" सहायक ने पूछा, "तब क्या वह कूद पड़ा ?"

"नहीं, यहीं तो उसने साहस और बुद्धिचातुर्य दिखाया।" ग्राउण्ड- अफसर ने उत्तर दिया, "विमान चालक को अपना विमान प्राणों से भी प्यारा होता है। सन्धू ने विमान को जबरदस्ती उतारने का निर्णय किया । इससे पहले भी इस प्रकार की घटनाएँ हो चुकी थीं और इस तरह बिना बिजली-संचरण वाले नेट-विमान को जबरदस्ती उतारने वाले चालक कभी बच नहीं पाए थे। सन्धू इस बात को जानता था, फिर भी उसने अपने विमान को जबरदस्ती उतारा। यह उसकी ही

चतुराई थी कि विमान ठीक उतर गया और वह भी बच गया ।" "इससे टेक्निकल कर्मचारियों को क्या मदद मिली ?" सहायक ने पूछा।

"टेक्निकल कर्मचारियों ने उस विमान की जाँच की और पता लगाया कि इंजन में कहाँ से आग लगी तथा किस तरह बिजली का कनेक्शन टूटा । जब उन्हें मुख्य खराबी का पता चल गया, तब उसमें सुधार के तरीके निकाले गए। अब नेट-विमानों में सुधार किया जा चुका है और अब उड़ते हुए नेट के इंजन में आग लगने की बहुत कम सम्भावना रह गई है," ग्राउण्ड-अफसर ने उत्तर दिया।

तो आज १८ सितम्बर को यही दो बहादुर हवाबाज सन्धू और ट्रेवर कीलर अपने दो अन्य साथियों के साथ दुश्मन के छः विमानों का मुकाबला करने के लिए भेजे गए थे।

चारों हवाबाजों के हौसले बुलन्द थे। भारतीय वायुसेना ने पिछले १७ दिनों के हवाई-युद्ध में जिस कौशल का परिचय दिया था, उससे दुश्मन काफी घबरा गया था। कल हमारी वायुसेना के हवा- बाजों ने स्यालकोट क्षेत्र में अनेक टैंक तोङ डाले थे, सरगोधा, चक- भुमरा, अकवाल और पसरूर पर बम बरसाए थे; और आदमपुर, फिरोजपुर तथा कसूर में दुश्मन का एक-एक विमान मार गिराया था। अब दुश्मन के विमान चार-चार के बजाय छः-छः के फारमेशन में आने लगे थे। आज भी दुश्मन के छः सेबर-जेट विमान लाहौर से कसूर की ओर आ रहे थे। शायद उनका इरादा फिरोजपुर आकर बम बरसाना था।

इसी बीच हमारे चार नेट-विमान उनका मुकाबला करने पहुँच गए थे। चारों के लीडर स्क्वाड्रन-लीडर अमरजीतसिंह सन्धू और सब- सेक्शन लीडर स्क्वाड्रन-लीडर ट्रेवर कीलर थे।

अब दुश्मन के विमान दिखाई देने लगे थे। वे लगभग २,२०० फुट ऊँचाई पर थे।

सन्धू ने तत्काल रेडियो-टेलीफोन पर ट्रेवर से कहा, "ट्रेवर, तुम बाएँ से घेरो। मैं दाहिने जा रहा हूँ।"

ट्रेवर अपने साथी के साथ बाएँ मुङ गया। सन्धू दाहिने मुङा ही था कि दुश्मन का एक विमान फारमेशन छोङ वापस भाग खङा हुआ।

दूसरा सेबर-विमान तेजी से सन्धू के पीछे की ओर आने लगा। सन्धू उसकी परवाह न कर एक अन्य सेबर के पीछे लगने का प्रयत्न करने लगा। इस बीच सन्धू के साथी ने तीसरा सेबर उलझाए रखा।

सन्धू बीच में और दो सेबर-विमान उसके आगे-पीछे। तीनों में भागा-दौङ होने लगी। पिछला विमान सन्धू से अभी काफी दूर था। सन्धू अपने आगे वाले सेबर के काफी निकट पहुँच गया। अभी सेबर मार के रेंज के अन्दर पहुँचा ही था और सन्धू गोले दागने ही वाला था कि उस विमान ने तेजी से तिरछा गोता लगा दिया।

हाथ आए सेबर को जाते देख सन्धू अवश्य ही कुँझलाया होगा। उसने भी रफ्तार बढ़ाई और उसी ओर गोता मारा। सेबर फिर निकट दिखाई देने लगा। सन्धू ने रफ्तार बढ़ाई। आज उसकी वायुसेना में ११ वर्ष की ट्रेनिंग की परीक्षा थी। आज उसे दुश्मन से भिड़ने का मौका मिला था। वह किसी भी कीमत पर इस मौके को यों ही नहीं खोना चाहता था।

वह रफ्तार बढ़ाता गया और जिधर सेबर भागा, उधर ही अपना नेट भगाता चला गया। आखिर सेबर उसकी मार की रेंज के अन्दर आ ही गया। सेबर लगभग ५०० गज दूर था। सन्धू ने बटन दबाया और गोलों की पहली बौछार छोड़ी।

दुश्मन भागा, लेकिन सन्धू से बचकर कहाँ जाता ? वह भागता रहा और सन्धू गोले दागता रहा। अभी वह ३०० गज दूर रहा होगा कि सन्धू ने उस पर आग लगती देखी।

सन्धू ने सन्तोष की साँस ली। दुश्मन का विमान जलता हुआ नीचे गिर पड़ा।

इस बीच दूसरे विमान आपस में उलझे हुए थे। इस विमान के गिरते ही दुश्मन के अन्य विमान भाग खड़े हुए।

"आओ, अब लौट चलें !" सन्धू ने अपने साथियों से कहा, "दुश्मन तो भाग गया। फिर कल सही।"

चाविण्डा के आकाश में

" सत्ताईस, अट्ठाईस उनतीस..."

"यह क्या गिन रहे हो ?" ग्राउण्ड इंजीनियर ने अपने सहायक से पूछा।

"मैं हिसाब लगा रहा रहा हूँ हूँ। कि अब तक दुश्मन के उनतीस विमान गिराए जा चुके हैं," सहायक ने उत्तर दिया, "कल स्क्वाड्रन-लीडर सन्धू ने उनतीसवां विमान गिराया था।"

"तो आज उसमें कम-से-कम एक और जोङ दो," ग्राउण्ड- इंजीनियर ने कहा।

"मेरा भी यही अनुमान है," सहायक ने कहा, "मेरा दिल कह रहा है कि आज स्क्वाड्रन-लीडर डेंजिल कीलर जरूर कुछ कर दिखाएगा। वह काफी दिनों से कुछ कर दिखाने को बेताब दिखाई दे रहा है।"

"उसके छोटे भाई स्क्वाड्रन-लीडर ट्रेवर कीलर को वीरचक्र मिल चुका है न !" ग्राउण्ड इंजीनियर ने कहा, "ट्रेवर ने ही तो दुश्मन का पहला सेवर-जेट विमान गिराया था, तो अब बङा भाई क्यों पीछे रहे !"

"ट्रेवर छोटा भाई है ?"

'हाँ," ग्राउण्ड इंजीनियर ने उत्तर दिया, "दोनों में केवल एक साल का अन्तर है। डेंजिल ३१ वर्ष का है और ट्रेवर ३० वर्ष का।

उनके पिता चार्ल्स कीलर लखनऊ के प्रसिद्ध शिक्षाविदों में माने जाते हैं।"

"सचमुच बडे दिलेर हैं, दोनों भाई!" सहायक ने कहा, "दोनों एक-दूसरे से बढ़कर। हमें इसका गर्व होना चाहिए कि हमारे पास इतने दिलेर हवाबाज हैं।"

दोनों ही आपस में बातें करते-करते अपने शेड में वापस श्रा गए। दोपहर ढल रही थी। अभी-अभी उन्होंने चार मिस्टीयर और चार नेट-विमान चाविण्डा क्षेत्र की ओर भेजे थे। मिस्टीयर-विमान वहाँ युद्ध में रत भारतीय जवानों को सहयोग देने तथा दुश्मन के जमाव को तोड्ने के लिए भेजे गए थे। इन मिस्टीयरों की रक्षा के लिए पीछे से चार नेट-विमान गए, जिससे इन पर दुश्मन के विमान हमला करके इन्हें अपने लक्ष्य तक पहुँचने में कठिनाई न पैदा कर दें।

कल १८ सितम्बर को लाहौर मोर्चे पर हवाई-युद्ध हुआ था, जिसमें हमारे हवाबाज़ स्क्वाड्रन-लीडर सन्धू ने पाकिस्तान का एक सेबर-जेट विमान गिराया था। हमारे जवानों ने बर्की में दुश्मन की सेना का सफाया कर दिया था। उडी-पुंछ की अनेक चौकियों पर हमारा कब्जा हो गया था। नौशेरा, झाँगर, मेंधार और पुंछ क्षेत्रों में घमासान लडाई चल रही थी। स्यालकोट-पसरूर रेल-लाइन पर हमारा कब्जा हो चुका था और उसके बीच में स्थित चाविण्डा से दो मील पश्चिम में जसोराम पर भी हमारी सेना ने अपना अधिकार जमा लिया था।

और आज चाविण्डा क्षेत्र में जवानों को सहयोग देने के लिए चार मिस्टीयर-विमान भेजे गए थे तथा उन मिस्टीयरों की रक्षा के लिए उनके पीछे चार नेट-विमानों को भेजा गया था।

इन चार नेट-विमानों का नेतृत्व कर रहे थे-स्क्वाड्रन लीडर हैंजिल कीलर। उनके नम्बर २ थे- फ्लाइंग अफसर राय; नम्बर ३ अर्थात् सब-सेक्शन लीडर फ्लाइट-लेफ्टिनेण्ट कपिल और नम्बर ४ फ्लाइट-लेफ्टिनेण्ट मायादेव थे।

इनका मुख्य काम यह देखना था कि आगे उडने वाले मिस्टीयर- विमानों पर पीछे से दुश्मन के विमान हमला न कर दें।

चारों नेट-विमान मिस्टीयरों के पीछे-पीछे लगभग ३०० फुट ऊँचाई पर उडे चले जा रहे थे। चाविण्डा का क्षेत्र निकट आ चुका था। मिस्टीयर-विमान दुश्मन के मोर्चों पर वम बरसाने के लिए तैयार हो गए। वे लक्ष्य साधने के लिए ऊपर उठे।

नीचे दुश्मन तैयार बैठा था। उसने विमान-भेदी तोपों से गोले बरसाने शुरू कर दिए।

"हलो...हलो लीडर" तभी डेंज़िल को रेडियो-टेलीफोन पर मायादेव की आवाज सुनाई दी, "चार सेबर हमारे मिस्टीयरों पर हमला करने आ रहे हैं, बाईं ओर से।"

डेंजिल ने फौरन ऊपर देखा। लगभग ४,००० फुट ऊँचाई पर चार सेबर-जेट विमान मिस्टीयरों पर हमला करने उनके पीछे की ओर भागे जा रहे थे।

"बाईं ओर, ४,००० फुट ऊपर," डेंजिल ने अपने साथियों को आदेश दिया, "दुश्मन के पीछे लगने की कोशिश करो।"

तुरन्त ही चारों नेट ऊपर उठने लगे, बाईं काट लेते हुए।

सेबर-जेट आगे बढ़े, पीछे से नेट पहुँचे। कपिल एक सेबर- जेट के काफी निकट पहुँच गया।

"कपिल," डेंज़िल ने रेडियो-टेलीफोन से कहा, "तुम अच्छी पोजीशन पर हो। अपने आगे वाले सेबर पर हमला करो। मैं पीछे से तुम्हें कवर करता हूँ।"

यह सुनना था कि कपिल ने अपने आगे वाले सेबर-जेट के पीछे अपना विमान लगा दिया। दुश्मन सतर्क हो गया। उसने बडी तेजी से अपना विमान बाईं ओर मोडा।

लेकिन इससे पहले ही कपिल बाएँ मुड चुका था और उसके पीछे विमान भगाए जा रहा था। अभी भी दुश्मन का विमान उसकी गोली की मार के अन्दर नहीं आ पाया था। उसने रफ्तार बढ़ाई।

दुश्मन घबराया। उसने अचानक तेजी से दाईं ओर नीचे विमान मोडा। देखते ही कपिल ने अपना विमान भी मोड दिया।'

अब वे दोनों ३,००० फुट से नीचे आते-आते १,५०० फुट ऊँचाई पर रह गए। दुश्मन का विमान कपिल से केवल ७०० गज दूर रह गया था।

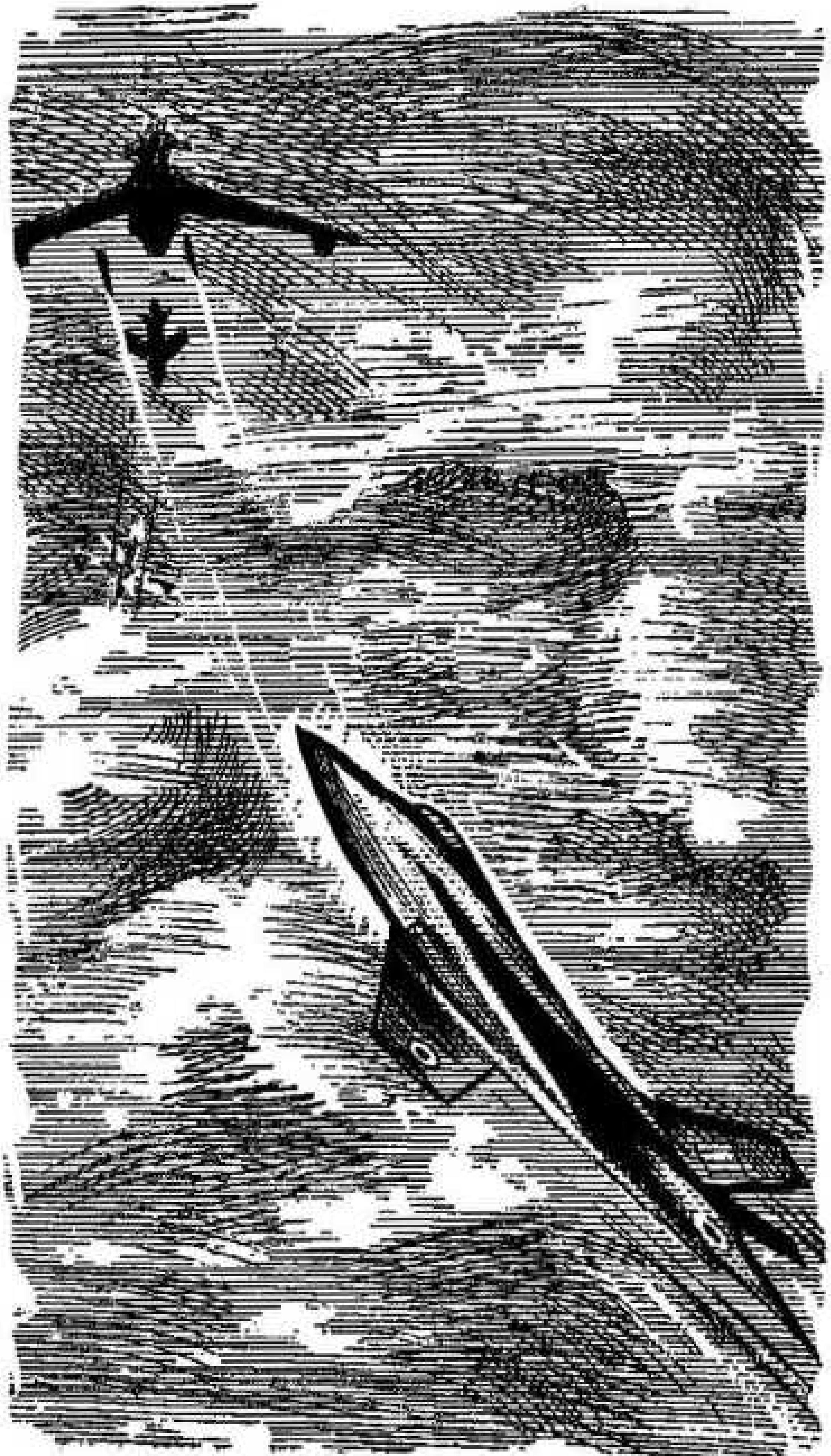

कपिल ने पूरी ताकत से बटन दबाया। घाँय... गोला पूरी रफ्तार से दुश्मन के विमान में घुस गया।

कपिल को पता न चला। दुश्मन का विमान ३०० गज की दूरी पर रह गया। कपिल ने फिर गोला दागा।

अब दोनों ही विमान जमीन से केवल ३०० फुट ऊँचाई पर आ गए थे। कपिल ने अपना नेट ऊपर की ओर बढ़ाया।

तभी पीछे से उसे रेडियो-टेलीफोन पर डेंजिल की आवाज सुनाई दी, "कपिल, तुम जीत गए। देखो, वह गिर रहा है !"

कपिल ने ऊँचे उठते हुए, नीचे की ओर देखा दुश्मन का विमान आग में जलता हुआ, भयानक काला धुआँ छोड़ता हुआ, तेजी से जमीन की ओर गिर रहा था।

डैंजिल अभी कपिल से बात कर ही रहा था कि दुश्मन का

एक अन्य सेबर-जेट विमान कपिल के नेट के पीछे आ गया। डेंजिल तुरन्त उसकी ओर मुड़ा और कपिल से रेडियो-टेलीफोन पर बोला, "कपिल, सावधान ! मुझे कवर करो !"

दुश्मन ने देखा कि उसका पीछा किया जा रहा है। उसने तेजी से दाईं ओर विमान मोड़ा। लेकिन यह मोड़ उसके लिए दुर्भाग्य का मोड़ बन गया। वह डेंज़िल के लगभग ६०० गज नजदीक आ गया। तब डेंजिल क्यों चूकता ! उसने गोला दाग दिया।

वह अचूक निशाना विमान की पैट्रोल की टंकी पर लगा और उसने आग पकड़ ली। विमान जलता हुआ नीचे आ गिरा।

शाम को हवाई अड्डे पर ग्राउण्ड-इंजीनियर अपने सहायक के साथ शेड की ओर लौटा।

"तीस.. इकत्तीस, "सहायक ने उँगलियों पर हिसाब लगाने का

बहाना करते हुए जोर से कहा। ग्राउण्ड-इंजीनियर ने बायाँ हाथ जोर से उसके कंधे पर मारा और हँस पड़ा।

विजय-वाहिनी के सूत्रधार

मानवता के पुजारी

"कुछ खास परिस्थितियों में आक्रमण ही रक्षा का सर्वोत्तम उपाय हो जाता है, जम्मू-कश्मीर में हमारी सेना ठीक यही काम कर रही है," ये शब्द राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने २६ अगस्त, १९६५ को आकाशवाणी से जम्मू-कश्मीर की जनता के नाम संदेश देते हुए कहे। राष्ट्रपति ने साफ-साफ शब्दों में कहा- "भारत युद्ध का इच्छुक नहीं है। पिछले १५ वर्षों में पाकिस्तान ने अनेक बार उत्तेजनात्मक कार्रवाइयाँ कीं, लेकिन भारत हमेशा पाकिस्तान से सीधी टक्कर बचाता रहा। फिर भी यदि हमें लड़ाई के लिए घसीटा जाए तो हम असावधानी नहीं बरत सकते। हमें हमले का मुकाबला करने के लिए उठना ही होगा, मुकाबला करना होगा और जीतना होगा।।"

राष्ट्रपति ने ये विचार उस समय प्रकट किए जब पाकिस्तान अपने हजारों घुसपैठियों को भारत में तोड़-फोड़ के लिए भेज चुका था और भारतीय सेना तथा जनता उन्हें खदेड़ बाहर कर रही थी। इसी सिलसिले में छिटपुट संघर्ष भी होने लगे थे और जिस दिन रेडियो से राष्ट्रपति का संदेश सुनाया जा रहा था, उस दिन तक भारतीय सेना ने काफी संख्या में घुसपैठिये पकड़ लिए थे।

परम्परा से भारत के राष्ट्रपति ही भारतीय सेनाओं के सर्वोच्च सेनापति भी माने जाते हैं। अतः हमारी विजय-वाहिनी के सर्वोच्च सूत्रधार वही रहे हैं। २६ अगस्त को ही उन्होंने अपने रेडियो-संदेश में घुसपैठियों की निन्दा करते हुए अपनी सेना का आह्वान किया था - "यह धरती वीरों के लिए ही है- 'वीर-भोग्या वसुन्धरा'। बहादुर

लोग ही हमारे देश की अखण्डताकायम रख सकते हैं, वे ही जम्मू- कश्मीर की अखण्डता कायम रख सकते हैं।"

राष्ट्रपति की इस ललकार का सीधा प्रभाव भारतीय सेना और जनता पर पड़ा। सारा देश सभी प्रकार के भेदभाव भूलकर दुश्मन का मुकाबला करने के लिए तनकर खड़ा हो गया।

राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन विचारों से दार्शनिक और पेशे से अध्यापक रहे हैं। भारत के राष्ट्रपति के रूप में वे हमेशा शान्ति का संदेश देते रहे, लेकिन जब हम पर युद्ध थोप ही दिया गया, तब वे भी वीर सैनिक की तरह दुश्मन का मुकाबला करने के लिए तैयार हो गए। अपनी जनता और सेना पर उनकी इतनी आस्था रही कि उन्होंने अपने ७७वें जन्मदिवस के अवसर पर ५ सितम्बर, १९६५ को पूरे विश्वास से कहा- "कश्मीर में पाकिस्तानी हमले के कारण हम संकटकाल से गुजर रहे हैं, पर अन्त में विजय हमारी ही होगी।... हमें अपने ऊपर विश्वास है और हम जानते हैं कि यही विश्वास हमें विजय प्रदान करेगा।"

और अन्ततः विजय हमारी ही हुई। पाकिस्तान को मुँह की खानी पड़ी और अन्त में राष्ट्रसंघ में उसने बड़े नाटकीय ढंग से २३ सितम्बर को साढ़े तीन बजे सुबह से युद्धविराम स्वीकार कर लिया।

युद्धविराम के बाद २६ सितम्बर को राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन ने फिर सह-अस्तित्व की ही बात की, युद्ध की नहीं। उन्होंने रेडियो से जनता के नाम संदेश देते हुए कहा- "भारत पाकिस्तान को नष्ट करना अथवा उसके अस्तित्व को खतरा पहुँचाना नहीं चाहता। इसके विपरीत हम चाहते हैं कि पाकिस्तान आजाद तथा प्रभुत्व-सम्पन्न राष्ट्र रहे।... अपनी प्रादेशिक अखण्डता की रक्षा के लिए भारत ने शस्त्र ग्रहण किया और शत्रु का मुकाबला करने में अपने संकल्प तथा शक्ति का परिचय दिया।"

राष्ट्रपति के ये शब्द भारत की भावनायें समझाने के लिए पर्याप्त हैं। किसी भी राष्ट्र का समर्थ सूत्रधार वही बन सकता है जो विश्व-शान्ति का निश्छल समर्थक हो, और साथ ही आतताइयों का मुकाबला करने में भी समर्थ हो। सौभाग्य से हमें ऐसे ही राष्ट्रपति मिले हैं।

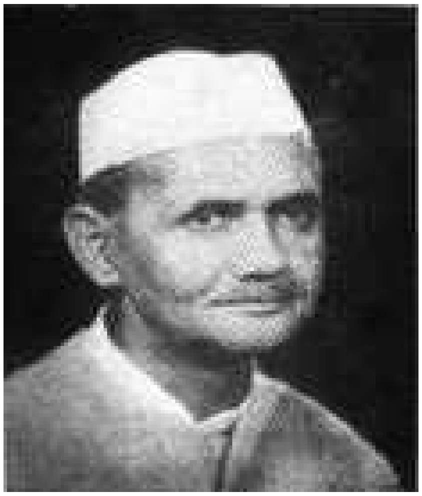

नन्हा कद, ऊँचा मनोबल

श्री लालबहादुर शास्त्री ने ६ जून, १९६४ को प्रधानमंत्री का पद सभालते समय ही कांग्रेस संसदीय दल की बैठक में बचन दिया था कि "पाकिस्तान और चीन के प्रति नीति के मामले में मैं ऐसा कुछ नहीं करूँगा, जो राष्ट्र के हित और सम्मान के विपरीत हो।"

और शास्त्री जी ने अपना वचन निभाया। आज उन्हें 'भारत का चर्चिल' कहा जाता है। यह भी संयोग की ही बात है कि राष्ट्र- पिता गांधी और उनके अनुयायी श्री लालबहादुर शास्त्री की जन्मतिथि एक ही है-२ अक्तूबर। गांधी जी का जन्म २ अक्तूबर १८७९ को हुआ था और शास्त्री जी का २ अकक्तूबर, १९०४ को। वाराणसी जिले में मुगलसराय नगर के एक सामान्य परिवार में जन्मे लालबहादुर जी १६ वर्ष की अवस्था में ही गांधीजी के असहयोग- आन्दोलन से प्रभावित होकर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पडे थे। स्वतंत्रता से पहले जेल, त्याग, सत्याग्रह, असहयोग आन्दोलन और अहिंसा ही उनके जीवन के प्रमुख अंग रहे।

गांधी जी के परम भक्त और हिंसा के पुजारी होते हुए भी, इस भारत-पाक युद्ध में उन्होंने सिद्ध कर दिया कि भले ही वे अहिंसा का पालन करते रहे हों, लेकिन कायर नहीं थे; भले उनका कद छोटा रहा हो, लेकिन मनोबल बहुत ऊँचा था; भले ही वे नम्र रहे हों, लेकिन विचारों से दूढ़ थे।

पाकिस्तानी घुसपैठ के समय भी वे बहुत ही संतुलित दिमाग से युद्ध टालने की राह सोचते रहे और पाकिस्तान से अपने घुसपैठिए वापस बुलाने को कहते रहे। लेकिन जब पाकिस्तान ने उनकी बात अनसुनी कर दी तब १४ अगस्त, १९६५ को उन्होंने राष्ट्र के नाम संदेश देते हुए स्पष्ट शब्दों में कह दिया- "ताकत का जवाब ताकत से दिया जाएगा और पाकिस्तान का हमला कभी भी सफल नहीं होने दिया जाएगा।" १५ अगस्त को भी स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल

किले से भाषण करते हुए उन्होंने कहा- "जब खतरा पैदा हो गया है, तब हमारे सामने रास्ता ही क्या रह गया है।"

लेकिन तब भी पाकिस्तान नहीं चेता। जब उसने अति कर दी, तब शास्त्री जी ने भारतीय सेनाओं के तीनों सेनापतियों से परामर्श किया और अन्त में अपना निर्णय दे ही दिया "बढ़े चलो, वीरो !"

बस इन्हीं तीन शब्दों ने भारत और पाकिस्तान के संघर्ष का सारा नक्शा ही बदल दिया। जो शास्त्री जी हिंसा के पुजारी, शालीन, नम्र और सहिष्णु माने जाते थे, उन्होंने ही देश की नीति, मानवीय मूल्य, न्याय और देश की प्रतिष्ठा तथा सुरक्षा के लिए ईंट का जवाब पत्थर से देने का निर्णय लिया। और यह निर्णय देश की प्रतिष्ठा के लिए अत्यन्त हितकारी सिद्ध हुआ।

युद्ध-विराम के बाद भी वे यही प्रयत्न करते रहे कि भारत और पाकिस्तान में मित्रता हो जाए और दोनों देश शान्ति से रहें। इसी भावना से वे रूस के प्रधान मंत्री श्री कोसीगिन के निमंत्रण पर पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खाँ से मिलने ताशकन्द गए। ताशकन्द जाते समय भी ३ जनवरी, १९६६ को शास्त्री जी ने कहा-

"मैं शान्ति की खोज में ताशकन्द जा रहा हूँ और मैं पाकिस्तान के राष्ट्रपति से यह अनुरोध करूँगा कि वे यह मान लें कि दोनों देश एक-दूसरे के विरुद्ध हथियार नहीं उठाएँगे।"

ताशकन्द सम्मेलन में ४ जनवरी, १९६६ को शास्त्री जी ने स्पष्ट घोषणा की-

"लड़ाई से समस्याएँ सुलझती नहीं, इससे और पैदा होती हैं। इससे सुलह-समझौते में बाधा पड़ती है। शान्ति के वातावरण में ही आपस के मतभेद दूर किये जा सकते हैं..."

शान्ति स्थापित करने के लिए ताशकन्द में शास्त्री जी का प्रयत्न निरन्तर जारी रहा और अन्त में उन्होंने राष्ट्रपति अयूब खाँ के साथ ६-सूत्री विज्ञप्ति में हस्ताक्षर किए।

लेकिन हा हन्त ! यह प्रयत्न शास्त्री जी के लिए अत्यन्त कीमती सिद्ध हुआ। निरंतर परिश्रम और मानसिक श्रम के कारण ताशकन्द में ही १० और ११ जनवरी की अर्धरात्रि को डेढ़ बजे उन्हें दिल का दौरा पड़ा और १ बजकर ३२ मिनट पर वे इस लोक से चल बसे।

आज शास्त्री जी हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी कर्मठता, ईमानदारी तथा शान्ति-प्रयत्न हमें हमेशा प्रेरणा देते रहेंगे। उनकी देशभक्ति के लिए राष्ट्रपति ने २६ जनवरी, १९६६ को गणतन्त्र-दिवस पर उन्हें मरणोपरान्त "भारत रत्न" प्रदान किया है।

एक और मराठा

हमारी विजय-वाहिनी के तीसरे सूत्रधार हैं- प्रतिरक्षा-मंत्री श्री यशवन्त राव चह्वाण । श्री चह्वाण उस प्रदेश के हैं, जहाँ आज से लगभग तीन सौ साल पहले छत्रपति शिवाजी ने जन्म लिया था। देश पर आततताइयों के अत्याचार से पीड्ति जनता को देखकर छत्रपति शिवाजी ने अपनी कुलदेवी माँ भवानी के सामने खड्ग उठाकर आततताइयों को नष्ट करने की सौगन्ध खाई थी। श्री चह्वाण की कुलदेवी भी तुलजा भवानी हैं और उन्होंने भी १९६२ में चीन के आक्रमण के बाद केन्द्रीय सरकार में रक्षामंत्री का पद सँभालने के लिए आने से पहले तुलजा भवानी के सामने यही संकल्प लिया ।

रक्षामंत्री चह्वाण उस प्रदेश के हैं, जहाँ आज से लगभग सौ वर्ष पहले 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' का सर्वप्रथम नारा लगाने वाले महामानव लोकमान्य तिलक ने जन्मलिया था। इन्हीं लोकमान्य तिलक ने एक बार कहा था- 'अगर आकाश भी टूट पडेगा, तो मैं उस टूटे श्राकाश पर भी पैर जमाकर आगे बढ़ेगा, डरूंगा नहीं।' तिलक के अनुयायी श्री चह्वाण भी देश के समर्थ प्रहरी बनकर प्रत्येक कठिनाई को पैरों तले रौंदकर आगे बढ़ते रहे हैं।

स्वतंत्रता-दिवस १५ अगस्त, १९६५ को रक्षामंत्री चह्वाण ने देश का ग्राह्वान किया था 'आइए, हम सभी लोग आज के इस पवित्र दिन पर फिर से इस बात का संकल्प करें कि देश ने हमें जो काम सौंपे हैं, उन्हें हम पूरा करेंगे। आज हम अपने इस वादे को फिर सेदुहराएँ

कि हम हर तरह के त्याग के लिए तैयार रहेंगे और अपनी समस्त शक्ति से देश की अमूल्य स्वाधीनता और सुरक्षा की रक्षा करते रहेंगे।"

पाकिस्तान की निरंतर घुसपैठ को देखते हुए रक्षामंत्री चह्वाण ने चेतावनी दी कि यदि पाकिस्तान का यही रवैया रहा तो हमारी सेना हमलावरों को खदेड़ने के लिए जरूरत पड़ने पर युद्धविराम-रेखा भी पार करेगी और उन सभी अड्डों का सफाया करेगी, जहाँ से हमलावर आ रहे हैं।

इस चेतावनी के बाद भी पाकिस्तान अपने सैनिक भेजता रहा और तब रक्षामंत्री चह्वाण ने वही किया, जो उन्होंने कहा था।

राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और रक्षामंत्री- इन तीनों प्रमुख सूत्र- धारों की अनुमति मिलते ही भारतीय सेना का एक-एक जवान सिर पर कफन बाँधकर दुश्मन पर टूट पड़ा हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई-सब एक हो गए. राठौर, खन्ना, हमीद, अयुबखाँ, संधू, दयाल, कीलर, हाइड कितने नाम गिनाएँ सब जैसे इसी अवसर की प्रतीक्षा में थे।

निडर हवाबाज़ : सुदक्ष स'चालक

वायुसेना के संचालन, प्रशासन और नियंत्रण का पूरा भार एयरमार्शल अर्जनसिंहपर है। भारतीय स्थल तथा वायुसेना ने जिस प्रकार आधुनिकतम अस्त्र-शस्त्रों से लैस दुश्मन के दाँत खट्टे किए, उसे देखकर संसार के बड़े-बड़े युद्ध-विशेषज्ञ आश्चर्य-चकित रह गए। भारत के एक-एक सैनिक और हवाबाज ने अपने अदम्य साहस और कर्त्तव्यपरायणता से युद्ध के इतिहास में अनुपम उदाहरण पेश किया। और इनका सही ढंग से संचालन करने का श्रेय है-वायुसेनाध्यक्ष एयर-मार्शल अर्जनसिह तथा स्थल सेनाध्यक्ष जनरल जयन्त नाथ चौधरी* को। दोनों को राष्ट्रपति ने पद्मविभूषण के

* जनरल चौधरी और उनके सहयोगियों के बारे में तथा भारतीय स्थल- सेना के जवानों की कहानियाँ पढ़िए, लेखक की अन्य पुस्तक 'हमारे बहादुर जवान' में।

अलंकार से सम्मानित किया है।

२४ नवम्बर, १९६५ को राष्ट्रपति-भवन में एयर-मार्शल अर्जनसिंह को पद्मविभूषण से अलंकृत करते समय उनकी प्रशस्ति में कहा गया- "हाल में पाकिस्तान से युद्ध के समय, जब दुश्मन की वायु- सेना ने हमारे हवाई अड्डों और स्थल-सेना पर अनेक बार आक्रमण किया, तब हमारी वायु-सेना के लिए आवश्यक हो गया कि वह इस आक्रमण का सामना करे तथा दुश्मन के अड्डों पर हमला करे और साथ ही हमारी स्थल सेना को भी सहायता पहुँचाए। इस काम के लिए काफी जटिल और विस्तृत योजना तैयार करने की जरूरत थी। श्मन उत्कृष्ट विमानों और अस्त्रों का प्रयोग कर रहा था, अतः अपने विमानों और उनके कर्मचारियों के लिए बहुत सावधानी से युद्ध-नीति तैयार करनी आवश्यक हो गई थी। एयर-मार्शल अर्जनसिंह ने अदम्य साहस और दृढ़ता से इस परिस्थिति का सामना किया, तथा युद्ध- संचालन में उच्चकोटि का कौशल दिखाया।"

एयर-मार्शल अर्जनसिंह का जन्म १५ अप्रेल, १९१६ को लायलपुर जिले के कोहिले गाँव में हुआ। वे माण्टगुमरी और लाहौर में शिक्षा समाप्त करने के बाद १९३८ में इंगलैण्ड के क्रानवेल पायलेट ट्रेनिंग कालेज में भरती हुए। दिसम्बर १९३९ में उन्हें भारतीय वायुसेना में कमीशन मिला और तभी उन्होंने उत्तर-पश्चिमी सीमान्त क्षेत्र के युद्ध में भाग लिया। १९४४ में उन्होंने स्क्वाड्रन-लीडर की हैसियत से बर्मा की लंडाई में नं० १ स्क्वाड्रन का नेतृत्व किया। उसी साल उन्हें 'डिस्टिंग्विश फ्लाइंग क्रास' प्रदान किया गया। १९४५ में वे विंग- कमाण्डर और अगस्त १९४७ में ग्रुप-कैप्टन बनाए गए। अगस्त १९४८ मेंवे ट्रेनिंग-निदेशक नियुक्त हुए और १९४६ में उच्चशिक्षा के लिए लेडीमोर कालेज भेजे गए। वापस लौटने पर वे एयर-कोमोडोर बनाए गए और जून १९६० में एयर वाइस मार्शल नियुक्त हुए। १ अगस्त, १९६४ को उन्होंने वायुसेनाध्यक्ष का पद सँभाला।

एयर-मार्शल अर्जनसिंह सभी प्रकार के विमान बडी कुशलता से उडा लेते हैं। वे अब तक ६० प्रकार के विमान उडा चुके हैं। १९६२ में चीनी आक्रमण के समय वे स्वयं भी विमान से अग्रिम क्षेत्रों में रसद गिराते रहे।

भारत के स्वतंत्र होने के उपलक्ष्य में, १६ अगस्त, १९४७ को लाल किले के ऊपर हवाई-सलामी का नेतृत्व भी एयर-मार्शल अर्जनसिंह ने ही किया था, और ७ वर्ष तक वे गणराज्य-दिवस पर हवाई-सलामी का नेतृत्व करते रहे। नवम्बर १९६३ में अमेरिका, आस्ट्रेलिया और रायल एयरफोर्स के सहयोग से जो हवाई-ट्रेनिग 'शिक्षा' हुई थी, उसका नेतृत्व भी इन्होंने ही किया था।

इनके कुशल नेतृत्व और अनुपम सेवाओं के लिए भारत- सरकार ने इन्हें एयर चीफ़मार्शल नियुक्त किया है।

एयर वाइस-मार्शल राजाराम, डी० एफ० सी०

यदि कहा जाए कि एयर वाइस-मार्शल राम- स्वामी राजाराम हमेशा एयर मार्शल अर्जन- सिंह के 'पदचिह्नों' पर चले हैं, तो अत्युक्ति न होगी। एयर वाइस-मार्शल राजाराम आजकल पश्चिमी हवाई कमान के एयर-अफसर कमाण्डिग- इन-चीफ हैं। एयर-मार्शल अर्जनसिंह भी इस पद पर दो बार रह चुके हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध में भी दोनों साथ-साथ रहे। उस समय एयर- मार्शल अर्जनसिंह ने स्क्वाड्रन-लीडर की हैसियत से बर्मा में एक स्क्वाड्रन का नेतृत्व किया था और उनके मुख्य सहायक थे- 'फ्लाइट- लेफ्टिनेण्ट' राजाराम। बाद में १९४४ में एयर-मार्शल अर्जनसिह के जाने के बाद एयर वाइस-मार्शल राजाराम को उसी स्क्वाड्रन का स्क्वाड्रन-लीडर बनाया गया। एयर-मार्शल अर्जनसिंह की तरह एयर बाइस-मार्शल राजाराम को भी इम्फाल के मोर्चे पर साहस, दृढ़ निश्चय और उच्चकोटि का नेतृत्व दिखाने के लिए 'डिस्टिग्विश्ड फ्लाइंग क्रास' प्रदान किया गया।

एयर वाइस-मार्शल राजाराम का जन्म १९१७ में मदुरे में हुआ। उन्होंने १९३३ में ही मद्रास उड़ान क्लब में विमान चलाना

सीख लिया था और बाद में १९३८ में मद्रास प्रेसिडेंसी कालेज से डिग्री लेने के बाद उन्हें १६३६ में भारतीय वायुसेना में कमीशन मिला।

वे १९४४ में स्क्वाड्रन-लीडर, १९४८ में ग्रुप-कैप्टेन, १९५८ में एयर-कोमोडोर और फरवरी १९६० में एयर वाइस-मार्शल नियुक्त हुए। पिछले साल वे पश्चिमी कमान के एयर अफसर कमा ण्डिग-इन- चीफ बनाए गए ।

राष्ट्रपति ने एयर वाइस-मार्शल राजाराम की असाधारण सेवाओं के लिए उन्हें पद्मभूषण से अलंकृत किया है।

एयर वाइस-मार्शल लाल, डी० एफ० सी०

हवाई-युद्ध में परिस्थितियाँ कभी भी बदल सकती हैं, इसलिए युद्ध के संचालन के लिए वायु- सेनाध्यक्ष को चौबीसों घण्टे सतर्क होकर आपरेशन- रूम में उपस्थित रहना पङता है । भारत- पाकिस्तान के २२ दिन के हवाई-युद्ध में अपरेशन- रूम का भार संभाला एयर मार्शल अर्जनसिंह, एयर वाइस-मार्शल राजाराम और एयर वाइस मार्शल प्रतापचन्द्र लाल ने ।

एयर वाइस-मार्शल लाल इस समय वायुसेना स्टाफ के उपाध्यक्ष हैं। इन्हें भी बर्मा के युद्ध में 'डिस्टिंग्विश फ्लाइंग क्रास' मिल चुका है और अव राष्ट्रपति ने इन्हें पद्मभूषण से अलंकृत किया है।

एयर वाइस-मार्शल लाल का जन्म दिसम्बर १९१६ में लुधियाना में हुआ। इन्होंने भी १९३३ में शौकिया तौर पर विमान चलाना सीख लिया था। जब वे लन्दन के इन्स आफ कोर्ट में बैरिस्टरी की शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, तभी द्वितीय विश्वयुद्ध आरम्भ हो गया। वे पढ़ाई छोङकर वापस आ गए और अंग्रेजी दैनिक-पत्र 'स्टेट्समैन' के सम्पादकीय विभाग में काम करने लगे। लेकिन फिर वे भारतीय वायुसेना में भरती हो गए । नवम्बर १९३६ में उन्हें कमीशन मिला ।

फिर वे विभिन्न पदों पर रहे और बाहर उच्च अध्ययन के लिए भी गए।

नवम्बर १९५७ से १९६३ तक वे इण्डियन एयरलाइन्स कारपोरेशन के जनरल मैनेजर रहे और फिर भारतीय वायुसेना में वापस आकर वे रिटायर ही हुए थे कि १९६२ में चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया। तब एयर-वाइस मार्शल लाल को फिर से भारतीय वायुसेना में वापस बुला लिया गया। अब इन्हें भारत सरकार ने पदो-नति करके एयर मार्शल नियुक्त किया है।

ग्रुप-कैप्टेन जोन तथा लायड

भारत-पाक युद्ध के दौरान हलवाङा और आदमपुर के हवाई अड्डों से रात-दिन दुश्मन पर आक्रमण करने के लिए विमान भेजे जाते रहे तथा दुश्मन भी इन हवाई अड्डों पर बम बरसाने का प्रयत्न करता रहा। यह ग्रुप-कैप्टेन जार्ज कनिष्ट कुमार जोन तथा ग्रुप-कैप्टेन वाल्टर वेरनन एलेक्जेण्डर लायड की ही कार्यकुशलता थी कि हमारे विमान सफलतापूर्वक दुश्मन को नुक्सान पहुँचाते रहे और हमारे हवाई अड्डों को कोई नुक्सान नहीं पहुँचा।

ये दोनों ही ग्रुप-कैप्टेन उक्त हवाई अड्डों के अफसर-कमाण्डिग हैं और दोनों को राष्ट्रपति ने विशिष्ट सेवा मेडल, प्रथम श्रेणी प्रदान किया है।

ग्रुप कैप्टेन जोन का मुख्य काम दुश्मन पर हमला करने, दुश्मन की स्थिति का पता लगाने, स्थल-सेना को सहयोग देने तथा भारतीय बमबार विमानों की रक्षा करने के लिए विमान भेजना और दुश्मन से अपने हवाई अड्डे की रक्षा करना था। ग्रुप-कैप्टेन जोन ने यह काम बङी कुशलता

और सतर्कता से किया। दुश्मन ने ७ सितम्बर को उनके हवाई अड्डे पर हमला भी किया और उसके बाद लगातार करते रहे। इसके अलावा दुश्मन ने हवाई अड्डे को नष्ट करने के लिए पैराशूट से सैनिक भी उतारे। लेकिन ग्रुप-कैप्टेन जोन की सतर्कता से दुश्मन के सभी प्रयत्न विफल हो गए।

ग्रुप-कैप्टेन लायड के हवाई अड्डे तक पहले ही घुसपठिए आ गए थे। ६ सितम्बर से उनके हवाई अड्डे पर दुश्मन बम बरसाने का भी प्रयत्न करने लगा। बाद में दुश्मन ने पैराशूट से सैनिक भी उतारे। लेकिन ग्रुप-कैप्टेन लायड ने दुश्मन की समस्त योजना विफल कर दी। यही नहीं बल्कि उनके अनेक विमान चालकों ने दुश्मन के आधु- निकतम अस्त्रों से लैस सेबर-जेट भी मार गिराए।

तो ये हैं हमारी विजय-वाहिनी के सूत्रधार, जिन्होंने भारतीय बायुसेना के सिर को गर्व से ऊँचा रखा और देश पर आक्रमण करने वाले आतताइयों को मुँह के बल गिराया।

परिशिष्ट १

भारत-पाकिस्तान का २२ दिन का हवाई-युद्ध

पाकिस्तान ने अप्रैल १९६५ में ही भारत पर आक्रमण करने की योजना बना ली थी। जुलाई-अगस्त में उसने साधारण वस्त्रों योजना में कश्मीर के अन्दर अपने सैनिक भेजने शुरू कर दिए। इन्हें उसने 'मुजाहिद' नाम दिया।

५ अगस्त, १९६५ को काफी संख्या में पाकिस्तानी सैनिक जम्मू-कश्मीर में घुसे। पूंछ जिले के दबरोट गाँव के एक निवासी ने ५ मुजाहिद देखे। उसने भारतीय सेना को इसकी सूचना दी। गढ़वाल राइफल्स के कैप्टेन चन्द्रनारायण सिंह के कमान में एक सैनिक टोली उनकी खोज में गई। शाम का समय था। काफी संख्या में आकर दुश्मन ने कैप्टेन सिंह की टोली पर गोलाबारी की। रात होने पर यह टोली और आगे बढ़ी। उसने ५ पाकिस्तानियों को मौत के घाट उतार दिया। लेकिन इस मुठभेड़ में कैप्टेन चन्द्रनारायण सिंह ने वीरगति पाई। राष्ट्रपति ने बाद में के० सिंह को मरणोपरान्त महावीर चक्र प्रदान किया। इसके बाद लगभग रोजाना भारतीय और पाकिस्तानी सैनिकों में मुठभेड़ होने लगी।

फिर २३ अगस्त को पाकिस्तान के ४ विमान भारतीय इलाके में जम्मू के उत्तर-पश्चिम स्थित नौशेरा क्षेत्र में उड़कर आए। एक अन्य विमान कश्मीर की घाटी के उत्तर में गुरेज क्षेत्र में आया। फिर २८ अगस्त को पाकिस्तान के विमान चार बार युद्ध-विराम-रेखा पार करके भारतीय इलाके में आए। तब पाकिस्तान के हमले और हवाई उड़ान को रोकने के लिए भारतीय वायुसेना को उसका मुकाबला करने के लिए अपने विमान भेजना जरूरी हो गया। अतः भारत ने भी १ सितम्बर, १९६५ की शाम से हवाई-कार्रवाई शुरू की। तब से २२ सितम्बर तक भारत और पाकिस्तान में जो हवाई-युद्ध हुआ, उसका तिथिवार विवरण इस प्रकार है:

१ सितम्बर, १९६५ :

पाकिस्तान ने छम्ब क्षेत्र में जो विशाल हमला किया, उसका मुकाबला करने के लिए शाम के साढ़े पाँच बजे भारतीय वायुसेना के २८ विमान भेजे गए। उन्होंने पाकिस्तान के १८ टैंक और अनेक तोपें तथा ३०-४० गाड़ियाँ नष्ट कीं।

२ सितम्बर, १६६५ :

भारतीय विमान दुश्मन की टोह लेने छम्ब क्षेत्र में उडे। पाकिस्तानी सेबर-जेट विमानों ने उन पर हमला किया। भारतीय विमानों ने उन्हें सीमा पार तक भगा दिया।

३ सितम्बर, १९६५ :

भारतीय विमानों को छम्ब-क्षेत्र में पाकिस्तानी विमानों का मुकाबला करने भेजा गया। पाकिस्तान के ५ एफ-८६ सेबर-जेट और २ एफ-१०४ स्टारफाइटर थे। भारत के ४ नेट-विमानों ने उनका मुकाबला किया। स्क्वाड्रन-लीडर ट्रेवर कीलर ने दुश्मन का एक सेबर-जेट विमान मार गिराया (देखिए कहानी 'छम्ब के आकाश में')।

पाकिस्तान के विमानों को छम्ब क्षेत्र के दक्षिण में जोरियाँ गाँव की एक मस्जिद पर बम बरसाए। नमाज पढ़ने वाले लगभग ५० नागरिक मरे।

४ सितम्बर, १९६५ :

पाकिस्तान के ४ सेबर-जेट छम्ब-क्षेत्र के ऊपर आए। भारतीय नेट- विमानों ने उनका मुकाबला किया। फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट वीरेन्द्रसिंह पठानिया ने दुश्मन का एक विमान मार गिराया (देखिए कहानी 'केवल पाँच मिनट')। दुश्मन का दूसरा विमान अन्य नेट-चालकों द्वारा मार गिराया गया।

भारतीय मिस्टीयर-विमानों ने दो बार छम्ब-क्षेत्र में दुश्मन पर प्राक्क्रमण किया। पाकिस्तान का एक सैनिक मुख्य कार्यालय नष्ट किया तथा एक पैटन टैंक तोड़ा।

पाकिस्तान के २ सेबर-जेटों और २ स्टारफाइटरों ने भारतीय विमानों पर श्राक्रमण किया। उन्होंने साइड-वाइण्डर मिसाइल भी फेंकी, परन्तु भारतीय विमान चतुरता से साफ बचकर वापस लौट आए। सहायता के लिए आए अन्य भारतीय विमानों ने उनका मुकाबला किया। पाकिस्तानी विमान भाग खडे हुए और भागते हुए उन्होंने अपना बोझ हल्का करने के लिए अपने ही क्षेत्र में बम बरसा दिए।

५ सितम्बर, १६६५ :

भारतीय वायुसेना के मिस्टीयर-विमानों ने फिर छम्ब-क्षेत्र पर हमला किया।

पाकिस्तान के विमानों ने अमृतसर पर बम बरसाने का प्रयत्न किया, किन्तु सफल नहीं हुए और भगा दिए गए।

६ सितम्बर, १६६५ :

भारतीय विमानों ने पंजाब सीमा के आगे अनेक सैनिक स्थलों पर हमला किया तथा तेलवाहक रेलगाडी, सैनिक गाड्यिाँ, सैनिक सामान ले जाने वाली मालगाडी और एक सैनिक शिविर नष्ट किया।

भारतीय विमानों ने छम्ब-जोरियाँ क्षेत्र में पाकिस्तान के ५ टैंक, २ अति भारी तोपें, १० हल्की तोपें, १२ परिवहन गाड्यिाँ तथा अनेक बख्तरबन्द गाड्यिाँ नष्ट कीं।

पाकिस्तान के विमानों ने लुधियाना से ६ मील दूर एक गुरुद्वारा पर राकेट बरसाए।

चार पाकिस्तानी सेबर-जेट विमानों ने हलवाडा हवाई अड्डे पर हमला किया। चार भारतीय हण्टरों ने उनका मुकाबला किया। फ्लाइट-लेफ्टिनेण्ट राठौर, फ्लाइंग अफसर गांधी और फ्लाइंग अफसर नेव ने एक-एक विमान मार गिराया। चौया विमान तोपों की मार से गिरा दिया गया। (देखिए कहानी 'हलवाडा की रक्षा में')।

७ सितम्बर, १६६५ :

भारतीय विमानों ने डेरा बाबा नानक क्षेत्र में दुश्मन के ४ टैंक तोडे। भारतीय विमानों ने सुलेमानकी हेडवर्क्स क्षेत्र में भी ४ टैंक तोडे।

भारतीय विमानों ने सरगोधा पर बमबारी की और हवाई अड्डे पर रखे दो सेबर-जेट तथा १ स्टारफाइटर नष्ट किया (देखिए कहानी 'माँ की प्रेरणा')।

भारतीय विमानों ने चकलाला (पेशावर) पर भी हमला किया।

पाकिस्तान का एक स्टारफाइटर विमान अमृतसर के निकट विमान भेदी तोपों से मार गिराया गया।

पाकिस्तान का एक बी-५७ बमवर्षक विमान आदमपुर के निकट हवाई- युद्ध में मार गिराया गया।

पाकिस्तान का एक बी-५७ विमान जामनगर के निकट मार गिराया गया।

पाकिस्तान के ८ सेबर-जेट विमान बनिहाल-लेह की ओर से श्रीनगर की ओर आए। एक विमान तोपों से गिरा दिया गया। बाकी सात विमानों ने हवाई अड्डों पर हमला किया। भारत का एक डकोटा और संयुक्त राष्ट्र का करबो विमान नष्ट हुए।

पाकिस्तानी विमानों ने फिरोजपुर पर राकेट छोडे। ११ नागरिक मरे, ६ घायल हुए।

पाकिस्तानी विमान ने कलकत्ता के निकट बैरकपुर पर आक्रमण करने का प्रयत्न किया। वह भगा दिया गया।

छः पाकिस्तानी विमानों ने कलकत्ता के निकट कलेकुण्डा पर भी आक्रमण करने का प्रयत्न किया। हवाई-युद्ध में बुश्मन के तीन सेबर-जेट मार गिराए गए (देखिए कहानी 'पूरब में भी')।

८ सितम्बर, १९६५ :

चार भारतीय हण्टर विमानों ने रायविण्ड और कसूर के बीच गोला- बारूद ले जाने वाली पाकिस्तान की एक मालगाडी नष्ट की तथा ४ टैंक और ६० बख्तरबन्द गाड्यिों पर बम बरसाए (देखिए कहानी 'कसूर की ओर')।

भारतीय विमानों ने सरगोधा पर फिर हमला किया।

भारतीय विमानों ने लाहौर क्षेत्र में एक रेलगाडी पर आक्रमण किया। उसमें २३ टैंक और अनेक गाड्यिाँ थीं, जो नष्ट हो गईं। इसके अलावा ४ अन्य टैंक नष्ट किए। भारतीय वायुसेना का एक हण्टर विमान तोपों की मार से गिरा।

पाकिस्तानी विमानों ने दिल्ली पर भी हमला करने का प्रयत्न किया। उसका एक सी-१३० विमान मेरठ के पास मार गिराया गया।

पाकिस्तानी विमानों ने हलवाडा पर आक्रमण किया। भगा दिए गए।

पाकिस्तानी विमानों ने जोधपुर और पठानकोट पर दो-दो बार हवाई हमले किए।

पाकिस्तानी विमानों ने फिरोजपुर पर हवाई हमला किया और रेड- कास की ४ गाड्यिों को नष्ट किया।

पाकिस्तान सेबर-जेट विमानों ने अमृतसर पर नेपाम बम गिराए। नेपाम बम बहुत खतरनाक आग लगाने वाले होते हैं और अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार इनका प्रयोग निषिद्ध है। पाकिस्तान का एक विमान तोपों ने मार

गिराया। इसके अलावा पाकिस्तान के तीन अन्य विमान भी अमृतसर में गिराए गए।

६ सितम्बर, १९६५ :

भारतीय विमानों ने खेमकरण पर आक्रमण किया। १० टैंक तथा अनेक बख्तरबन्द गाड़ियाँ श्रावि नष्ट की (देखिए कहानी 'खेमकरण के सैन्य- व्यूह में')।

पाकिस्तान का एक सेबर-जेट विमान लाहौर-क्षेत्र में तोपों की मार से गिराया गया और ४ टैंक नष्ट किए गए।

पाकिस्तानी विमानों ने दिल्ली पर आक्रमण करने का प्रयत्न किया। भगा दिये गये।

पाकिस्तानी विमानों ने अमृतसर पर हमला किया। २ विमान मार गिराए गए।

१० सितम्बर, १९६५ :

भारतीय विमानों ने दुश्मन के क्षेत्र पर हमला किया। एक विमान को क्षति पहुँची। उसका चालक फ्लाइंग अफसर बारा फिरोज चिनाय कुब पङा और सही-सलामत अपने अड्डे पर लौट आया (देखिए कहानी 'दुश्मन के इलाके से')।

पाकिस्तानी विमानों ने अमृतसर पर हमला किया। उनमें से ३ विमान मार गिराए गए और १ को काफी नुक्सान पहुँचा।

पाकिस्तानी ४ सेबर-जेटों ने पश्चिम बंगाल के बागडोगरा हवाई अड्डे पर हमला किया और एक पैकेट तथा एक वैम्पायर विमान नष्ट किया। भारतीय विमान-भेदी तोपों ने एक सेबर-जेट विमान मार गिराया।

११ सितम्बर, १९६५ :

भारतीय विमानों ने जम्मू-क्षेत्र में पाकिस्तान के ४ टैंक और लाहौर-क्षेत्र में ३ टैंक नष्ट किए।

भारतीय विमानों ने सरगोधा तथा अन्य पाकिस्तानी हवाई अड्डों पर आक्रमण किया।

पाकिस्तानी विमानों ने आादमपुर, पठानकोट और हलवाङा हवाई अड्डों पर आक्रमण किया। कोई नुक्सान नहीं हुआ।

पाकिस्तानी विमान गुवाहाटी हवाई अड्डे तथा उसके निकट ब्रह्मपुत्र नदी के पुल के ऊपर आए। भारतीय तोपों ने उन्हें मार भगाया।

१२ सितम्बर, १९६५ :

पाकिस्तान का एक बी-५७ विमान अमृतसर के निकट मार गिराया गया।

पाकिस्तानी विमानों ने आदमपुर, पठानकोट, लुधियाना, हलवाड़ा, जोधपुर और जामनगर पर बम बरसाने का प्रयत्न किया।

१३ सितम्बर, १९६५ :

भारतीय विमानों ने कसूर-क्षेत्र पर दुश्मन पर हमला किया। ४ टैंक तथा तोप और बंकर नष्ट किए।

भारतीय विमानों ने दुश्मन के अन्य ठिकानों पर भी हमला किया। पाकिस्तानी विमानों ने अमृतसर, जोधपुर, गोराया (जलंधर), जामनगर, जम्मू और पठानकोट पर हमला किया। कोई खास नुक्सान नहीं हुआ। दुश्मन ने बाड्मेर और संगरूर पर भी बम बरसाने का प्रयत्न किया।

पाकिस्तान का एक विमान गुरदासपुर के निकट मार गिराया गया। पाकिस्तानी विमानों ने फिर श्रीनगर पर हमला किया और वहाँ

संयुक्त राष्ट्र के नष्ट हुए जिस विमान के स्थान पर दूसरा विमान लाया गया था, उस पर बम बरसाए।

१४ सितम्बर, १९६५ :

भारतीय विमानों ने चार बार सरगोधा पर हमला किया और उसे नुक्सान पहुँचाया।

भारतीय विमानों ने पेशावर तथा कोहाट हवाई अड्डों पर हमला किया तथा उन्हें नुक्सान पहुँचाया।

लाहौर के आकाश पर भारतीय वायु सेना का पूरा अधिकार हो गया। ४ भारतीय हण्टर विमानों ने कसूर-क्षेत्र पर हमला किया और दुश्मन के तोपों के ठिकानों तथा ४०-५० गाड़ियों को नष्ट किया।

भारतीय विमानों ने लाहौर और स्यालकोट क्षेत्रों में लगभग १२ टैंक नष्ट किए।

दो पाकिस्तानी सेवर-जेट विमान जम्मू के निकट मार गिराए गए। पाकिस्तानी विमानों ने श्रीनगर, लुधियाना, जोधपुर, हलवाड़ा,

पठानकोट और आदमपुर हवाई अड्डों पर हमला करने का प्रयत्न किया। आदमपुर में एक पाकिस्तानी बी-१७ विमान मार गिराया गया।

पाकिस्तान के ४ विमानों ने अगरतल्ला (त्रिपुरा) पर बम बरसाए। कुछ नागरिक मरे।

पाकिस्तानी विमानों ने फिर कलकत्ता के निकट बैरकपुर पर हमला किया। वे मार भगा दिए गए। दुश्मन ने कलैकुण्डा पर भी आक्रमण करने का प्रयत्न किया।

१५ सितम्बर, १९६५:

भारतीय विमानों ने सरगोधा से ५० मील दक्षिण-पूर्व चकभूमरा पर बम बरसाए।

भारतीय विमानों ने सरगोधा ह्वाई अड्डे पर भी बम बरसाए। पाकिस्तान का टोह लेने वाला एक विमान लाहौर-क्षेत्र में बेदियाँ के निकट मार गिराया गया।

पाकिस्तानी विमानों ने श्रीनगर, जम्मू के गाँवों, अमृतसर, बटाला (गुरदासपुर जिला), जोधपुर, ग्रामपुर, हलवाङा और पठानकोट पर हमला किया।

१६ सितम्बर, १९६५ :

भारतीय कैनबरा विमानों ने सरगोधा, चकभूमरा, अकवाल, पेशावर

तया सरगोधा हवाई अड्डों पर बम बरसाए और उन्हें नुक्सान पहुँचाया। भारतीय मिस्टीयर विमानों ने पसरूर पर हमला किया।

भारतीय विमानों ने इछोगिल नहर के निकट अनेक गाड्यिाँ नष्ट कीं। ४ भारतीय हण्टर विमानों ने कसूर-क्षेत्र में हमला किया और दुश्मन का एक सेबर-जेट मार गिराया।

भारतीय विमानों ने दुश्मन का एक अन्य सेबर-जेट विमान लुधियाना में मार गिराया।

पाकिस्तानी विमानों ने आदमपुर हवाई अड्डे पर हमला किया। दुश्मन के विमानों ने साम्बा (जम्मू-क्षेत्र), अमृतसर, अटारी, बटाला, गुरदास- पुर, जलंधर और संगरूर (पंजाब) पर भी बम बरसाए। पाकिस्तान का एक सेबर-जेट विमान अमृतसर में मार गिराया गया।

पाकिस्तानी विमानों ने जम्मू-स्यालकोट क्षेत्र में नागरिकों की गाड्यिों पर नापाम बम भी बरसाए।

१७ सितम्बर, १९६५

भारतीय कंनबरा विमानों ने सरगोधा पर बार-बार बम बरसाए (देखिए कहानी 'बलिदान की परम्परा में)।

भारतीय वायुसेना ने फिरोजपुर में हवाई युद्ध में पाकिस्तान का एक सेबर-जेट विमान मार गिराया।

पाकिस्तानी सेबर-जेट विमानों ने आदमपुर पर हमला किया। ह्वाई-युद्ध में एक सेबर-जेट मार गिराया गया। भारत का भी एक हण्टर-विमान नष्ट हुषा।

पाकिस्तानी विमानों ने अम्बाला और संगरूर पर बम बरसाए। इसके अलावा उन्होंने नाभा के निकट एक गाँव पर १,००० पोण्ड का बम गिराया; होशियारपुर से १० मील दूर खनूर गाँव, लुधियाना जिले के कादों तथा शाहपुर गाँव और फगवाङा तथा सलोगरा गाँवों पर बम बरसाए।

१८ सितम्बर, १९६५ :

भारतीय मिस्टीयर-विमानों ने पसरूर पर हमला किया और दुश्मन को भारी नुक्सान पहुँचाया।

६ पाकिस्तानी विमान फिरोजपुर की ओर बम बरसाने आए। चार भारतीय नेटों ने उनका मुकाबला किया। स्काड्रन-लीडर सन्धू ने एक विमान मार गिराया। बाकी भाग खङे हुए (देखिए कहानी 'दोपहर के बाद')।

पाकिस्तानी विमानों ने अम्बाला में सैनिक अस्पताल, सेण्ट पाल केथड्रल गिरजाघर, बच्चों के स्कूल तथा एक क्लब पर बम बरसाए।

पाकिस्तानी विमानों ने जामनगर, खुनूर गाँव (होशियारपुर) पर भी हमला किया। कोई नुक्सान नहीं हुआ।

पाकिस्तानी विमानों ने जम्मू से ८ मील दक्षिण में सुंजुवाँ गाँव पर ८ नापाम बम गिराए। इसके अलावा उन्होंने जलंधर, अमृतसर, लुधियाना और गुरदासपुर पर भी बम बरसाए।

१६ सितम्बर, १९६५ :

भारतीय नेट-विमानों ने स्यालकोट-पसरूर रेल लाइन के बीच चाविण्डा में हवाई-युद्ध के दौरान पाकिस्तान के दो सेबर-जेट मार गिराए। एक सेबर- जेट स्ववाड्रन-लीडर डंजिल कीलर ने मारा और दूसरा फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट वी० कपिल ने। भारत का एक नेट-विमान नष्ट हुआ (देखिए कहानी 'चाविण्डा के आकाश में')।

भारतीय कैनबरा विमानों ने पसरूर के उत्तर-पश्चिम में दुश्मन पर बम बरसाए।

भारतीय विमानों ने १२ टेंक, ११ गाड्यिाँ तथा तोपों के २ ठिकाने नष्ट किए।

भारतीय विमानों ने सरगोधा पर फिर बम बरसाए।

पाकिस्तान का एक विमान अम्बाला में मार गिराया गया।

पाकिस्तान का एक अन्य विमान कपूरथला में मार गिराया गया।

पाकिस्तानी विमानों ने जम्मू और बाड्मेर के निकट उत्तरलाई पर राकेट छोड़े। उन्होंने अमृतसर और जामनगर पर भी हमला किया।

२० सितम्बर, १९६५ :

भारतीय विमानों ने पसरूर-क्षेत्र में दुश्मन के ६ टैंक नष्ट किए और २ को नुक्सान पहुँचाया।

भारतीय कैनवरा विमानों ने कच्छ सिन्ध सीमा से २० मील उत्तर में बादियाँ के राडार पर हमला किया।

पाकिस्तान का एक विमान अम्बाला के निकट मार गिराया गया।

पाकिस्तान का एक सेबर-जेट विमान लाहौर-क्षेत्र में हवाई-युद्ध में मार गिराया गया।

भारतीय मिस्टीयर-विमानों ने लाहौर क्षेत्र के चाविण्डा में १२ टैंक और अनेक गाड्यिाँ नष्ट कीं।

पाकिस्तान ने कच्छ-क्षेत्र में गुजरात के मुख्य मंत्री श्री बलवन्त राय मेहता का विमान मार गिराया।

पाकिस्तानी विमानों ने अमृतसर-तरनतारन मार्ग में गुरुद्वारा संगराना साहब पर बम गिराए। कोई नुक्सान नहीं हुआ।

पाकिस्तानी विमानों ने जलंधर जिले के गडरपुर गाँव में बम गिराए। एक बच्चा और ६ पशु मरे तथा ४ मकानों को नुक्सान पहुँचा।

पाकिस्तानी विमानों ने फिरोजपुर के मोगा तहसील में रणसियांपुर गाँव पर भी बम बरसाए।

२१ सितम्बर, १९६५ :

भारतीय विमानों ने स्यालकोट-क्षेत्र में २ टैंक तथा दुश्मन के ठिकाने नष्ट किए।

भारतीय विमानों ने जसोरां क्षेत्र में २ टैंक और २ गाड़ियाँ नष्ट कीं।

भारतीय विमानों ने बाड्मेर क्षेत्र (राजस्थान) में लोको शेड, पावर- शेड और तेल-भण्डार को नष्ट किया।

पाकिस्तान के ५ सेबर-जेट विमान अमृतसर जिले में मार गिराए गए।

भारतीय कैनबरा-विमानों ने सरगोधा हवाई अड्डे पर भी बम बरसाए। भारत का एक कैनबरा-विमान नष्ट हुआ।

भारतीय विमानों ने सुलेमानकी-क्षेत्र पर भी बम बरसाए।

पाकिस्तानी विमानों ने जम्मू के नागरिकों पर बम बरसाए।

पाकिस्तानी विमानों ने जोधपुर में जेल के अस्पताल पर बम गिराए, जिससे ३१ मरीज और २ कर्मचारी मरे।

पाकिस्तानी विमानों ने जम्मू-स्यालकोट क्षेत्र में हमला करते समय अपने ही ठिकानों पर बम बरसा दिए।

२२ सितम्बर, १९६५ :

भारत और पाकिस्तान ने २३ सितम्बर की सुबह साढ़े तीन बजे से युद्ध-विराम स्वीकार किया।

पाकिस्तानी सेबर-जेट विमानों ने कसूर क्षेत्र में भारतीय सेना पर एक- एक हजार पौण्ड के चार बम गिराए। कोई नुक्सान नहीं हुआ। विमान-भेदी तोपों से पाकिस्तान के तीन सेवर-जेट मार गिराए गए।

पाकिस्तानी विमानों ने युद्ध-विराम की स्वीकृति की घोषणा के बाद अमृतसर, जोधपुर और गदरा पर बम बरसाए।

प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने लोकसभा में युद्ध विराम स्वीकार करने की घोषणा करते हुए, गद्गद कण्ठ से कहा "मैं इस संसद और समस्त देश की ओर से अपनी सेनाओं के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। उन्होंने अपने अदम्य साहस और बीरता से देश के लोगों में नया विश्वास भरा है (देखिये 'बिजय-वाहिनी के सूत्रधार')।

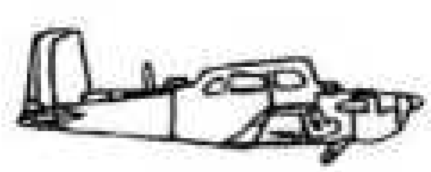

परिशिष्ट २

भारतीय वायुसेना के अलंकृत
तथा
पुरस्कृत हवाबाज़

पद्म-विभूषण

एयर-मार्शल अर्जनसिह, डी० एफ० सी०, वायुसेनाध्यक्ष
(अब चीफ एयर-मार्शल)

पद्म भूषण

१. एयर वाइस-मार्शल प्रतापचन्द्र लाल, डी० एफ० सी०, उप-बायुसेनाध्यक्ष

२. एयर वाइस-मार्शल रामस्वामी राजाराम, डी० एफ० सी०, एयर अफसर कमाण्डिग-इन-चीफ, पश्चिमी वायुसेना कमान (अब एयर-मार्शल और नेशनल डिफेंस कालेज के कमाण्डेण्ट)

विशिष्ट सेवा मैडल, श्रेणी १

१. ग्रुप-कैप्टेन जार्ज कनिष्ट कुमार जोन

२. ग्रुप-कैप्टेन वाल्टर वेरनन अलेक्जेण्डर लायड

विशिष्ट सेवा मैडल, श्रेणी २

१. विंग कमाण्डर के० दण्डपाणि

२. स्क्वाड्रन-लीडर बी० पी० सिंह, टेक्निकल / सिग्नलर

३. ” ” लखमीर सिंह ”

विशिष्ट सेवा मैडल, श्रेणी ३

१. फ्लाइंग अफसर वी० पी० मेहता

२. ” ” दारा फिरोज चिनाय

३. पायलट अफसर ए० पी० मामेन

४. फ्लाइट सार्जेण्ट डी० आर० वर्मा

५. " " के० एल० मुकर्जी

६. " " ए० सिंह

७. " " एन० चन्द्रशेखरन

८. " " पी० एस० मझेल

९. " " एस० अय्यास्वामी

१०. एयरक्राफ्टसमैन सिकन्दर गुलाब कुलकर्णी

महावीर-चक्र की पट्टी

१. स्क्वाड्रन-लीडर जगमोहन नाथ, महावीर चक्र

महावीर-चक्र

१. विंग कमाण्डर विलियम मैक' डोनाल्ड गुडमैन

२. " " प्रेमपालसिंह

३. स्क्वाड्रन-लीडर पद्मनाभ गौतम

वीरचक्र

१. विंग कमाण्डर भरतसिंह

२. " " ओ० पी० तनेजा

३. " " एस० भट्टाचार्य

४. " " कमाण्डर पी० एम० विल्सन

५. स्क्वाड्रन-लीडर ट्रेवर कीलर

६. " " मधुकर शान्ताराम जाटार

७. " " सुदर्शन हाण्डा

८. " " अमरजीत सिंह सन्धू

९. " " डेंजिल कीलर

१०. " " ए० एल० मौसिहो

११. " " एस० के० दाहर

१२. " " एस० एस० मलिक

१३. " " ए० एस० लाम्बा

१४. " " जे० डब्ल्यू० ग्रीन

१५. " " एस० के० सिंह

१६. " " बी० के० विश्नोई

१७. स्क्वाड्रन-लीडर जसबीर सिंह
१८. " " एस० एन० बंसल
१९. " " सी० मेहता
२०. " " टी० पी० एस० गिल
२१. फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट त्रिलोचनसिह
२२. " " वीरेन्द्रसिंह पठानिया
२३. " " देवनाथ राठौर
२४. " " एल्फ्रेड टायरन कुक
२५. " " अजयकुमार मजूमदार
२६. " " विनय कपिल
२७. " " हमीरसिंह मंगत
२८. " " एस० कुलकर्णी
२९. " " एस० एन० देशपाण्डे
३०. " " सी० एस० दुरैस्वामी
३१. " " डी० एस० कहाई
३२. " " सी० के० के० मेनन
३३. " " ए० एस० खुल्लङ
३४. " " वी० के० भाटिया
३५. " " पी० सी० चोपङा
३६. " " वी० पटने
३७. " " पी० दस्तिदार
३८. फ्लाइंग अफसर सुबोधचन्द्र ममगाई
३९. " " आदि रुस्तमजी गांधी
४०. " " विनोद कुमार नेब
४१. " " प्रकाशः पिंगले

वायुसेना मैडल

१. स्क्वाड्रन-लीडर ए० दलाया
२. " " के० सी० खन्ना
३. " " बी० एस० बक्शी
४. " " पी० आर० झलें
५. फ्लाइट-लेफ्टिनेण्ट डब्ल्यू० एम० सोंधी

६. पनाइट-लेफ्टिनेण्ट विनोदकुमार वर्मा
७. ” ” एस० एम० हुण्डीवाला
८. ” ” आर० के० मलहोत्रा
६. ” ” एल० के० दत्त
१०. ” ” सी० एस० केबर
११. ” ” पी० गोस्वामी
१२. ” ” जे० एल० ड्वेल्ट्ज
१३. फ्लाइंग अफसर डी० के० परूलकर
१४. ” ” ए० एस० गिल
१५. सार्जेण्ट संसार सिंह, फ्लाइट इंजीनियर